निर्मल विद्या

"सहज मंत्रों की पुस्तिका"

निर्मल विद्या

''सहज मंत्रों की पुस्तिका''

प.पू.श्रीमाताजी निर्मलादेवी जो सर्व ज्ञान की दात्री हैं,
उनके चरणकमलों में समर्पित।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

''अब आपके 'माँ' का नाम बहुत ही शक्तिशाली है। आप जानते हो कि अन्य दूसरे नामों से 'वो' सबसे शक्तिशाली नाम है, सबसे शक्तिशाली मंत्र है। पर आपको पता होना चाहिए कि किस तरह से इसे लेना चाहिए। उस पूर्ण समर्पण से आपको उस नाम को लेना है। दूसरे अन्य नामों की तरह नहीं।''

''एक पूजा या प्रार्थना की वृद्धि आपके हृदय से होती हैं। मंत्र आपकी कुण्डलिनी के शब्द हैं (अर्थात शब्द जो शक्ति से संबंधित हैं, मंत्र हैं) लेकिन पूजा अगर हृदय से नहीं की गई या मंत्रो के शब्दों के साथ कुण्डलिनी नहीं संबंधित हैं तो वह पूजा सिर्फ एक कर्मकाण्ड ही है। सबसे अच्छा है कि पूजा हृदय में की जाए। पूजा के समय मंत्रों को बहुत श्रद्धा के साथ कहा जाना चाहिए (अर्थात् मंत्र उच्चारण के हर शब्द पर साथ साथ चित्त की दृष्टि भी होनी चाहिए, जैसे चित्त ही बोल रहा हो)। पूजा उस समय करें जब श्रद्धा गहरी हो जाये जिससे हृदय द्वारा पूजा पूरित हो उस समय आनन्द की लहरियाँ बहना शुरू हो जाती हैं क्योंकि तब आत्मा ही सब कुछ कह रहा होता हैं (अर्थात् तब मंत्र आत्मा के ही शब्द होते हैं)''

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी

विषय सूचि

नाडी तथा चक्र शुद्धि के लिये सहजयोग के मंत्र एवं प्रार्थनायें — **विषय 1**

ॐ — 11

चक्रों के मंत्र — 12

प्रतिज्ञान (द अफर्मेशन) — 16

मूलाधार — **विषय 2**

श्रीगणेश स्तुति — 20

हाऊ टू अवेकन श्रीगणेशाज पॉवर विदिन अस — 20

अपनी गणेश शक्ति कैसे जागृत करे (अनुवाद) — 21

श्रीगणेश अथर्वशीर्ष — 22

श्रीगणेश के १२ नाम — 23

श्रीगणेश के १०८ नाम — 24

श्रीगणेश के १०८ अंग्रेजी नाम — 27

श्रीगणेश के १०८ अंग्रेजी नाम (अनुवाद) — 32

श्रीकार्तिकेय के १०८ नाम — 38

स्वाधिष्ठान — **विषय 3**

गायत्री मंत्र — 42

श्रीब्रह्मदेव - सरस्वती के २१ नाम — 44

हज़रत अली के ५ नाम — 44

नाभि **विषय 4**

नाभि चक्र के १० लक्ष्मी के मंत्र (होली पेटल्स) 46
श्रीलक्ष्मी के १०८ नाम 47
अष्टलक्ष्मीस्तोत्रम् 50
महालक्ष्मी-अष्टकम् (स्तोत्रम्) 52
श्रीसूक्तम् 54
श्रीविष्णु स्तुति 58
श्रीविष्णु के १० अवतार 58
श्रीविष्णु के २४ नाम 59
श्रीविष्णु के १०८ नाम 60
श्रीअन्नपूर्णेश्वरी स्तोत्र 62
श्रीफातिमा अल्-ज़राह के ६२ नाम 65

भवसागर (वॉइड) **विषय 5**

आदिगुरु स्तुति (गुरुमंत्र सहित) 68
श्रीआदिगुरु के १० अवतार 69
श्रीआदिगुरु दत्तात्रेय के १०८ नाम 70
श्रीसद्गुरु के ११३ नाम 72

अनाहत (बायां हृदय) **विषय 6**

श्रीशिवस्तुति 76
श्रीशिवजी के १०८ नाम 77
तद्निष्कला (श्री आदिशंकराचार्यद्वारा आत्मषट्कम्) 80
श्रीगंगानदी के १०८ नाम 82

अनाहत (मध्य हृदय) **विषय 7**

श्रीदुर्गा माता के ९ नाम 86
श्रीदुर्गामाता के ८४ नाम 87
श्रीदुर्गामाता के १०८ नाम 89
देवी कवच 92
अपराजिता स्तोत्रम् (देवी सूक्तम्) 99

अनाहत (दायां हृदय) **विषय 8**

श्रीरामरक्षास्तोत्रम् (राम कवच) 104
श्रीराम के १६ नाम 109
श्री राम के १०८ नाम 110

विशुद्धि **विषय 9**

श्रीकृष्णस्तुति 114
श्रीराधाकृष्ण के १६ नाम 114
श्रीकृष्ण के १०८ नाम 115
श्रीकृष्ण के १०८ अंग्रेजी नाम 118
श्रीकृष्ण के १०८ अंग्रेजी नाम (अनुवाद) 123
श्रीकुबेर के ६९ नाम 128
श्रीविष्णुमाया के ८४ नाम 130
अल्लाह के ९९ नाम 132
विराट के ५ मंत्र 134

आज्ञा **विषय 10**

द लॉर्ड्स् प्रेअर 136

द लॉर्ड्स् प्रेअर (अनुवाद) 137
येशू क्रिस्त के १०८ नाम 138
श्रीजीज़स क्राइस्ट के १०८ अंग्रेजी नाम 141
श्रीजीज़स क्राइस्ट के १०८ नाम (अनुवाद) 146
प्रेयर फॉर श्री बुद्धपूजा तथा बुद्धमंत्र 152
बुध्दपूजा की प्रार्थना (अनुवाद) 156
एकादश रुद्र के ११ मंत्र 160
एकादश रुद्र के ६९ मंत्र 161

सहस्रार **विषय 11**

तीन महामंत्र(सहस्रार मंत्र) 164
श्रीमाताजी निर्मला देवी के १०८ नाम 165
श्रीनिर्मला मंत्र 168
श्रीनिर्मला नमस्कार 171
श्रीआदिशक्ति की प्रार्थना 172
श्रीआदिशक्ति की स्तुति 173
श्रीआदिशक्ति की स्तुति (अनुवाद) 179
अवर मदर्स प्रेयर 185
श्रीमाताजी के चरणों में प्रार्थनायें 186
श्रीराजराजेश्वरी के ७९ नाम 187

इडा नाडी (बाईं बाजू) **विषय 12**

इडा नाडी के मंत्र 190
श्रीमहाकाली के १०८ नाम 191
श्रीभैरवनाथ (आरचेंजल मायकेल) के २१ नाम 194

श्रीमहागणेश के मंत्र 195
श्रीमहावीर के २१ नाम 196

पिंगला नाडी (दाईं बाजू) विषय 13

श्रीमहासरस्वती की प्रार्थना 198
श्रीहनुमान स्तुति 198
श्रीरामजय: (श्री हनुमानजी की प्रार्थना) 199
श्रीहनुमान चालिसा 200
श्रीमारुती (हनुमान) स्तोत्र (मराठी) 202
श्रीहनुमानजी के १०८ नाम 204
श्रीसूर्य के १२ नाम 207
दायां स्वाधिष्ठान ठण्डा करने के लिए मंत्र 208

अन्य विषय विषय 14

मॉर्निंग प्रेयर (सुबह की प्रार्थना) 210
सुबह की प्रार्थना (अनुवाद) 210
प्रेयर - कम इन माई हार्ट 211
प्रार्थना - मेरे हृदय पधारें (अनुवाद) 211
प्रेयर्स ऑफ चक्राज (चक्रों की प्रार्थनायें) 212
आज्ञा चक्र 212
आज्ञा चक्र (अनुवाद) 212
हार्ट (हृदय) चक्र 213
हृदय चक्र (अनुवाद) 213
प्रार्थना - प्रात: नमामि 214

बाधानाशक मंत्र 215
श्रीभगवती (अनुवादित) 216
श्रीगणेशजी की आरती (मराठी) 217
श्रीशिवजी की आरती (मराठी) 218
श्रीमाताजी की आरती - सबको दुआ देना माँ 219
सहजधर्म क्या है? 220
मानव के दस धर्म 222
ध्यान में निष्क्रियता 225
क्या आपकी प्रगति अच्छी हो रही है? 229
चेल्सम रोड पर श्रीमाताजी का उपदेश 231
ध्यानधारणा की एक विधि (श्री माताजी द्वारा) 234
ध्यानधारणा एवं प्रार्थनायें - शुडी कॅम्प 240

विषय 1

नाडी तथा चक्रशुद्धि के लिये सहजयोग के मंत्र एवं प्रार्थनायें

दो तरह के मंत्र है (१) प्रशंसा की कवितायें (२) प्रतिज्ञान दोनों को विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग करते हैं ।

ॐ - अऊम्

ॐ (जॉन के गॉस्पेल में आमेन), श्रीआदिशक्ति की समग्र (इन्टिग्रेटेड) शक्ति है। इसका सत्त्व (इसेन्स) श्रीगणेश के रूप में मूलाधार चक्र में विराजमान है तथा आज्ञा चक्र में जीजस क्राईस्ट के रूप में इसका उद्‌भव (मॅनिफेस्टेशन) हैं। ओम् शब्द की तीन ध्वनि अ, ऊ, म, हैं जो तीन शक्ति तथा संबंधित गुण व्यक्त करते है।

अ-महाकाली शक्ति /-	इडा नाडी बायाँ सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टिम	(तमोगुण-इच्छाशक्ति / इच्छा शक्ति अस्तित्व/ नकारात्मकता विनाशन गुण है)
ऊ-महासरस्वती शक्ति/- क्रियाशक्ति	पिंगला नाडी दायाँ सिम्पथेटिक नर्वस सिस्टिम	(रजोगुण-कार्यशक्ति सृजन गुण है)
म्-महालक्ष्मी शक्ति /- ज्ञानशक्ति	सुषुम्ना नाडी पैरासिम्पथेटिक नर्वस सिस्टिम -	(सत्त्वगुण-उत्क्रांति/ चेतना गुण है)

चक्रों के मंत्र

प्रशंसा की कवितायें - ये पंक्तियाँ हैं जो संस्कृत में कही जाती हैं

कुण्डलिनी के उत्थान की सहायता हेतु चक्रों पर विराजमान देवताओं को (जो परमात्मा के विविध अंग हैं) निम्नलिखित मंत्रों का उच्चारण करके हम जागृत कर सकते हैं जिससे चक्रों को शक्ति तथा पोषण प्रदान होता है।

मंत्र : ॐ त्वमेव साक्षात् ..... साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

(रिक्त स्थान में विशिष्ट चक्र के देवता के नाम का उच्चारण करें)

देवता	चक्र / स्थान	चक्रों के गुण
श्रीगणेश	बायाँ और मध्य मूलाधार चक्र	पवित्रता, अबोधिता, बुद्धिमत्ता
श्रीकार्तिकेय	दायाँ मूलाधार चक्र	शौर्य, सकारात्मकता
श्रीगौरी कुण्डलिनी माता	मूलाधार	शुद्धता
श्रीब्रह्मदेव सरस्वती	मध्य, दायाँ स्वाधिष्ठान	क्रिया, सृजनता
श्रीनिर्मल विद्या, श्रीशुद्ध इच्छा	बायाँ स्वाधिष्ठान	शुद्ध इच्छा
श्रीहज़रत अली-फातिमा	बायाँ स्वाधिष्ठान /बायीं नाभि	संतुलन, समाधान, अत्यधिक सोच
श्रीलक्ष्मी - विष्णु	मध्य नाभि	धर्म, उत्क्रांति, उदारता, संतोष, खोज़

श्रीगृहलक्ष्मी	बायीं नाभि	पारिवारिक एवं घर गृहस्थी का
श्रीराज लक्ष्मी, श्रीनिर्मल चित्त श्रीशेषनाग लक्ष्मण	दायीं नाभि	लीवर की शक्ति, चित्त, भौतिक समृद्धि एवं सत्ता के संबंध में आशीर्वाद
श्रीआदिगुरु दत्तात्रेय	भवसागर(वॉयड)	गुरुतत्त्व,शिष्यत्व,ज्ञान
श्रीदुर्गामाता, जगदंबा	मध्य हृदय	सुरक्षा भावना, माँ की सुरक्षा
श्रीशिव पार्वती	बायाँ हृदय	आत्मा का स्थान, अस्तित्व, प्रेम, आनन्द, माँ के साथ अच्छे सम्बन्ध
श्रीशिवशक्ति पुत्र कार्तिकेय		माता-पिता व पुत्र इनकी शक्ति
श्रीआत्मा-परमात्मा		श्री परमात्मा से मिलन
श्रीसीता-राम	दायाँ हृदय	जिम्मेदारी और धार्मिकता से परिपूर्ण जीवन, पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध
श्रीललिता चक्र स्वामिनी	ललिता चक्र/ बाये कंधे में का	बाये तरफ की शक्ति आविष्कार

श्रीश्रीचक्र स्वामिनी	श्री चक्र/ दाये कंधे में	दायें तरफ की शक्ति का आविष्कार
श्रीराधा-कृष्ण	मध्य विशुद्धि	सामूहिकता, साक्षित्व
श्रीविष्णुमाया	बाईं विशुद्धि	आत्मसम्मान
श्रीयशोदा, श्रीविठ्ठल-रुक्मिणी	दाईं विशुद्धि	दूसरों का सम्मान
श्रीसर्वमंत्रसिद्धी	दाईं विशुद्धि	प्रबोधित, वाणी की शक्ति
श्रीहंसचक्र स्वामिनी	हंस चक्र	विवेक, पूर्व संकेत
श्रीमेरी-जीज़स (श्रीयेशू मेरी माता)	मध्य आज्ञा चक्र पुनरुत्थान	क्षमा, सत्य,
श्रीमहावीर, श्रीमुक्तिदायिनी श्रीमहन्मानस	बाईं आज्ञा / दायाँ कपाल	भय प्रति अहंकार से मुक्तता
श्रीबुद्ध, श्रीमहत् अहंकार	दायाँ आज्ञा	अहंकार से मुक्ति, निर्विचार एवं निर्विकल्प स्थिति
श्रीमहागणेश, श्रीमहागणपति श्रीहिरण्यगर्भ	पिछला आज्ञा	दृष्टि, पुराने कर्मों के प्रभाव से मुक्ति
श्रीएकादश रुद्र	एकादश रुद्र, कपाल का ऊपरी हिस्सा	श्रीजीज़स के स्वाधीन श्रीशिव की ११ विध्वसंक शक्तियाँ

श्रीनिर्मला विराटांगना	विराट	वैश्विक पुरुष की सर्वश्रेष्ठ शक्ति
श्रीकल्की सहस्रार स्वामिनी	तालू का क्षेत्र	निरानंद, सत्य, निर्विचारिता, परम शांति, आत्मसाक्षात्कार
श्रीमहाकाली-भैरव-आर्चअेंजल मायकेल श्रीमहाकाली-भद्रकाली	पूरी बायीं बाजू-इडा नाडी	शुद्ध भावना, शुद्ध इच्छा
श्रीमहासरस्वती-हनुमान आर्चिएंजल गॅब्रियल	दायीं बाजू-पिंगला नाडी	शारीरिक एवं बौद्धिक कार्य के लिए आशीर्वाद)
श्रीमहालक्ष्मीगणेश	मध्य मार्ग-सुषुम्ना नाडी	उत्क्रांति और उत्थान
श्रीविष्णुग्रंथिविभेदिनी	विष्णुग्रंथि	अहंकार की शुरूआत
श्रीमहावीर	चन्द्र चक्र भवसागर में /चंद्र नाडी	कट्टरवादिता खाने, रहने की
श्रीबुद्ध	सूर्य चक्र भवसागर में / सूर्य नाडी	तानाशाहिता खाने, रहने की
श्रीमहाभैरव	पिछला आज्ञा	संस्कार
श्रीमहाहिरण्यगर्भ (सामूहिक ब्रह्मदेव)	पिछला आज्ञा	संस्कार

प्रतिज्ञान (द अॅफर्मेशन्स्)

जब किसी चक्र में दोष होता हैं और अगर वहाँ से अधिष्ठात्री देवता लुप्त होते हैं तब उस चक्र के गुणों के जागृति के लिये तथा देवता के पुनरागमन के लिये, चक्र के गुणों पर हमारा चित्त लगाना आवश्यक हैं और उसके लिये प्रतिज्ञान उपयोगी हैं।

मध्य बाजू

१	मूलाधार	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मुझे अबोधित बनाईये।
२	स्वाधिष्ठान	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मुझे शुद्ध विद्या दीजिए।
३	नाभि	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मुझे समाधान और संतुलन में रखिये।
४	भवसागर	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मुझे मेरा स्वयं का (वॉइड गुरु बनाईये।
५	मध्य हृदय	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मुझे निर्भय बनाईये। (अनाहत)
६	विशुद्धि	श्रीमाताजी अपनी कृपा से मुझे अनासक्त साक्षी बनाईये। मुझे संपूर्णता का अविभाज्य घटक बनाईये।
७	हंस	श्रीमाताजी अपनी कृपा से मुझे विवेक की शक्ति दीजिए।
८	आज्ञा	श्रीमाताजी कृपया मुझे क्षमावान, त्यागी व्यक्ति बनाईये।
९	सहस्रार	श्रीमाताजी अपनी कृपा से मेरा आत्मसाक्षात्कार सुदृढ करिये। (ईश्वर से संपर्क)

बायाँ बाजू

१	मूलाधार	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं बालक की अबोधिता (इनोसेन्स) हूँ ।
२	स्वाधिष्ठान	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं कार्य करने वाला शुद्ध विद्या/ईश्वरीय तंत्र हूँ ।
३	नाभि	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं संतुष्ट हूँ। श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं शांत हूँ। श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं उदार व्यक्ति हूँ।
४	भवसागर (वॉयड)	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं स्वयं का गुरु हूँ। श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं शुद्ध विद्या हूँ इसलिए मैं स्वयं का गुरु हूँ।
५	हृदय	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं आत्मा हूँ । श्रीमाताजी, मेरे से आत्मा के विरोध में अगर अपराध हुआ है तो आप कृपया मुझे क्षमा करें। श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं माँ के प्रेम का यंत्र (इन्स्ट्रुमेंट) हूँ।
६	विशुद्धि	श्रीमाताजी मैं निर्दोष हूँ। श्रीमाताजी आपकी कृपा से आत्मा हूँ तो मैं अपराधी कैसे बन सकता हूँ?
७	आज्ञा (बायाँ) (दायाँ कपाल)	श्रीमाताजी कृपा कर के मेरे जाने अनजाने में हुए गलतियों को क्षमा करें। श्री माताजी आपकी कृपा से मुझे शरणागत एवं निर्विकल्प अवस्था में रखे ।
८	सहस्रार	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं सभी चुनौतियों में सुरक्षित हूँ और अपने उत्थान के चुनौतियों पर विजय प्राप्त करूँगा ।

९	श्रीललिता चक्र	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मै भाग्यशाली हूँ कि संपूर्ण बायाँ बाजू मैं आपके सुरक्षा में हूँ ।

दायाँ बाजू

१	मूलाधार चक्र	श्रीमाताजी आप निश्चय ही राक्षसों का नाश करने वाली हैं।
२	स्वाधिष्ठान	श्रीमाताजी मैं कुछ नहीं करता हूँ । आपही कर्ता है और भोक्ता हैं।
३	नाभि चक्र	श्रीमाताजी आप मेरे अंत:स्थित महान् आत्म-सम्मान (रॉयल डिगनिटी) हैं। आप निश्चय ही मेरे धन तथा परिवार संबंधी समस्याओं का समाधान करती हैं तथा कुशल क्षेम का ध्यान रखती हैं।
४	भवसागर	श्रीमाताजी आप निश्चयही मेरी गुरु/स्वामिनी हैं।
५	हृदय	श्रीमाताजी मेरे अन्दर जो जिम्मेदारी भाव हैं वह आपही हैं। श्रीमाताजी आप सदाचार की मर्यादाएं हैं तथा अच्छे पिता की कृपा भी हैं।
६	विशुद्धि	श्रीमाताजी आप साक्षात् मेरे वाणी तथा कर्मों का माधुर्य हैं।
७	आज्ञा	श्रीमाताजी मैंने सबको तथा स्वयं को क्षमा किया हैं। कृपा करके आप मुझे अपने चित्त में बनाये रखिये।
८	सहस्रार	श्रीमाताजी निश्चिय ही आप उत्क्रांति के मार्ग की सभी चुनौतियों पर विजय हैं।
९	श्री चक्र संपूर्ण दायाँ बाजू	श्रीमाताजी आपही साक्षात् आदिशक्ति (होली स्पिरिट) हैं।

विषय 2

मूलाधार चक्र

ॐ गं गणपतये नमः

श्रीगणेशस्तुति

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

हाऊ टू अवेकन श्री गणेशाज पॉवर विदिन अस

बायाँ (लेफ्ट) हाथ फोटो की ओर तथा दायाँ (राईट) हाथ जमीन पर रखकर निम्न प्रार्थना करें :--

प्रेयर

श्रीगणेशा, आय अॅम गोईंग टू बी वर्दी ऑफ योर अटेन्शन
प्लीज मेक मी इनोसेंट सो दैट आई अैम इन योर अटेन्शन
श्री मदर, यू, हु आर श्रीगणेशा,
प्लीज गिव मी विज़डम अैंड डिस्क्रिमिनेशन

श्री गणेशा, प्लीज़ बी काईंड ॲण्ड मर्सिफुल ॲण्ड फर्गिव्हिंग,
दॅट यू मॅनिफिस्ट विदिन अवरसेल्व्हस
लेट ऑल दीज़ हिपॉक्रिटिकल थिंग्ज,
ऑल दीज़ कन्डिशनिंग्ज,
अँड ऑल दीज़राँग आयडियाज़ वी हॅव,
ऑर ऑल द राँग लाईफ वी हॅव हॅड,
जस्ट डिसॲपिअर लाईक थिन एअर;
अँड लेट द ब्यूटिफुल मूनलाईट ऑफ युवर सूथिंग
क्वालिटीज ऑफ इनोसन्स
बी मॅनिफिस्टेड थ्रू अस.

अपनी गणेश शक्ति कैसे जागृत करे (अनुवाद)

प्रार्थना

हे गणेशजी, आपका चित्त पाने का, पात्र बनना चाहता हूँ।
कृपया, मुझे अबोध बनाईये, चित्त में रह सकूँ आपके।
श्रीमाताजी आप ही गणेश हैं, आशीर्वादित करें मुझे,
बुद्धि और विवेक से।

प.पू.माताजी श्री निर्मला देवी, रोम आश्रम

हे श्रीगणेशजी कृपया आप, जागृत रहें हमारे तन में।
बारिश करें हम पर, अपनी कृपा, दया और क्षमा महान।
हमारे जीवन के ढ़कोसलापन, कुसंस्कार और दुर्विचार को,
दूर करें बयार समान।
आप की कृपा से मनोरम अबोधिता,
चांदनी सम विराजे हमारे मन में।

प.पू.माताजी श्री निर्मला देवी, श्री गणेश पूजा
लॅनर्सबॅक, ऑस्ट्रिया, २६ ऑगस्ट १९९०

श्रीगणेशअथर्वशीर्षम्

ॐ नमस्ते गणपतये, त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि, त्वमेव केवलं कर्ताऽसि त्वमेव केवलं धर्ताऽसि त्वमेव केवलं हर्ताऽसि त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि, त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् ।।१।। ऋतं वच्मि, सत्यं वच्मि ।।२।। अव त्वं माम्, अव वक्तारम्, अव श्रोतारम्, अव दातारम्, अव धातारम्, अवानूचानमव शिष्यं, अव पश्चात्तात्, अव पुरस्तात्, अवोत्तरात्तात्, अव दक्षिणात्तात्, अव चोर्ध्वात्तात्, अवाधरात्तात्, सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।।३।। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः, त्वं आनन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः, त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि, त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।।४।। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते, सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति, सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति, सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति, त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोनभः, त्वं चत्वारि वाक्पदानि ।।५।। त्वं गुणत्रयातीतः त्वं देहत्रयातीतः त्वं कालत्रयातीतः त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्, त्वं शक्तित्रयात्मकः त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं इंद्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।।६।। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरं, अनुस्वारः परतरः अर्धेन्दुलसितं तारेण ऋद्धं एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम् अकारो मध्यमरूपम् अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् बिन्दुरुत्तररूपम् नादः संधानं संहिता संधिः सैषा गणेशविद्या गणकऋषिः निच्चृद् गायत्रीछंदः गणपतिर्देवता ॐ गं गणपतये नमः ।।७।। एकदंताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दंती प्रचोदयात्।।८।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशम् अंकुशधारिणम् रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् । रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ।।९।। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदंताय, विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ।।१०।।

श्रीगणेश के १२ नाम - निर्विघ्नमस्तु

सुमखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ।।१।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।२।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।३।।

१	श्रीसुमुखाय	७	श्रीविघ्ननाशाय
२	श्रीएकदंताय	८	श्रीगणाधिपाय
३	श्रीकपिलाय	९	श्रीधूम्रकेतवे
४	श्रीगजकर्णकाय	१०	श्रीगणाध्यक्षाय
५	श्रीलम्बोदराय	११	श्रीभालचन्द्राय
६	श्रीविकटाय	१२	श्रीगजाननाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री गणेश के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री..... नमो नमः

१	श्री विनायकाय	२२	श्रीशुद्धाय
२	श्रीविघ्नराजाय	२३	श्रीबुद्धिप्रियाय
३	श्रीगौरीपुत्राय	२४	श्रीशान्ताय
४	श्रीगणेश्वराय	२५	श्रीब्रह्मचारिणे
५	श्रीस्कन्दाग्रजाय	२६	श्रीगजाननाय
६	श्रीअव्ययाय	२७	श्रीद्विमात्रीयाय
७	श्रीपूताय	२८	श्रीमुनिस्तुताय
८	श्रीदक्षाय	२९	श्रीभक्तविघ्नविनाशकाय
९	श्रीअध्यक्षाय	३०	श्रीएकदंताय
१०	श्रीद्विजप्रियाय	३१	श्रीचतुर्बाहवे
११	श्रीअग्निगर्भाय	३२	श्रीचतुराय
१२	श्रीइन्द्रश्रीप्रदाय	३३	श्रीशक्तिसंयुक्ताय
१३	श्रीवाणीप्रदाय	३४	श्रीलंबोदराय
१४	श्रीसर्व-सिद्धि-प्रदाय	३५	श्रीशूर्पकर्णकाय
१५	श्रीशर्वतनयाय	३६	श्रीहरये
१६	श्रीशर्वरीप्रियाय	३७	श्रीब्रह्मविदुत्तमाय
१७	श्रीसर्वात्मकाय	३८	श्रीकालाय
१८	श्रीसृष्टिकर्ते	३९	श्रीग्रहपतये
१९	श्रीदिव्याय	४०	श्रीकामिने
२०	श्रीअनेकार्चिताय	४१	श्रीसोमसूर्याग्निलोचनाय
२१	श्रीशिवाय	४२	श्रीपाशांकुशधराय

४३ श्रीछंदसे
४४ श्रीगुणातीताय
४५ श्रीनिरंजनाय
४६ श्रीअकल्मषाय
४७ श्रीस्वयंसिद्धाय
४८ श्रीसिद्धार्चित-पदाम्बुजाय
४९ श्रीबीजापुरफलासक्ताय
५० श्रीवरदाय
५१ श्रीशाश्वताय
५२ श्रीकृतिने
५३ श्रीवीतभयाय
५४ श्रीगदिने
५५ श्रीचक्रिणे
५६ श्रीइक्षुचापधृताय
५७ श्रीश्रीदायकाय
५८ श्रीअजाय
५९ श्रीउत्पलकराय
६० श्रीश्रीपतये
६१ श्रीस्तुतिहर्षिताय
६२ श्रीकुलाद्रिभेदिने
६३ श्रीजटिलाय
६४ श्रीकलिकल्मषनाशकाय
६५ श्रीचन्द्रचूडामणये
६६ श्रीकान्ताय
६७ श्रीपापहारिणे
६८ श्रीसंहिताय
६९ श्रीआश्रिताय
७० श्रीश्रीकराय
७१ श्रीसौम्याय
७२ श्रीभक्त-वांछित-दायकाय
७३ श्रीकैवल्यसुखदाय
७४ श्रीसच्चिदानंदविग्रहाय
७५ श्रीज्ञानिने
७६ श्रीदयायुताय
७७ श्रीदन्ताय
७८ श्रीब्रह्मद्वेषविवर्जिताय
७९ श्रीप्रमत्तदैत्यभयदाय
८० श्रीश्रीकण्ठाय
८१ श्रीविभवेश्वराय
८२ श्रीरामार्चिताय
८३ श्रीविधात्रे
८४ श्रीनागराजयज्ञोपवीतवर्तिने
८५ श्रीस्थूलकण्ठाय
८६ श्रीस्वयंकर्त्रे
८७ श्रीसामघोषप्रियाय
८८ श्रीपरस्मै
८९ श्रीस्थूलतुण्डाय
९० श्रीअग्रजाय
९१ श्रीधीराय
९२ श्रीवागीशाय

९३ श्रीसिद्धिदायकाय
९४ श्रीदूर्वाबिल्वप्रियाय
९५ श्रीअव्यक्तमूर्तये
९६ श्रीअद्भुतमूर्तिमते
९७ श्रीशैलेन्द्रतनुजोत्संग-
खेलनोत्सुकमानसाय
९८ श्रीस्वलावण्यसुधासारजित-
मन्मथविग्रहाय
९९ श्रीसमस्तजगदाधाराय
१०० श्रीमायिने
१०१ श्रीमूषकवाहनाय
१०२ श्रीहृष्टाय
१०३ श्रीतुष्टाय
१०४ श्रीप्रसन्नात्मने
१०५ श्रीसर्वसिद्धिप्रदायकाय
१०६ श्रीमूलाधारचक्रसंस्थिताय
१०७ श्रीअबोधिताप्रदायकाय
१०८ श्रीगणनायकाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री गणेश के १०८ अंग्रेजी नाम

यू आर द वन टू बी वर्शिप्ड फर्स्ट

- ओबीसन्स टु यू अगेन ॲड अगेन

यू आर द वर्ड दॅट वॉज इन द बिगिनिंग
यू आर द ओंकार
यू आर द सोर्स ऑफ लाईफ
यू आर द सोर्स ऑफ सिक्युरिटी ५

यू आर वर्शिप्ड विथ रेड फ्लावर्स
यू आर ॲडोअॅर्ड बाई योगीज अँड योगिनीज
यू आर द सपोर्ट ऑफ द रूट अँड द सपोर्ट ऑफ द फ्रूट
यू आर ऑस्पिशसनेस अँड द बिस्टोअर ऑफ ऑस्पिशसनेस
यू आर विज्डम अँड द बिस्टोअर ऑफ विज्डम १०

यू आर इनोसन्स अँड द बिस्टोअर ऑफ इनोसन्स
यू मेक होली व्हॉट इव्हिल हैड सॉईल्ड
यू बिल्ड ॲन्यू व्हॉट वॉज डिस्ट्रॉईड
यू रेझरेक्ट द इनोसन्स दॅट वॉज लॉस्ट
यू आर द लॉर्ड ऑफ चॅस्टिटी १५

यू आर द बिस्टोअर ऑफ द इन्नर पॅराडाईज
यू आर द रेफ्यूज ऑफ ऑल
यू हैव कम्पॅशन फॉर युवर डिव्होटीज
यू आर द गिव्हर ऑफ सॅटिस्फैक्शन अँड फुलफिलमेंट
यू आर द बिलव्हेड सन ऑफ श्रीमहागौरी २०

यू आर द ग्रेटेस्ट प्युपिल ऑफ श्रीमहासरस्वती

यू आर द गार्डियन ऑफ श्रीमहालक्ष्मी
यू आर लिसन्ड टू बाई श्री आदिकुण्डलिनी
यू आर मॅनिफिस्टेड इन द फोर हेडस् ऑफ श्री ब्रह्मदेव
यू आर द फोरमोस्ट डिसायपल ऑफ श्री शिव २५

यू आर द ग्लोरी ऑफ श्री महाविष्णु
यू आर द बॉन्ड ऑफ लव्ह बिटवीन श्रीराम अॅन्ड हिज ब्रदर्स
यू लीड द डान्स ऑफ श्री कृष्णाज गोपीज
यू आर लॉर्ड जीज़स द चाईल्ड अँड क्राईस्ट द किंग
यू फिल द नेट्स ऑफ लॉर्ड जीज़स् डिसायपल्स् ३०

यू रिसाईड इन ऑल द डेइटीज
यू आर द हाऊस ऑफ योगा
यू आर द सबस्टेन्स ऑफ द आदिगुरु
यू बिकम द आदिगुरू टु रिवील युवर मदर
यू ओनली नो हाऊ टू वर्शिप युवर मदर ३५

यू ओनली नो युवर मदर
यू आर द जॉय ऑफ युवर मदर
यू लिव्ह ऑन द कम्प्लीट ब्लेसिंग्स ऑफ युवर मदर
यू लिव्ह इन द प्रेजेन्ट विच इज द प्रेज़ेन्स ऑफ गॉड
यू आर द फाऊंडेशन ऑफ द सहज कलेक्टिव-द संघ ४०

यू आर द बॉडी ऑफ धर्म
यू आर द इसेन्स ऑफ (एनलायटनड् विज्डम)
यू आर सहज
यू आर द प्रिमॉर्डियल फ्रेन्ड
यू क्रिएट द स्फियर ऑफ सहज योगा ४५

यू आर द ऑनेस्टी ऑफ सहज योग
यू आर द एल्डेस्ट ब्रदर ऑफ द सहज योगीज
यू बिस्टो द शक्ति ऑफ चॅस्टिटी अपॉन द सहज योगीज
यू आर प्लीज्ड बाई ह्यूमिलिटी
यू आर प्लीज्ड बाई सिंप्लिसिटी ५०

यू ग्रांट द नॉलेज ऑफ प्योर लव्ह
यू ग्रांट द लव्ह ऑफ प्योर नॉलेज
यू आर बियाँड ग्रास्प
यू आर बियाँड टेम्प्टेशन्स यू आर बियाँड इमॅजिनेशन ५५

यू चैलेंज, डिफीट अँड पनिश निगेटिव्हीटी
यू वॉच द गेटस् ऑफ हेल
यू ओपन अँड क्लोज द गेटस् ऑफ हेल
दॅट विच इज नॉट विदिन यू इज हेल
यू आर द लॉर्ड ऑफ द गणाज ६०

यू ग्रांट द सटलटी ऑफ डिस्क्रीशन
यू रिमूव्ह ऑल द ऑबस्टेकल्स्
यू ब्लेस द सँक्टिटी ऑफ द मॅरेज युनियन
यू कॉल ऑन दिस अर्थ द रिअलाइज्ड सोल्स
यू आर द डिग्निटी ऑफ इटर्नल चाईल्डहूड ६५

यू आर द लॉर्ड ऑफ महाराष्ट्र
यू आर कम्प्लीट अँड परफेक्ट
यू डू नॉट टॉलरेट फॅनॅटिसिजम एस्पेशली इन सहज योगीज
यू प्ले अँड सी द प्ले
यू आर मॅग्नेटिक अँड फॅसिनेटिंग ७०

यू आर द बिलव्हेड वन
यू आर द क्वालिटी दॅट मेक्स लव्ह एनचँटिंग
यू आर द पॉवर ऑफ ऑल बन्धन्स्
यू आर द सेवियर ऑफ अवर अटेन्शन
यू हॅव अ प्रॉमिनेन्ट बेली एक्सप्रेसिंग कन्टेन्टमेंट ७५

यू आर फाँड ऑफ कुश ग्रास वुईच इज मदर अर्थस् ग्रीन सारी
यू आर फाँड ऑफ लड्डूज बिकॉज यू आर द इसेन्स ऑफ स्वीटनेस
यू आर फाँड ऑफ डान्सिंग फॉर यूवर मदर्स डिलाईट
यू फैन योर ईअर्स टु मेक द चैतन्य ब्लो
यू हैव वन टस्क टु लिफ्ट अस आऊट ऑफ संसारा ८०

यू होल्ड मेनी वेपन्स फॉर द डिस्ट्रक्शन ऑफ इविल डुअर्स
यू आर द गार्डियन ऑफ द सैंक्टम सैंक्टोरम
यू शाइन लाईक अ थाऊजंड सन्स
यू रूल ओवर अ गैलक्सि ऑफ लोटसेस
यू बिस्टो अपॉन द सीकर्स द पॉवर टु बिकम लोटसेस ८५

यू आर द रिमेम्ब्रन्स ऑफ गॉड विदिन ऑल सीकर्स
यू सस्टेन द होप फॉर गॉड ड्युरिंग द क्वेस्ट
यू डिस्ट्रॉय द इम्प्युरिटी ऑफ कलियुगा
यू आर द बिस्टोअर ऑफ बून्स
यू आर द बिस्टोअर ऑफ अॅबसोल्यूट हैपीनेस ९०

यू गेव्ह अैन इन्फानिटेसीमल फ्रैक्शन ऑफ युवर पॉवर टु मन्मथ,
(द गॉड ऑफ लव्ह) अैंड ही कॉन्कर्ड द वर्ल्ड
यू गिव टु लव इटस् पॉवर ऑफ अॅट्रॅक्शन
यू आर द प्युरिटी ऑफ लव इमॅक्युलेट

यू आर द लव दैट सूदस्, नरिशेस अँड एलिव्हेटस् टु गॉड
यू आर द लव बाई विच वी रेकग्नाईझ गॉड ९५

यू आर द वेसल ऑफ सॅक्रेड ॲडोरेशन
यू आर लॉस्ट इन द गॉडेसेस दर्शन
यू ब्रिंग द योगी टु द गॉडेसेस दर्शन
यू ग्रांट द दर्शन ऑफ द फॉर्म अँड द फॉर्मलेस
यू ग्रांट द दर्शन ऑफ श्री निर्मला मा अँड ऑफ श्रीनिर्गुणा १००

यू आर द मास्टर ऑफ प्रोटोकॉल ऑफ श्रीआदिशक्ति निर्मलादेवी
यू आर द फोरमोस्ट नोअर ऑफ श्रीआदिशक्ति निर्मलादेवी
यू विटनेस द ऑसम ग्रेटनेस ऑफ श्रीआदिशक्ति निर्मलादेवी
यू अलाउ द डिव्हाईन मदर टु फील हर मदरहूड
यू अलाउ द डिव्हाईन फादर टु अेन्जाय हर क्रिएशन १०५

यू अलाउ द सहज योगीज टु मेल्ट इन टु यू
यू आर द ओनर ऑफ गॉड अैज द चाईल्ड ओन्स हिज मदर
यू आर फॉन्ड ऑफ प्लेईंग विथ योर मदर निर्मला इन स्नोई रीजन्स
ऑफ सहस्रारा

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री गणेश के १०८ अंग्रेजी नाम (अनुवाद)

आप ही हैं जो सर्वप्रथम पूजे जाते हैं।

- आपको शत शत प्रणाम

आप आरंभ का शब्द हो ।
आप ओंकार हो ।
आप जीवन का स्रोत हो ।
आप सुरक्षा का स्रोत हो। ५

आप लाल फूल से पूजे जाते हो ।
आप योगी व योगिनियों से पूजे जाते हो ।
आप जड़ के आधार और फल का भी आधार हो ।
आप शुभ है और शुभ प्रदान करते हैं।
आप बुद्धि है और बुद्धिमत्ता देते हैं। १०

आप अबोधिता हो और अबोधिता देते हो।
आप सब बुराईयों को पवित्र करते हो।
आप सब नष्ट को नवीन रचाते हो ।
आप खोयी हुअी अबोधिता को वापिस जगाते हो ।
आप पवित्रता के स्वामी हो । १५

आप आंतरिक स्वर्ग को प्रदान करते हो।
आप सबका आसरा हो।
आप अपने भक्तो को करुणा करते हो।
आप संतोष व कृतार्थता प्रदान करते हो।
आप महागौरी के प्रिय पुत्र हो । २०

आप महासरस्वती के शिष्य हो ।

आप महालक्ष्मी के संरक्षक हो ।
आप आदि कुण्डलिनी से श्रवण किये जाते हो ।
आप ब्रह्मदेव के चारो शिरों में प्रकटित हो ।
आप शिव के सर्वप्रथम शिष्य हो । २५

आप महाविष्णु का वैभव हो ।
आप प्यार का बंधन हो जो श्री राम व उनके भ्राताओं में था।
आप श्री कृष्ण की गोपियों के नृत्य के प्रदर्शक हो ।
आप जीझस बालक व क्राईस्ट राजा हो ।
आप जीझस के शिष्यों की जालीया (मछली से) भरते थे। ३०

आप सब देवी देवताओं में स्थित हो ।
आप योग का गृह हो ।
आप आदिगुरु का मान हो ।
आप अपनी माता जी को प्रकट करने के लिए आदिगुरु बन जाते हो ।
आप अपने माता की (श्री माताजी) ही पूजा करना जानते हो । ३५

आप केवल अपनी माँ को जानते हो ।
आप अपनी माता का आनंद हो ।
आप अपनी माता के आशीर्वाद पर रहते हो ।
आप वर्तमान में रहते हो जो कि ईश्वर का उपस्थिती हैं।
आप संघ की नींव हो । ४०

आप धर्म का शरीर हो ।
आप बुद्ध का सत्त्व हो ।
आप सहज हो ।
आप आदि मित्र हो ।
आप सहजयोग की परिधि रचते हो । ४५

आप सहज योग की ईमान हो ।
आप सहज योगीयों के बडे भाई हो ।
आप पवित्रता की शक्ति सहजयोगियों पर बरसाते हो ।
आप नम्रता से प्रसन्न होते हो ।
आप सादगी से प्रसन्न होते हो । ५०

आप शुद्ध प्रेम का ज्ञान प्रदान करते हो ।
आप प्रेम से शुद्ध ज्ञान देते हो।
आप हमारी आकलन के बाहर हो ।
आप मोह से दूर हो ।
आप कल्पना से परे हो । ५५

आप निगेटिव्हीटी को चुनौती देते हो, उसको परास्त करके सजा देतो हो।
आप नर्क के द्वार के रक्षक हो ।
आप नर्क के द्वार खोलते व बंद करते हो ।
आपमे जो नही समाया हुआ है वह नर्क हैं ।
आप गणों के स्वामी हो । ६०

आप विवेक की सूक्ष्मता प्रदान करते हैं ।
आप सब अडचनों को दूर करते हो ।
आप विवाह की पवित्रता को आशीर्वाद देते हो ।
आप इस धरती पर साक्षात्कारी जीवों को बुलाते हो ।
आप चिरंतन बचपन की प्रतिष्ठा हो । ६५

आप महाराष्ट्र के स्वामी हो।
आप पूर्ण व परिपूर्ण हो ।
आप धर्मान्धता सहन नही करते, खास तौर पर सहजयोगियों में।
आप स्वयं लीला करते हो और लीला देखते हो।

आप आकर्षित तथा मोहित करते हो । ७०

आप सबके प्रिय हो ।
आप प्रेम को संगीतमय निर्मल (एनचॅन्टिंग) बनाने वाला गुण हो ।
आप बंधन की शक्ति हो ।
आप हमारे चित्त की सुरक्षा हो ।
आपका बडा पेट तुष्टता का निदेशक हैं । ७५

आप दूर्वा को पंसद करते हो जो धरतीमाता की हरे रंग की साडी हैं।
आप लड्डू के प्रेमी हो क्योंकि आप मिठास का सत्त्व हो।
आप नृत्य के शौकीन हो क्योकि आप अपनी माँ को प्रसन्न रखते हो
आप अपने कान को पंखा जैसे हिलाकर चैतन्य की धारा बहाते हो
आप का एक दांत हमे सांसारिक वृत्ति से निकालता हैं। ८०

आपके पास बुराई कर्ता के विनाश के लिये बहुत शस्त्र हैं।
आप ईश्वर के मंदिर के रक्षक हो ।
आप हजारो सूर्यो की तेज जैसे चमकते हो ।
आप कमलों की आकाशगंगा (गॅलेक्सी) पर राज्य करते हो ।
आप साधकों को कमल बनने की शक्ति देते हो। ८५

आप सभी साधकों मे स्थित प्रभु का स्मरण हो।
आप साधना करते हुए साधकों में प्रभु से मिलने की आशा की धारण करते हो।
आप कलियुग की अशुध्दता को दूर करते हो।
आप वरदान देने वाले हो ।
आप निरपेक्ष आनन्द के दाता हो । ९०

आपने आप के शक्ति का अंश मात्र मन्मथ को दिया और उसने पूरे विश्व को जीता।

आपने प्रेम को उसकी आकर्षण की शक्ति दी हैं।
आप निर्मल प्रेम की शुद्धता हो ।
आप वह प्रेम हो जो शांत करता है पोषण करता है और परमात्मा की तरफ उठाता हैं ।
आप वही प्रेम हो जिससे हम परमात्मा को पहचानते हैं। ९५

आप पवित्र पूजन के बर्तन हो ।
आप देवी के दर्शन मे खोये हो ।
आप देवी के दर्शन के लिये योगियों को लाते हो ।
आप सगुण और निर्गुण के दर्शन प्रदान करते हो ।
आप श्री निर्मला माँ और श्री निर्गुणा के दर्शन प्रदान करते हो।....१००

आप आदिशक्ति निर्मला देवी के शिष्टाचार (प्रोटोकॉल्स) के स्वामी हो।
आप आदिशक्ति निर्मला देवी को जानने वालों मे सर्व प्रथम हो ।
आप आदिशक्ति निर्मला देवी के बिस्मयाकुल (ऑसम) दिव्य महानता के साक्षी हो ।
आप ईश्वरीय माता को उनके मातृत्व का एहसास दिलाते हो ।
आप ईश्वरीय पिता को माता के रचना का आनंद दिलाते हो ।....१०५

आप सहजयोगियों को अपने साथ एकात्म (मेल्ट) कराते हो ।
आप प्रभु के दायित्व हो जैसे बालक माताका हैं ।
आप अपनी माता निर्मला देवी के साथ सहस्रार के बर्फीले क्षेत्र में खेलना पसंद करते हो ।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

कार्तिकेय की जय हो! श्री शिव के तेज़स्वी पुत्र दीप्तिमान देवता
जिन्होंने सारी नकारात्मकता को अपने निर्मल तेज़ से नष्ट कर दिया।

कार्तिकेय के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात श्री.....नमो नमः

१	श्रीस्कन्दाय	२२	श्रीभक्तवत्सलाय
२	श्रीगुहाय	२३	श्रीउमासुताय
३	श्रीषण्मुखाय	२४	श्रीकुमाराय
४	श्रीभालनेत्रसुताय	२५	श्रीक्रौंचतारणाय
५	श्रीप्रभवे	२६	श्रीसेनान्ये
६	श्रीपिंगलाय	२७	श्रीअग्निजाय
७	श्रीकृत्तिकासूनवे	२८	श्रीविशाखाय
८	श्रीशिखिवाहनाय	२९	श्रीशंकरात्मजाय
९	श्रीद्वादशभुजाय	३०	श्रीशिवस्वामिने
१०	श्रीद्वादशनेत्राय	३१	श्रीगणस्वामिने
११	श्रीशक्तिधराय	३२	श्रीसर्वस्वामिने
१२	पिशिताशप्रभंजनाय	३३	श्रीसनातनाय
१३	तारकासुरसंहारिणे	३४	श्रीअनंतशक्तये
१४	रक्षोबलविमर्दनाय	३५	श्रीअक्षोभ्याय
१५	श्रीमत्ताय	३६	श्रीपार्वतीप्रियनंदनाय
१६	श्रीप्रमत्ताय	३७	श्रीगंगासुताय
१७	श्रीउन्मत्ताय	३८	श्रीशरोद्भूताय
१८	श्रीसुरसैन्यसुरक्षकाय	३९	श्रीपावकात्मजाय
१९	श्रीदेव-सेनापतये	४०	श्रीआविर्भूताय
२०	श्रीप्राज्ञाय	४१	श्रीअग्निगर्भाय
२१	श्रीकृपालवे	४२	श्रीशमीगर्भाय

४३ श्रीविश्वरेतसे
४४ श्रीसुरारिहाय
४५ श्रीहिरण्यवर्णाय
४६ श्रीशुभकराय
४७ श्रीवसुमते
४८ श्रीवध्वेषभृते
४९ श्रीजृम्भाय
५० श्रीप्रजृम्भाय
५१ श्रीउज्जृम्भाय
५२ श्रीकमलासनसंस्तुताय
५३ श्रीएकवर्णाय
५४ श्रीद्विवर्णाय
५५ श्रीत्रिवर्णाय
५६ श्रीचतुर्वर्णाय
५७ श्रीपंचवर्णाय
५८ श्रीप्रजापतये
५९ श्रीपूष्णे
६० श्रीगभस्तये
६१ श्रीगर्भशायिने
६२ श्रीगहनाय
६३ श्रीचंद्रवर्णाय
६४ श्रीकलाधराय
६५ श्रीमायाधराय
६६ श्रीमहामायिने
६७ श्रीकैवल्याय
६८ श्रीसंहतात्मकाय
६९ श्री विश्वयोनिने
७० श्रीअमेयात्मने
७१ श्री तेजोनिधये
७२ श्रीअनामयाय
७३ श्रीपरमेष्ठिने
७४ श्रीगुरवे
७५ श्रीपरब्रह्मणे
७६ श्रीवेदगर्भाय
७७ श्रीपुलिन्दकन्यापतये
७८ श्रीमहासारस्वतप्रत्ययाय
७९ श्रीआश्रिताखिलधात्रे
८० श्रीशूलघ्नाय
८१ श्रीरोगनाशकाय
८२ श्रीअनंतमूर्तये
८३ श्रीआनंदाय
८४ श्रीशिखण्डीकृतकेतनाय
८५ श्रीडम्भाय
८६ श्रीपरमडम्भाय
८७ श्रीमहाडम्भाय
८८ श्रीवृषाकपये
८९ श्रीकारणोत्पत्तिदेहाय
९० श्रीकारणातीतविग्रहाय

९१ श्रीअनीश्वराय
९२ श्रीअमृताय
९३ श्रीप्राणाय
९४ श्रीप्राणाधाराय
९५ श्रीपरावराय
९६ श्रीरुद्धकंधराय
९७ श्रीवीरघ्नाय
९८ श्रीरक्तश्यामगलाय
९९ श्रीलोकगुरवे
१०० श्रीसुपिंगलाय
१०१ श्रीमहते
१०२ श्रीसुब्रह्मणे
१०३ श्रीगुहप्रियाय
१०४ श्रीब्राह्मण्याय
१०५ श्रीब्राह्मणप्रियाय
१०६ श्रीसर्वेश्वराय
१०७ श्रीअक्षयफलप्रदाय
१०८ श्रीनिष्कलंकाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 3

स्वाधिष्ठान चक्र

नमामि शारदां देवीं वीणापुस्तकधारिणीम्

गायत्री मंत्र

ओम् भूः, ओम् भुवः ओम् स्वः ओम् मनः ओम् जनः
ओम् तपः ओम् सत्यम् । ओम् भूर्भुव स्वः।
ओम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।
ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।

१) यह चक्रों (मूलाधार से सहस्रार) के बीज मंत्रो को बताता है।

२) गायत्री मंत्र का प्रयोग वाम पंक्षीय (Left Sided) व्यवहार से संतुलन मे लाने के लिये किया जाता है।

गुरुपूजा, शुडी कैम्प, लंदन जुलाई ८७ तथा
क्रिसमस पूजा गणपतिपूले, २५ दिसंम्बर ९५

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीब्रह्मदेव साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी
-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीब्रह्मदेव - सरस्वती के २१ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीबुद्धये	११	श्रीअनिलतत्त्व-ईश्वर्यै
२	श्रीमहत्-अहंकाराय	१३	श्रीजलतत्त्व-ईश्वर्यै
३	श्रीसूर्याय	१४	श्रीभूमीतत्त्व-ईश्वर्यै
४	श्रीचन्द्राय	१५	श्रीहिरण्यगर्भाय
५	श्रीआकाशतत्त्वस्वामिने	१६	श्रीपंचतन्मात्राय
६	श्रीवायूतत्त्वस्वामिने	१७	श्रीपंचभूताय
७	श्रीतेजस्तत्त्वस्वामिने	१८	श्रीविश्वाय
८	श्रीआपस्तत्त्वस्वामिने	१९	श्रीतैजसात्मिकाय
९	श्रीपृथ्वीतत्त्वस्वामिने	२०	श्रीप्रज्ञात्मिकाय
१०	श्रीआकाशतत्त्व-ईश्वर्यै	२१	श्रीतुरीयाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री हज़रत अली के ५ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	अमिर अल्-मुमिनीन	४	हैदर अल करार
२	अबू तुराब	५	सफदर
३	असद् उल्लाह		

साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 4

नाभि (मणिपूर) चक्र

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

नाभि चक्र के १० लक्ष्मी के मंत्र (होली पेटल्स)

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीआद्यलक्ष्म्यै .....आदि लक्ष्मी की शक्ति
२ श्रीविद्यालक्ष्म्यै .....ज्ञान की संपत्ति
३ श्रीसौभाग्यलक्ष्म्यै .....सौभाग्य देने वाली लक्ष्मी शक्ति
४ श्रीअमृतलक्ष्म्यै .....अमृत का स्रोत की लक्ष्मी शक्ति
५ श्रीगृहलक्ष्म्यै .....आदर्श पत्नी
६ श्रीराजलक्ष्म्यै .....राज्य की समृद्धि एवं कल्याण
७ श्रीसत्यलक्ष्म्यै .....सत्य की चेतना
८ श्रीभोग्यलक्ष्म्यै .....संपत्ति के उपभोग का आनन्द
९ श्रीयोगलक्ष्म्यै .....योगदात्री
१० श्रीमहालक्ष्म्यै .....उत्क्रांति शक्ति

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीलक्ष्मी के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीआद्यलक्ष्म्यै	२२	श्रीव्यापिन्यै
२	श्रीविद्यालक्ष्म्यै	२३	श्रीव्योमनिलयायै
३	श्री योगलक्ष्म्यै	२४	श्रीपरमानंदरूपिण्यै
४	श्रीगृहलक्ष्म्यै	२५	श्रीनित्यशुद्धायै
५	श्रीराजलक्ष्म्यै	२६	श्रीनित्यतृप्तायै
६	श्रीअमृतलक्ष्म्यै	२७	श्रीनिर्विकारायै
७	श्रीसत्यलक्ष्म्यै	२८	श्रीज्ञानशक्तये
८	श्रीभोग्यलक्ष्म्यै	२९	श्रीकर्तृशक्तये
९	श्रीसौभाग्यलक्ष्म्यै	३०	श्रीनिरानंदायै
१०	श्रीविजयलक्ष्म्यै	३१	श्रीविमलायै
११	श्रीगजलक्ष्म्यै	३२	श्रीअनंतायै
१२	श्रीधनलक्ष्म्यै	३३	श्रीवैष्णव्यै
१३	श्रीऐश्वर्यलक्ष्म्यै	३४	श्रीसनातन्यै
१४	श्रीसंतानलक्ष्म्यै	३५	श्रीनिरामयायै
१५	श्रीभाग्यलक्ष्म्यै	३६	श्रीविश्वानंदायै
१६	श्रीधान्यलक्ष्म्यै	३७	श्रीज्ञानज्ञेयायै
१७	श्रीवीरलक्ष्म्यै	३८	श्रीज्ञानगम्यायै
१८	श्री मोक्षलक्ष्मी	३९	श्रीनिर्मलायै
१९	श्रीमहालक्ष्म्यै	४०	श्रीस्वरूपायै
२०	श्रीसत्त्वायै	४१	श्रीनिष्कलंकायै
२१	श्रीशान्तये	४२	श्रीनिराधारायै

४३ श्रीनिराश्रयायै
४४ श्रीनिर्विकल्पायै
४५ श्रीपावनीपरायै
४६ श्रीअपरिमितायै
४७ श्रीभवभ्रांतिविनाशिन्यै
४८ श्रीमहाधमन्यै
४९ श्रीस्थितिवृद्धिर्लयागतये
५० श्रीईश्वर्यै
५१ श्रीअक्षयायै
५२ श्रीअप्रमेयायै
५३ श्रीसूक्ष्मापरायै
५४ श्रीनिर्वाणदायिन्यै
५५ श्रीशुद्धविद्यायै
५६ श्रीतुष्ट्यै
५७ श्रीमहाधीरायै
५८ श्रीअनुग्रहशक्तिधरायै
५९ श्रीजगज्ज्येष्ठायै
६० श्रीब्रह्माण्डवासिन्यै
६१ श्रीअनंतरूपायै
६२ श्रीअनंतसंभवायै
६३ श्रीअनंतस्थायै
६४ श्रीमहाशक्तये
६५ श्रीप्राणशक्तये
६६ श्रीप्राणधात्र्यै
६७ श्रीमहासमूहायै
६८ श्रीसर्वाभिलाषापूर्णेच्छायै
६९ श्रीशब्दपूर्वायै
७० श्रीव्यक्ताव्यक्तायै
७१ श्रीसंकल्पसिद्धायै
७२ श्रीतत्त्वगर्भायै
७३ श्रीचित्स्वरूपायै
७४ श्रीमहामायायै
७५ श्रीयोगमायायै
७६ श्रीमहायोगेश्वर्यै
७७ श्रीयोगसिद्धिदायिन्यै
७८ श्रीमहायोगेश्वरवृत्तायै
७९ श्रीयोगेश्वरप्रियायै
८० श्रीब्रह्मेन्द्ररुद्रनमितायै
८१ श्रीगौर्यै
८२ श्रीविश्वरूपायै
८३ श्रीविश्वमात्रे
८४ श्रीश्रीविद्यायै
८५ श्रीमहानारायण्यै
८६ श्रीविष्णुवल्लभायै
८७ श्रीयोगरतायै
८८ श्रीभक्तानां परिरक्षिण्यै
८९ श्रीपूर्णचंद्राभायै
९० भयनाशिन्यै

९१ दैत्यदानवमर्दिन्यै
९२ श्रीव्योमलक्ष्म्यै
९३ श्रीतेजोलक्ष्म्यै
९४ श्रीरसलक्ष्म्यै
९५ श्रीजगद्योनये
९६ श्रीगंधलक्ष्म्यै
९७ श्री अनाहतायै
९८ श्रीसुषुम्नायै
९९ श्रीकुण्डलिन्यै
१०० श्रीसर्वमंगलमांगल्यायै
१०१ श्रीसौम्यरूपायै
१०२ श्रीमहादीप्तायै
१०३ श्रीमूलप्रकृतये
१०४ श्रीसर्वस्वरूपिण्यै
१०५ श्रीमणिपुरचक्रनिवासिन्यै
१०६ श्रीशिवायै
१०७ श्रीयोगमातायै
१०८ श्रीनित्यतृप्तायै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

अष्टलक्ष्मी-स्तोत्रम्

सुमनसवंदितसुंदरि माधवि, चंद्रसहोदरि हेममये ।
मुनिगणमंडितमोक्षप्रदायिनि, मंजुलभाषिणि वेदनुते ।।
पंकजवासिनि देवसुपूजितसद्गुणवर्षिणि शांतियुते
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, आदिलक्ष्मि सदा पालय माम् ।।१।।

अयि कलिकल्मषनाशिनि कामिनि, वैदिकरूपिणि वेदमये ।
क्षीरसमुद्भवमंगलरूपिणि, मंत्रनिवासिनि मंत्रनुते ।।
मंगलदायिनि अंबुजवासिनि, देवगणाश्रितपादयुते ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, धान्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ।।२।।

जय वरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि, मंत्रस्वरूपिणि मंत्रमये ।
सुरगणपूजितशीघ्रफलप्रदज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते।।
भवभयहारिणि पापविमोचनि, साधुजनाश्रितपादयुते ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, धैर्यलक्ष्मि सदा पालय माम् ।।३।।

जय जय दुर्गतिनाशिनि कामिनि, सर्वफलप्रदशास्त्रमये
रथगजतुरंगपदातिसमावृतपरिजनमंडितलोकनुते ।।
हरिहरब्रह्मसुपूजितसेवितततापनिवारिणिपादयुते ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, गजलक्ष्मीरूपेण पालय माम् ।।४।।

अयि खगवाहिनि मोहिनि चक्रिणि, रागविवर्धिनि ज्ञानमये ।
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणी स्वरसप्तभूषितगाननुते ।।
सकलसुरासुरदेवमुनीश्वरमानववंदितपादयुते ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, संतानलक्ष्मि सदा पालय माम् ।।५।।

जय कमलासनि सद्गतिदायिनि, ज्ञानविकासिनि गानमये ।
अनुदिनमर्चितकुंकुमचंदनभूषितवासितवाद्यनुते ।।
कनकधरास्तुतिवैभववंदितशंकरदेशिकमान्यपदे ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि विजयलक्ष्मि सदा पालय माम् ।।६।।

प्रणतसुरेश्वरि भारति भार्गवि, शोकविनाशिनि रत्नमये ।
मणिमयभूषितकर्णविभूषणशांतिसमावृतहास्यमुखे ।।
नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि, कामित-फल-प्रद-हस्तयुते ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, विद्यालक्ष्मि सदा पालय माम् ।।७।।

धिमिधिमिधिंधिमिधिंधिमिधिंधिमिदुन्दुभिनादसुपूर्णमये ।
धुमधुमधुमधुमधुमधुमधुमशंखनिनादसुवाद्यनुते ।।
वेदपुराणेतिहाससुपूजितवैदिकमार्गप्रदर्शयुते ।
जय जय हे मधुसूदनकामिनि, धनलक्ष्मीरूपेण पालय माम् ।।८।।

श्रीनिर्मलादेवि सदा पालय माम्

महालक्ष्मी-अष्टकम् (स्तोत्रम्)

श्री गणेशाय नमः ।। इन्द्र उवाच ।।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंख-चक्र-गदा-हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।१।।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि ।
सर्वपाप-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।२।।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।३।।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मंत्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।४।।

आद्यंतरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।५।।

स्थूल-सूक्ष्म-महारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।६।।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।७।।

श्वेतांबरधरे देवि नानालंकारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ।।८।।

महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।९।।

एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।।१०।।

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मी भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।११।।

इतीन्द्रकृतः श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तवः संपूर्ण : ।।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीमहालक्ष्मी साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी
-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।२।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।३।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।।५।।

आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्चबाह्याअलक्ष्मीः ।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।८।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वह्वये श्रियम् ।।९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।१०।।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।११।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नीच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।१२।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१३।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१४।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।१५।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।।१६।।

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ।।१७।।

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ।।१८।।

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व। ।।१९।।

पुत्रपौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ।।२०।।

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमस्तु ते ।।२१।।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ।।२२।।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ।।२३।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।२४।।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ।।२५।।

महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।२६।।

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्चः श्रीर्देवीर्देवता मताः ।।२७।।

ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ।।२८।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ।।२९।।

ॐ श्रीविष्णवे नमः

श्रीविष्णु-स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।

श्रीविष्णु के १० अवतार

१	मत्स्य	६	परशुराम
२	कूर्म	७	राम
३	वराह	८	कृष्ण
४	वामन	९	ईसा (महाविष्णू)
५	नरसिंह	१०	कल्की

श्रीविष्णु के २४ नाम

(सुषम्ना नाड़ी के अंदर की नाड़ियों से संबंधित है)

ॐ त्वमेव साक्षात श्री.....नमो नमः

१	श्रीकेशवाय	१३	श्रीसंकर्षणाय
२	श्रीनारायणाय	१४	श्रीवासुदेवाय
३	श्रीमाधवाय	१५	श्रीप्रद्युम्नाय
४	श्रीगोविंदाय	१६	श्रीअनिरुद्धाय
५	श्रीविष्णवे	१७	श्रीपुरुषोत्तमाय
६	श्रीमधुसूदनाय	१८	श्रीअधोक्षजाय
७	श्रीत्रिविक्रमाय	१९	श्रीनरसिंहाय
८	श्रीवामनाय	२०	श्रीअच्युताय
९	श्रीश्रीधराय	२१	श्रीजनार्दनाय
१०	श्रीहृषीकेशाय	२२	श्रीउपेन्द्राय
११	श्रीपद्मनाभाय	२३	श्रीहरये
१२	श्रीदामोदराय	२४	श्रीश्रीकृष्णाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीविष्णु के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीकेशवाय	२२	श्रीजनार्दनाय
२	श्रीनारायणाय	२३	श्रीहरये
३	श्रीमाधवाय	२४	श्रीकृष्णाय
४	श्रीगोविंदाय	२५	श्रीविष्णवे
५	श्रीविष्णवे	२६	श्रीपेशलाय
६	श्रीमधुसूदनाय	२७	श्रीपुष्कराक्षाय
७	श्रीत्रिविक्रमाय	२८	श्रीहरये
८	श्रीवामनाय	२९	श्रीचक्रिणे
९	श्रीश्रीधराय	३०	श्रीनन्दकिने
१०	श्रीपद्मनाभाय	३१	श्रीशार्ङ्गधन्विने
११	श्रीहृषीकेशाय	३२	श्रीशंखधृताय
१२	श्रीदामोदराय	३३	श्रीगदाधराय
१३	श्रीसंकर्षणाय	३४	श्रीवनमालिने
१४	श्रीवासुदेवाय	३५	श्रीकुवलयेशाय
१५	श्री प्रदयुम्नाय	३६	श्रीगरुडध्वजाय
१६	श्रीअनिरुद्धाय	३७	श्रीलक्ष्मीवते
१७	श्री पुरुषोत्तमाय	३८	श्रीभगवते
१८	श्रीअधोक्षजाय	३९	श्रीवैकुण्ठपतये
१९	श्रीनरसिंहाय	४०	श्रीधर्मरूपाय
२०	श्रीउपेन्द्राय	४१	श्रीधर्माध्यक्षाय
२१	श्रीअच्युताय	४२	श्रीनियंत्रे

४३ श्रीनैकजाय
४४ श्रीस्वस्तिने
४५ श्रीसाक्षिणे
४६ श्रीसत्याय
४७ श्रीधरणीधराय
४८ श्रीव्यवस्थानाय
४९ श्रीसर्वदर्शिने
५० श्रीसर्वज्ञाय
५१ श्रीगहनाय
५२ श्रीनहुषाय
५३ श्रीमहामायाय
५४ श्रीअधोक्षजाय
५५ श्रीयज्ञपतये
५६ श्रीवेगवते
५७ श्रीसहिष्णवे
५८ श्रीरक्षिणे
५९ श्रीधनेश्वराय
६० श्रीहिरण्यनाभाय
६१ श्रीशरीरभृते
६२ श्रीअन्नाय
६३ श्रीमुकुन्दाय
६४ श्रीअग्रण्ये
६५ श्रीअमोघाय
६६ श्रीवरदाय
६७ श्रीशुभेक्षणाय
६८ श्रीसतांगतये
६९ श्रीसुखदाय
७० श्रीवत्सलाय
७१ श्रीवीरहाय
७२ श्रीप्रभवे
७३ श्रीअमरप्रभवे
७४ श्रीसुरेशाय
७५ श्रीपुरन्दराय
७६ श्रीसमितिंजयाय
७७ श्रीअमितविक्रमाय
७८ श्रीशत्रुघ्नाय
७९ श्रीभीमाय
८० श्रीशूरजनेश्वराय
८१ श्रीसम्प्रमर्दनाय
८२ श्रीभावनाय
८३ श्रीक्षेत्रज्ञाय
८४ श्रीसर्वयोगविनि:सृताय
८५ श्रीयोगेश्वराय
८६ श्रीचलाय
८७ श्रीवायुवाहनाय
८८ श्रीजीवनाय
८९ श्रीसम्भवाय
९० श्रीसंवत्सराय

श्रीअन्नपूर्णेश्वरीस्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौंदर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपापनिकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षां देहि कृपावलंबनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।१।।

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमांबराडंबरी
मुक्ताहारविडंबमानविलसद्वक्षोजकुंभांतरी ।
काश्मीरागरुवासितांगरुचिरा काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।२।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैंकनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।३।।

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी ह्युमा शांकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योंकारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।४।।

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्मांडभांडोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।५।।

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनिकरी शंभुप्रिया शांकरी
काश्मीरत्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी ।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी

९१ श्रीवर्धनाय
९२ श्रीएकस्मै
९३ श्रीनैकाय
९४ श्रीवसवे
९५ श्रीईशानाय
९६ श्रीलोकाध्यक्षाय
९७ श्रीत्रिलोकेशाय
९८ श्रीजगत्स्वामिने
९९ श्रीयुगावर्ताय
१०० श्रीविस्ताराय
१०१ श्रीविश्वरूपाय
१०२ श्रीअनंतरूपाय
१०३ श्रीअविशिष्टाय
१०४ श्रीमहद्ध्यै
१०५ श्रीपर्यवस्थिताय
१०६ श्रीस्थविष्ठाय
१०७ श्रीमहाविष्णवे
१०८ श्रीकल्किने

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।६।।

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माता कृपासागरी
वेणीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।७।।

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुंदरी ।
वामा स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभहरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।८।।

चंद्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चंद्रार्काग्निसमानकुंतलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।९।।

क्षत्रत्राणकरी महाभयहरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ।।१०।।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्धयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।११।।

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ।।१२।।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री अन्नपूर्णेश्वरी साक्षात् श्रीआदिशक्ति-
-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीफातिमा अल्-ज़राह के ६२ नाम

१ अबिदा
२ अदिला
३ अलिय
४ अलिमा
५ अमिला
६ अफझलाल-निसा
७ अझीझा
८ बसीता
९ बतीना
१० बतुल
११ दनीया
१२ दुर्रा अन्-नुर
१३ फसिहा
१४ हबिबा
१५ हकीमा
१६ हलीमा
१७ हझिरा
१८ हिर्रा
१९ हिस्सान
२० इफ्तिखार-ए-हव्वा
२१ ईहलेया
२२ उमम-उल-ऐमा
२३ उम-उल-अबिहा
२४ उम-उल-हसन
२५ उम-उल-हुसैन
२६ उम-उल-किताब
२७ जलिला
२८ जमिला
२९ करीमा
३० खतुन-ए-जुनत
३१ मलिक-ए-तथिर
३२ मर्धीआह
३३ मरियम-ए-कुब्रा
३४ मसुमा
३५ मस्तोरा
३६ मुबारिका
३७ नजिबा
३८ नसिहा
३९ नुरिया
४० काईमा
४१ राधिआह
४२ रफिआ
४३ सादिका
४४ साहिबा

४५ सलीहा
४६ सलीमा
४७ सय्यैदा-तुन-निस-
इल-अलामिन
४८ शफिआ
४९ शफेका
५० शफिआ
५१ शाजरा-ए-तय्यीबा
५२ शहजादी-ए-कौनैन
५३ सिद्दीका
५४ तहीराह
५५ तक्कया
५६ तेहामा
५७ वफीया
५८ वलीया
५९ वली-ए-खुदा
६० झहरा
६१ झारा
६२ झाकीयाह

विषय 5

भवसागर (वॉइड)

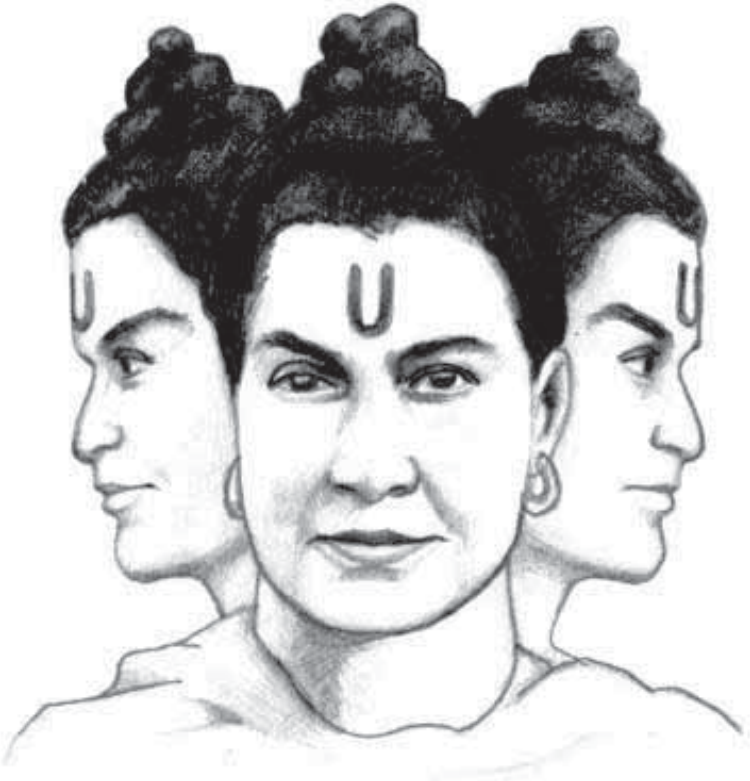

गुरु परमात्मा परेशु

आदिगुरुस्तुति (गुरुमंत्र सहित)

(गुरुगीता से)

नमामि सद्गुरुं शांतं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं मुक्तिकामार्थसिद्धये ।।१।।

गुरूर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।२।।

अज्ञानतिमिरांधस्य, ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।३।।

त्वं पिता त्वं च मे माता, त्वं बन्धुस्त्वं च देवता ।
संसारप्रतिबोधार्थं, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।४।।

यस्य कारणरूपस्य, कार्यरूपेण भाति यत् ।
कार्यकारणरूपाय, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।५।।

श्रीमत्परब्रह्म गुरुं (श्रीमाताजी) स्मरामि,
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं (श्रीमाताजी) वदामि ।
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं (श्रीमाताजी) नमामि,
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं (श्रीमाताजी) भजामि ।।६।।

श्रीआदिगुरु के १० अवतार (समयानुसार सूचि)

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	राजा जनक ..... भारत	५००० बी.सी.
२	अब्राहम.....मेसोपोटामीया	२००० बी.सी.
३	मोज़ेस .....इजिप्ट	१२०० बी.सी.
४	जराथ्रुष्ट.....पर्शिया	१००० बी.सी.
५	कन्फ्युशियस .....चीन	५५१-४७९ बी.सी.
६	लाओत्से .....चीन	छठी सदी बी.सी.
७	सॉक्रेटिज़.....ग्रीस	४६९-३९९ बी.सी.
८	मोहम्मद पैगंबर .....मक्का	५७०-६३२ ए.डी.
९	गुरु नानक .....भारत	१४६९-१५३९ ए.डी.
१०	श्रीसाईबाबा .....भारत (शिर्डी)	१८३८-१९१८ ए.डी.

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीआदिगुरु दत्तात्रेय के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री........नमो नमः

१	श्रीसत्त्वाय
२	श्रीसत्त्वभृतांगतये
३	श्रीकमलालयाय
४	श्रीहिरण्यगर्भाय
५	श्रीबोधसमाश्रयाय
६	श्रीनाभाविने
७	श्रीदेहशून्याय
८	श्रीपरमार्थदृशे
९	श्रीयंत्रविदे
१०	श्रीधराधराय
११	श्रीसनातनाय
१२	श्रीचित्कीर्तिभूषणाय
१३	श्रीचन्द्रसूर्याग्निलोचनाय
१४	श्रीअंतःपूर्णाय
१५	श्रीबहिः पूर्णाय
१६	श्रीपूर्णात्मने
१७	श्रीखगर्भाय
१८	श्रीअमरार्चिताय
१९	श्रीगंभीराय
२०	श्रीदयावते
२१	श्रीसत्यविज्ञान भास्कराय
२२	श्रीसदाशिवाय
२३	श्रीश्रेयस्कराय
२४	श्रीअज्ञानखण्डनाय
२५	श्रीधृताय
२६	श्रीदम्भदर्पमदापहाय
२७	श्रीगुणान्तकाय
२८	श्री ज्वरनाशकाय
२९	श्रीभेदवैतंडखंडकाय
३०	श्रीनिर्वासनाय
३१	श्रीनिरीहाय
३२	श्रीनिरहंकाराय
३३	श्रीशोकदुःखहराय
३४	श्रीनिराशीर्निरूपाधिकाय
३५	श्रीअनंतविक्रमाय
३६	श्रीभेदांतकाय
३७	श्रीमुनये
३८	श्रीमहायोगिने
३९	श्रीयोगाभ्यासप्रकाशनाय
४०	श्रीयोगदर्पनाशकाय
४१	श्रीनित्यमुक्ताय
४२	श्रीयोगाय
४३	श्रीस्थानदाय
४४	श्रीमहानुभवभाविताय
४५	श्रीकामजिताय
४६	श्रीशुचिर्भूताय
४७	श्रीत्यागकारणत्यागात्मने
४८	श्रीमनोबुद्धिविहितात्मने
४९	श्रीमानात्मने
५०	श्रीचेतनाविगतायने

५१ श्रीअक्षरमुक्ताय
५२ श्रीपराक्रमिणे
५३ श्रीत्यागार्थसंपन्नाय
५४ श्रीत्यागविग्रहाय
५५ श्रीत्यागकारणाय
५६ श्रीप्रत्याहारनियोजकाय
५७ श्रीप्रत्यक्षावर्ताय
५८ श्रीदेवानांपरमागतये
५९ श्रीमहादेवाय
६० श्रीभुवनांतकाय
६१ श्रीपापनाशनाय
६२ श्रीअवधूताय
६३ श्रीमदापहाय
६४ श्रीमायामुक्ताय
६५ श्रीचिदुत्तमाय
६६ श्रीक्षेत्रज्ञाय
६७ श्रीक्षेत्रगाय
६८ श्रीक्षेत्राय
६९ श्रीसंसार-तमो-नाशकाय
७० श्रीशंकामुक्तमतये
७१ श्रीपालाय
७२ श्रीनित्यशुद्धाय
७३ श्रीबालाय
७४ श्रीब्रह्मचारिणे
७५ श्री हृदयस्थाय
७६ श्री प्रवर्तनाय
७७ श्रीसंकल्पदु:खदलनाय
७८ श्रीजीवसंजीवनाय
७९ श्रीलयातीताय
८० श्रीलयस्यांताय
८१ श्रीप्रमुखाय
८२ श्रीनंदिने
८३ श्रीनिराभासाय
८४ श्रीनिरंजनाय
८५ श्रीश्रद्धार्थिने
८६ श्रीगोसाक्षिणे
८७ श्रीआदिनाथाय
८८ श्रीविशुद्धोत्तमगौरवाय
८९ श्रीनिराहारिणे
९० श्रीनित्यबोधाय
९१ श्रीपुराणप्रभवे
९२ श्रीसत्त्वभृते
९३ श्रीभूतशंकराय
९४ श्रीहंससाक्षिणे
९५ श्रीसत्त्वविदे
९६ श्रीविद्यावते
९७ श्रीआत्मानुभावसंपन्नाय
९८ श्रीविशालाक्षाय
९९ श्रीधर्मवर्धनाय
१०० श्रीभोक्त्रे
१०१ श्रीभोग्याय
१०२ श्रीभोगार्थसंपन्नाय
१०३ श्रीभोगज्ञानप्रकाशनाय
१०४ श्रीसहजाय
१०५ श्रीदीप्ताय
१०६ श्रीनिर्वाणाय
१०७ श्रीतत्त्वात्मज्ञानसागराय
१०८ श्रीपरमानंदसागराय

श्रीसद्गुरु के ११३ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीसत्त्वात्मने	२२	श्रीमहेश्वराय
२	श्रीसत्त्वसागराय	२३	श्रीसर्वभूतनिवासात्मने
३	श्रीसत्त्वविदे	२४	श्रीभूतसन्तापनाशकाय
४	श्रीसत्त्वसाक्षिणे	२५	श्रीसर्वात्मने
५	श्रीसत्त्वसाध्याय	२६	श्रीसर्वप्रत्ययाय
६	श्रीअमराधिपाय	२७	श्रीसर्वस्मै
७	श्रीभूतकृते	२८	श्रीसर्वज्ञाय
८	श्रीभूतप्रेताय	२९	श्रीसर्वनिर्णयाय
९	श्रीभूतात्मने	३०	श्रीसर्वसाक्षिणे
१०	श्रीभूतसम्भवाय	३१	श्रीबृहद्भानवे
११	श्रीभूतभवाय	३२	श्रीसर्वविदे
१२	श्रीभवाय	३३	श्रीसर्वमंगलाय
१३	श्रीभूतविद्यावते	३४	श्रीशान्ताय
१४	श्रीभूतकारणाय	३५	श्रीसत्याय
१५	श्रीभूतसाक्षिणे	३६	श्रीसममायिने
१६	श्रीप्रभूताय	३७	श्रीपूर्णाय
१७	श्रीभूतानां परमागतये	३८	श्रीएकाकिने
१८	श्रीभूतसंघविधात्रे	३९	श्रीकमलापतये
१९	श्रीभूतशंकराय	४०	श्रीरामाय
२०	श्रीमहानाथाय	४१	श्रीरामप्रियाय
२१	श्रीआदिनाथाय	४२	श्रीविरामाय

४३ श्रीरामकरणाय
४४ श्रीशुध्दात्मने
४५ श्रीअनंताय
४६ श्रीपरमार्थभृते
४७ श्रीहंससाक्षिणे
४८ श्रीविभवे
४९ श्रीप्रभवे
५० श्रीप्रलयाय
५१ श्रीसिध्दात्मने
५२ श्रीपरमात्मने
५३ श्रीसिध्दानां परमागतये
५४ श्रीसिद्धिसिद्धाय
५५ श्रीसहजाय
५६ श्रीविज्वराय
५७ श्रीमहाबाहवे
५८ श्रीबहुलानन्दवरदाय
५९ श्रीअव्यक्तपुरुषाय
६० श्रीप्राज्ञाय
६१ श्रीपरिज्ञाय
६२ श्रीपरमात्मादृश्याय
६३ श्रीपंडिताय
६४ श्रीबुद्धाय
६५ श्रीविश्वात्मने
६६ श्रीप्रणवाय
६७ श्रीप्रणवातीताय
६८ श्रीशंकरात्मने
६९ श्रीपरामायिने
७० श्रीदेवानांपरमागतये
७१ श्रीअचिंत्याय
७२ श्रीचैतन्याय
७३ श्रीचेतनाचित्तविक्रमाय
७४ श्रीपरब्रह्मणे
७५ श्रीपरमज्योतिषे
७६ श्रीपरमधाम्ने
७७ श्रीपरमतापसाय
७८ श्रीपरमसूत्राय
७९ श्रीपरमतन्त्राय
८० श्रीक्षेत्रज्ञाय
८१ श्रीलोकपालाय
८२ श्रीगुणात्मने
८३ श्रीअनन्त-गुण-सम्पन्नाय
८४ श्रीयज्ञाय
८५ श्रीहिरण्यगर्भाय
८६ श्रीगर्भाय
८७ श्रीसुहृदे
८८ श्रीपरमानन्दाय
८९ श्रीसत्यानन्दाय
९० श्रीचिदानन्दाय

९१ श्रीसूर्य-मण्डल-मध्यगाय
९२ श्रीजनकाय
९३ श्रीमन्त्रवीर्याय
९४ श्रीमन्त्रबीजाय
९५ श्रीशास्त्रवीर्याय
९६ श्रीकेवलैकाय
९७ श्रीनिष्कलाय
९८ श्रीनिरंतराय
९९ श्रीसुरेश्वराय
१०० श्रीयन्त्रकृते
१०१ श्रीयन्त्रिणे
१०२ श्रीयन्त्रविद्याय
१०३ श्रीयन्त्ररुद्धापराजिताय
१०४ श्रीयन्त्रमात्रे
१०५ श्रीयन्त्रकाराय
१०६ श्रीब्रह्मयोनये
१०७ श्रीविश्वयोनये
१०८ श्रीगुरवे
१०९ श्रीब्रह्मणे
११० श्रीत्रिविक्रमाय
१११ श्रीसहस्रारम्भयोनिभवाय
११२ श्रीरुद्राय
११३ श्रीहृदयस्थाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

अनाहत (बायां हृदय) चक्र

सत्चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्

श्रीशिवस्तुति

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसम् ।
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परमशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।।
पद्मासीनं समंतात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् ।
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।१।।

शिवं शिवकरं शान्तं शिवात्मानं शिवोत्तमम् ।
शिवमार्गप्रणेतारं प्रणातोस्मि सदाशिवम् ।।२।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेंद्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।।३।।

*करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।४।।

*अपने गलती की क्षमा माँगकर श्रद्धापूर्वक इसे कहने पर, यह आत्मसाक्षात्कारियों (जिनका संबंध शिव से है) का हृदयबाधा नाशक मंत्र है।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी,
दिल्ली, ३१ जनवरी ७८

श्रीशिवजी के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीशिवाय	२२	श्रीशर्वरीपतये
२	श्रीशंकराय	२३	श्रीवरदाय
३	श्रीस्वयंभुवे	२४	श्रीवायुवाहनाय
४	श्रीपशुपतये	२५	श्रीकमंडलुधराय
५	श्रीक्षमाक्षेत्राय	२६	श्रीनंदीश्वराय
६	श्रीप्रियभक्ताय	२७	श्रीप्रसन्नाय
७	श्रीकामदेवाय	२८	श्रीसुखानिलाय
८	श्रीसाधुसाध्याय	२९	श्रीनागभूषणाय
९	श्रीहृत्पुंडरीकासीनाय	३०	श्रीकैलासशिखरवासिने
१०	श्रीजगद्हितैषिणे	३१	श्रीत्रिलोचनाय
११	श्रीव्याघ्रकोमलाय	३२	श्रीपिनाकपाणिने
१२	श्रीवत्सलाय	३३	श्रीश्रमणाय
१३	श्रीदेवासुरगुरवे	३४	श्रीअचलेश्वराय
१४	श्रीशंभवे	३५	श्रीव्याघ्रचर्मांबराय
१५	श्रीलोकोत्तरसुखालयाय	३६	श्रीउन्मत्तवेषाय
१६	श्रीसर्वसहाय	३७	श्रीप्रेतचारिणे
१७	श्रीस्वधृताय	३८	श्रीहराय
१८	श्रीएकनायकाय	३९	श्रीरुद्राय
१९	श्रीश्रीवत्सलाय	४०	श्रीभीमपराक्रमाय
२०	श्रीशुभदाय	४१	श्रीनटेश्वराय
२१	श्रीसर्वसत्त्वावलंबनाय	४२	श्रीनटराजाय

४३ श्रीईश्वराय
४४ श्रीपरमशिवाय
४५ श्रीपरमात्मने
४६ श्रीपरमेश्वराय
४७ श्रीवीरेश्वराय
४८ श्रीसर्वेश्वराय
४९ श्रीकामेश्वराय
५० श्रीविश्वसाक्षिणे
५१ श्रीनित्यनृत्याय
५२ श्रीसर्ववासाय
५३ श्रीमहायोगिने
५४ श्रीसद्योगिने
५५ श्रीसदाशिवाय
५६ श्रीआत्मने
५७ श्रीआनंदाय
५८ श्रीचंद्रमौलये
५९ श्रीमहेश्वराय
६० श्रीसुधापतये
६१ श्रीअमृतपाय
६२ श्रीअमृतमयाय
६३ श्रीप्रणतात्मकाय
६४ श्रीपुरुषाय
६५ श्रीप्रच्छन्नाय
६६ श्रीसूक्ष्माय
६७ श्रीकर्णिकारप्रियाय
६८ श्रीकवये
६९ श्रीअमोघदण्डाय
७० श्रीनीलकंठाय
७१ श्रीजटिने
७२ श्रीपुष्पलोचनाय
७३ श्रीध्यानाधाराय
७४ श्रीब्रह्मांडहृताय
७५ श्रीकामशासनाय
७६ श्रीजितकामाय
७७ श्री जितेंद्रियाय
७८ श्रीअतींद्रियाय
७९ श्रीनक्षत्रमालिने
८० श्रीअनाद्यंताय
८१ श्रीआत्मयोनये
८२ श्रीनभयोनये
८३ श्रीकरुणासागराय
८४ श्रीशूलिने
८५ श्रीमहेश्वासाय
८६ श्रीनिष्कलंकाय
८७ श्रीनित्यसुंदराय
८८ श्रीअर्धनारीश्वराय
८९ श्रीउमापतये
९० श्रीरसदाय

९१ श्रीउग्राय
९२ श्रीमहाकालाय
९३ श्रीकालकालाय
९४ श्रीवैयाघ्रधुर्याय
९५ श्रीशत्रुप्रमथिने
९६ श्रीसर्वाचार्याय
९७ श्रीसमाय
९८ श्रीआत्मप्रसन्नाय
९९ श्रीनरनारायणप्रियाय
१०० श्रीरसज्ञाय
१०१ श्रीभक्तिकायाय
१०२ श्रीलोकवीराग्रण्ये
१०३ श्रीचिरंतनाय
१०४ श्रीविश्वम्भरेश्वराय
१०५ श्रीनवात्मने
१०६ श्रीनवयेरूसलमेश्वराय
१०७ श्रीआदिनिर्मलात्मने
१०८ श्रीसहजयोगि-प्रियाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

तद्निष्कला स्तोत्र
(श्रीआदिशंकराचार्यद्वारा आत्माष्टकम्)

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।१।।

न च प्राणसंज्ञो न वै पंचवायुर्
न वा सप्तधातुर्न वा पंचकोषः।
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।२।।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।३।।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।४।।

न मे मृत्युशंका न मे जातिभेदः ।
पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।५।।

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।६।।

आत्मसाक्षात्कारी इसे याद कर लें कि आप परम आनन्द निर्मल चेतना है। इसे नित्य कहें।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी, ग्मुन्डेन, ऑस्ट्रिया ६ जुलै १९८६

गंगा नदी के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीगंगायै
२ श्रीविष्णु-पादाब्ज-संभूतायै
३ श्रीहरवल्लभायै
४ श्रीहिमाचलेन्द्रतनयायै
५ श्रीगिरिमंडलगामिन्यै
६ श्रीतारकारातिजनन्यै
७ श्रीसगरात्मजतारिकायै
८ श्रीसरस्वतीसंयुक्तायै
९ श्रीसुघोषायै
१० श्रीसिंधुगामिन्यै
११ श्रीभागीरथ्यै
१२ श्रीभाग्यवत्यै
१३ श्रीभगीरथरथानुगायै
१४ श्रीत्रिविक्रमपादोद्धूतायै
१५ श्रीत्रिलोकपथगामिन्यै
१६ श्रीक्षीरशुभ्रायै
१७ श्रीबहुक्षीरायै
१८ श्रीक्षीरवृक्षसंयुक्तायै
१९ श्रीत्रिलोचनजटावासिन्यै
२० श्रीऋणत्रयविमोचिन्यै
२१ श्रीत्रिपुरारिशिरश्चूडायै
२२ श्रीजान्हव्यै
२३ श्रीनतभीतिहृतायै
२४ श्रीअव्ययायै
२५ श्रीनयनानंददायिन्यै
२६ श्रीनगपुत्रिकायै
२७ श्रीनिरंजनायै
२८ श्रीनित्यशुद्धायै
२९ श्रीनीर-जाल-परिष्कृतायै
३० श्रीसावित्र्यै
३१ श्रीसलिलवासायै
३२ श्रीसागरांबुसमेधिन्यै
३३ श्रीरम्यायै
३४ श्रीबिंदुसरसायै
३५ श्रीअव्यक्तायै
३६ श्रीवृंदारकसमाश्रितायै
३७ श्रीउमासपत्न्यै
३८ श्रीशुभ्रांग्यै
३९ श्रीश्रीमत्यै
४० श्रीधवलांबरायै
४१ श्रीआखंडलवनवासायै
४२ श्रीखंडेन्दुकृतशेखरायै

४३ श्रीअमृताकरसलिलायै
४४ श्रीलीलालंघितपर्वतायै
४५ श्रीविरिंचिकलशवासायै
४६ श्रीत्रिवेण्यै
४७ श्रीत्रिगुणात्मिकायै
४८ श्रीसंगताघौघसमेतायै
४९ श्रीशंखदुंदुभिनि:स्वनायै
५० श्रीभीतिहृतायै
५१ श्रीभोग्यजनन्यै
५२ श्रीभिन्नब्रह्मांडदर्पिण्यै
५३ श्रीनंदिन्यै
५४ श्रीशीघ्रगायै
५५ श्रीसिद्धायै
५६ श्रीशरण्यायै
५७ श्रीशशिशेखरायै
५८ श्रीशांकर्यै
५९ श्रीशफरीपूर्णायै
६० श्रीभर्गमूर्धकृतालयायै
६१ श्रीभवप्रियायै
६२ श्रीसत्यसंधप्रियायै
६३ श्रीहंसस्वरूपिण्यै
६४ श्रीभगीरथसुतायै
६५ श्रीअनंतायै
६६ श्रीशरच्चंद्रनिभाननायै
६७ श्रीओंकाररूपिण्यै
६८ श्रीअतुलायै
६९ श्रीक्रीडाकल्लोलकारिण्यै
७० श्रीस्वर्गसोपानसरण्यै
७१ श्रीअंभ: प्रदायै
७२ श्रीदु:ख हंत्र्यै
७३ श्रीशांतिसंतानकारिण्यै
७४ श्रीदारिद्र्यहंत्र्यै
७५ श्रीशिवदायै
७६ श्रीसंसारविषनाशिन्यै
७७ श्रीप्रयागनिलयायै
७८ श्रीसीतायै
७९ श्रीतापत्रयविमोचिन्यै
८० श्रीशरणागतदीनार्तपरित्राणायै
८१ श्रीसुमुक्तिदायै
८२ श्रीसिद्धियोगनिसेवितायै
८३ श्रीपापहंत्र्यै
८४ श्रीपावनांग्यै
८५ श्रीपरब्रह्मस्वरूपिण्यै
८६ श्रीपूर्णायै
८७ श्रीपुरातनायै
८८ श्रीपुण्यायै
८९ श्रीपुण्यदायै
९० श्रीपुण्यवाहिन्यै

९१ श्रीपुलोमजार्चितायै
९२ श्रीपूतायै
९३ श्रीपूतत्रिभुवनायै
९४ श्रीजपायै
९५ श्रीजंगमायै
९६ श्रीजंगमधरायै
९७ श्रीजलरूपायै
९८ श्रीजगद्वंदितायै
९९ श्रीजन्हुपुत्र्यै
१०० श्रीजगन्मात्रे
१०१ श्रीसिद्धायै
१०२ श्रीभोगवत्यै
१०३ श्रीउमाकरकमलसंजातायै
१०४ श्रीअज्ञानतिमिरभानवे
१०५ श्रीअजरायै
१०६ श्रीआद्यायै
१०७ श्रीधेनवे
१०८ श्रीनिर्मलायै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 7

अनाहत (मध्य हृदय) चक्र

जय जगदम्बे माँ

श्रीदुर्गा के ९ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीशैलपुत्र्यै
२ श्रीब्रह्मचारिण्यै
३ श्रीचन्द्रघण्टायै
४ श्रीकूष्माण्डायै
५ श्रीस्कंदमात्रे
६ श्रीकात्यायन्यै
७ श्रीकालरात्र्यै
८ श्रीमहागौर्यै
९ श्रीसिद्धिदात्र्यै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री दुर्गामाता के ८४ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री ..... नमो नमः

१ श्रीकामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभंडासुर-शून्यकायै
२ मधुकैटभहंत्र्यै
३ महिषासुरघातिन्यै
४ रक्तबीजविनाशिन्यै
५ नरकांतकायै
६ रावणमर्दिन्यै
७ राक्षसघ्न्यै
८ श्रीचंडिकायै
९ श्रीउग्रचंडेश्वर्यै
१० श्रीक्रोधिन्यै
११ श्रीउग्रप्रभायै
१२ श्रीचामुंडायै
१३ श्रीखड्गपालिन्यै
१४ श्रीभास्वरासुर्यै
१५ श्रीशत्रुमर्दिन्यै
१६ श्रीरणपंडितायै
१७ श्रीरक्तदंतिकायै
१८ श्रीरक्तप्रियायै
१९ श्रीकुरुकुलविरोधिन्यै
२० दैत्येन्द्रमर्दिन्यै
२१ निशुम्भशुम्भसंहंत्र्यै
२२ श्रीचंड्यै
२३ श्रीमहाकाल्यै
२४ श्रीपापनाशिन्यै
२५ श्रीश्मशानकालिकायै
२६ श्रीकुलिशांग्यै
२७ श्रीदीप्तायै
२८ श्रीघोरदंष्ट्रायै
२९ श्रीमहादंष्ट्रायै
३० श्रीविजयायै
३१ श्रीतारायै
३२ श्रीसूर्यात्मिकायै
३३ श्रीरुद्राण्यै
३४ श्रीरौद्रयै
३५ श्रीभयापहायै
३६ श्रीरथिन्यै
३७ श्रीसमरप्रीतायै
३८ श्रीवेगिन्यै
३९ तारकासुरसंहारिण्यै
४० श्रीवज्रिण्यै
४१ श्रीअतिरमायै

४२ श्रीशंखिन्यै
४३ श्रीचक्रिण्यै
४४ श्रीगदिन्यै
४५ श्रीपद्मिन्यै
४६ श्रीशूलिन्यै
४७ श्रीपरिघास्त्रायै
४८ श्रीपाशिन्यै
४९ श्रीपिनाकधारिण्यै
५० श्रीरक्तपायै
५१ असुरान्तकायै
५२ श्रीजयदायै
५३ श्रीभीषणाननायै
५४ श्रीज्वालिन्यै
५५ श्रीदुर्ध्येयायै
५६ श्रीभेरूण्डायै
५७ श्रीबटुभैरव्यै
५८ श्रीबालभैरव्यै
५९ श्रीमहाभैरव्यै
६० श्रीवटुकभैरव्यै
६१ श्रीसिद्धभैरव्यै
६२ श्रीकंकालभैरव्यै
६३ श्रीकालभैरव्यै
६४ श्रीकालाग्निभैरव्यै
६५ श्रीयोगिनीभैरव्यै
६६ श्रीशक्तिभैरव्यै
६७ श्रीआनंदभैरव्यै
६८ श्रीमार्तंडभैरव्यै
६९ श्रीगौरभैरव्यै
७० श्रीश्मशानभैरव्यै
७१ श्रीपुरभैरव्यै
७२ श्रीतरुणभैरव्यै
७३ श्रीपरमानंदभैरव्यै
७४ श्रीसुरानन्दभैरव्यै
७५ श्रीज्ञानानन्दभैरव्यै
७६ श्रीउत्तमानंदभैरव्यै
७७ श्रीअमृतानन्दभैरव्यै
७८ श्रीचक्रेश्वर्यै
७९ श्रीराजचक्रेश्वर्यै
८० श्रीवीरायै
८१ श्रीसाधकानाम् सुखकारिण्यै
८२ श्रीसाधकारिविनाशिन्यै
८३ श्रीशुक्रनिन्दकनाशिन्यै
८४ श्रीसाधकव्याधिविनाशिन्यै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीदुर्गा माता के १०८ नाम

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती।।

१ श्रीसत्यै
२ श्रीसाध्व्यै
३ श्रीभावप्रीतायै
४ श्रीभवान्यै
५ श्रीभवमोचन्यै
६ श्रीआर्यायै
७ श्रीदुर्गायै
८ श्रीजयायै
९ श्रीआद्यायै
१० श्रीत्रिनेत्र्यै
११ श्रीशूलधारिण्यै
१२ श्रीपिनाकधारिण्यै
१३ श्रीचित्रायै
१४ श्रीचण्ड-घण्टायै
१५ श्रीमहातपायै
१६ श्रीमनसे
१७ श्रीबुद्ध्यै
१८ श्रीअहंकारायै
१९ श्रीचित्त-रूपायै
२० श्रीचितायै
२१ श्रीचित्यै
२२ श्रीसर्वमन्त्रमय्यै
२३ श्रीत्र्यंबकायै
२४ श्रीसत्यानंदस्वरूपिण्यै
२५ श्रीअनन्तायै
२६ श्रीभाविन्यै
२७ श्रीभाव्यायै
२८ श्रीभव्याभव्यायै
२९ श्रीसदागत्यै
३० श्रीशांभव्यै
३१ श्रीदेवमातायै
३२ श्रीचिंतायै
३३ श्रीरत्नप्रियायै
३४ श्रीसदायै
३५ श्रीसर्वविद्यायै
३६ श्रीदक्षकन्यायै
३७ श्रीदक्षयज्ञ-विनाशिन्यै
३८ श्रीअपर्णायै
३९ श्रीअनेकवर्णायै
४० श्रीपाटलायै
४१ श्रीपाटलावाह्यै
४२ श्रीपट्टाम्बर-परिधानायै

४३ श्रीकमलांघ्रि-रंजिन्यै
४४ श्रीअमेय-विक्रमायै
४५ श्रीक्रूरायै
४६ श्रीसुन्दर्यै
४७ श्रीसुरसुन्दर्यै
४८ श्रीवन-दुर्गायै
४९ श्रीमातंग्यै
५० श्रीमतंग-मुनिपूजितायै
५१ श्रीब्राह्म्यै
५२ श्रीमाहेश्वर्यै
५३ श्रीऐन्द्र्यै
५४ श्रीकौमार्यै
५५ श्रीवैष्णव्यै
५६ श्रीचामुंडायै
५७ श्रीवाराह्यै
५८ श्रीलक्ष्म्यै
५९ श्रीपुरुषाकृत्यै
६० श्रीविमलायै
६१ श्रीउत्कर्षिण्यै
६२ श्रीज्ञानायै
६३ श्रीक्रियायै
६४ श्रीनित्यायै
६५ श्रीबुद्धिदायै
६६ श्रीबहुलायै
६७ श्रीबहुलप्रेमायै
६८ श्रीसर्ववाहन-वाहनायै
६९ निशुम्भ शुम्भ-हंत्र्यै
७० महिषासुरमर्दिन्यै
७१ मधुकैटभहंत्र्यै
७२ चण्ड-मुण्डविनाशिन्यै
७३ सर्वासुरविनाशिन्यै
७४ सर्व-दानवघातिन्यै
७५ श्रीसर्वशास्त्रमय्यै
७६ श्रीसत्यायै
७७ श्रीसर्वास्त्रधारिण्यै
७८ श्रीअनेकशास्त्रहस्तायै
७९ श्रीअनेकास्त्रधारिण्यै
८० श्रीकुमार्यै
८१ श्रीएककन्यायै
८२ श्रीकिशोर्यै
८३ श्रीयुवत्यै
८४ श्रीयतये
८५ श्रीअप्रौढायै
८६ श्रीप्रौढायै
८७ श्रीवृद्धमातायै
८८ श्रीबलप्रदायै
८९ श्रीमहोदर्यै
९० श्रीमुक्तकेश्यै

९१ श्रीघोररूपायै
९२ श्रीमहाबलायै
९३ श्रीअग्निज्वालायै
९४ श्रीरौद्रमुख्यै
९५ श्रीकालरात्र्यै
९६ श्रीतपस्विन्यै
९७ श्रीनारायण्यै
९८ श्रीभद्रकाल्यै
९९ श्रीविष्णुमायायै
१०० श्रीजलोदर्यै
१०१ श्रीशिवदूत्यै
१०२ श्रीकराल्यै
१०३ श्रीअम्बायै
१०४ श्रीपरमेश्वर्यै
१०५ श्रीकात्यायन्यै
१०६ श्रीसावित्र्यै
१०७ श्रीप्रत्यक्षायै
१०८ श्रीब्रह्मवादिन्यै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

देवी कवच (चण्डी कवच)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म श्रीमाताजी निर्मलामां तस्मै श्री गुरवे नमः

हमारी गुरु महामाता हैं। उनकी सभी शक्ति एवं योगिनी अंग उनके बच्चों को उपलब्ध हैं । हम देवी कवच के पाठ से उन शक्तियों को हमारे पंच कोषों को (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय एवं आनंदमय) स्वच्छ तथा प्रकाशित करने हेतु एकत्रित (मोबिलाइज) करते हैं। इस प्रकार हमारे गुरु माता के शक्ति से, आत्मा शरीर का गुरु बनता हैं।

देवी कवच का पाठ करते हुए शरीर के जिस अंग का तथा हिस्से का संरक्षण किया जा रहा हैं, उस पर ध्यान दिया जाय एवम् पाठ करते हुए देवताके नाम जोडकर मंत्रो का उच्चारण भी किया जाता हैं। उदा.ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीचण्ड्यै नमो नमः।

अथ श्रीचण्डीकवचम्

ॐ श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः
श्री गुरुभ्यो नमः श्री कुलदेवतायै नमः।
अविघ्नमस्तु ।। ॐ नारायणाय नमः ।
ॐ नरनरोत्तमाय नमः ॐ सरस्वती देव्यै नमः।
श्री वेदव्यासाय नमः ।।

अथ देव्याः कवचम्

अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्,

श्री जगदम्बाप्रीत्यर्थ सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।
ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ।।१।।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ।।२।।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।।३।।

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ।।४।।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।।५।।

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ।।६।।

न तेषां जायते किंचिद् अशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयं न हि ।।७।।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ।।८।।

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ।।९।।

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ।।१०।।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ।।११।।

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ।।१२।।

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ।।१३।।

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ।।१४।।

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ।।१५।।

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ।।१६।।

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ।।१७।।

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ।।१८।।

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ।।१९।।

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ।।२०।।

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।।२१।।

मालाधारी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा चा भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।।२२।।

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ।।२३।।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ।।२४।।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठेदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ।।२५।।

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ।।२६।।

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ।।२७।।

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ।।२८।।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मन:शोकविनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ।।२९।।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ।।३०।।

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ।।३१।।

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ।।३२।।

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ।।३३।।

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ।।३४।।

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालाममेद्या सर्वसन्धिषु ।।३५।।

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ।।३६।।

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ।।३७।।

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ।।३८।।

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ।।३९।।

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ।।४०।।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ।।४१।।

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ।।४२।।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ।।४३।।

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।।४४।।

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।।४५।।

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।।४६।।

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ।। ४७।।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।।४८।।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ।।४९।।

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।।५०।।

ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।
ब्रह्मराक्षसवेताला: कूष्माण्डा भैरवादयः ।।५१।।

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।।५२।।

यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ।।५३।।

यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ।।५४।।

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ।। ५५।।

लभते परम रूपं शिवेन सह मोदते ।।ॐ।। ।। ५६।।

इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम्

टिप्पणी : चन्डी कवच का हिन्दी अनुवाद ''नवरात्रि प्रवचन पुणे १९८८'' नामक पुस्तक में प्राप्त है।

अपराजितास्तोत्रम् (देवीसूक्तम्)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।१।।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ।।२।।

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्धयै कूर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्य भृभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ।।३।।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।।४।।

अतिसौम्यतिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।।५।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।६।।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।७।।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।८।।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।९।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१०।।

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।११।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१२।।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१३।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१४।।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१५।।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१६।।

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१७।।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१८।।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।१९।।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२०।।

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२१।।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२२।।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२३।।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२४।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२५।।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२६।।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।।२७।।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२८।।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहंतु चापदः ।।२९।।

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।।३०।।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 8

अनाहत (दायां हृदय) चक्र

जय जय रघुवीर समर्थ

श्रीरामरक्षास्तोत्रम् (राम कवच)

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीसीता-राम साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मला देव्यै नमो नमः

ॐ श्री गणेशाय नमः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः। श्री सीतारामचन्द्रो देवता।
अनुष्टुप छन्दः। सीता शक्तिः। श्रीमद् हनुमान कीलकम् ।
श्री रामचन्द्रप्रीत्यर्थेरामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामांकारूढ सीता मुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामंडनं रामचन्द्रम् ।।

इति ध्यानम् ।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।।१।।

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।।२।।

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तं चरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत् त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ।।३।।

रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ।।४।।

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ।।५।।

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ।।६।।

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ।।७।।

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ।।८।।

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ।।९।।

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ।।१०।।

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ।।११।।

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।।१२।।

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत् तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ।।१३।।

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम् ।।१४।।

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्राप्तः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ।।१५।।

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ।।१६।।

तरुणौ रुपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ।।१७।।

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।।१८।।

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ।।१९।।

आत्तसज्जधनूषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ।।२०।।

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन् मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ।।२१।।

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरूषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ।।२२।।

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ।।२३।।

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधादिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ।।२४।।

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ।।२५।।

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।

राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ।।२६।।

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।२७।।

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ।।२८।।

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ।।२९।।

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ।।३०।।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।।३१।।

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।३२।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।३३।।

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ।।३४।।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।३५।।

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ।।३६।।

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।

रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर । ।।३७।।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।३८।।

इति श्रीबुधकौशिकविराचितं

श्री रामरक्षास्तोत्रं संपूर्णम्। श्री सीता-राम चन्द्रार्पणमस्तु

श्रीराम के १६ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीरामाय	९	श्रीकौसल्येयाय
२	श्रीदाशरथये	१०	श्रीरघूत्तमाय
३	श्री शूराय	११	श्रीवेदान्तवेद्याय
४	श्रीलक्ष्मणानुचराय	१२	श्रीयज्ञेशाय
५	श्रीबलाय	१३	श्रीपुराण-पुरुषोत्तमाय
६	श्रीकाकुत्स्थाय	१४	श्रीजानकी-वल्लभाय
७	श्रीपुरुषाय	१५	श्रीश्रीमते
८	श्रीपूर्णाय	१६	श्रीअप्रमेयपराक्रमाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीराम के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीरामाय	२२	श्रीसदाहनुमदाश्रिताय
२	श्रीरामभद्राय	२३	श्रीकौसल्येयाय
३	श्रीरामचंद्राय	२४	खरध्वंसिने
४	श्रीशाश्वताय	२५	विराधवधपंडिताय
५	श्रीराजीवलोचनाय	२६	बिभीषणपरित्रात्रे
६	श्रीश्रीमते	२७	श्रीहरकोदंडखंडनाय
७	श्रीराजेन्द्राय	२८	श्रीसप्ततालप्रभेत्रे
८	श्रीरघुपुंगवाय	२९	दशग्रीवशिरोहराय
९	श्रीजानकीवल्लभाय	३०	ताटकांतकृताय
१०	श्रीजैत्रे	३१	श्रीवेदान्तसाराय
११	श्रीजितामित्राय	३२	श्रीवेदात्मने
१२	श्रीजनार्दनाय	३३	श्रीभवरोगस्य भेषजाय
१३	श्रीविश्वामित्रप्रियाय	३४	दूषणत्रिशिरोहंत्रे
१४	श्रीदांताय	३५	श्रीत्रिमूर्तये
१५	श्रीशरण्यत्राणतत्पराय	३६	श्रीत्रिगुणात्मकाय
१६	श्रीवालिप्रमथिने	३७	श्रीत्रिविक्रमाय
१७	श्रीवाग्मिने	३८	श्रीत्रिलोकात्मने
१८	श्रीसत्यवाचे	३९	श्रीपुण्यचरित्र कीर्तनाय
१९	श्रीसत्यविक्रमाय	४०	श्रीत्रैलोक्यरक्षकाय
२०	श्रीसत्यव्रताय	४१	श्रीधन्विने
२१	श्रीव्रताधाराय	४२	श्रीदण्डकारण्यवासकृताय

४३ श्रीअहल्याशापशमनाय
४४ श्रीपितृभक्ताय
४५ श्रीवरप्रदाय
४६ श्रीजितेंद्रियाय
४७ श्रीजितक्रोधाय
४८ श्रीजगद्गुरवे
४९ श्रीऋक्षवानरसंघटकाय
५० श्रीचित्रकूटसमाश्रयाय
५१ श्रीसुमित्रापुत्रसेविताय
५२ श्रीसर्वदेवाधिदेवाय
५३ श्रीमृतवानरजीवकाय
५४ मायामारीचहंत्रे
५५ श्रीमहादेवाय
५६ श्रीमहाभुजाय
५७ श्रीसर्वदेवस्तुताय
५८ श्रीसौम्याय
५९ श्रीब्रह्मण्याय
६० श्रीमुनिसंस्तुताय
६१ श्रीमहायोगिने
६२ श्रीमहोदराय
६३ श्रीसुग्रीवेप्सितराज्यदाय
६४ श्रीसर्वपुण्याधिकफलाय
६५ श्रीस्मृतसर्वाघनाशनाय
६६ श्रीआदिपुरुषाय
६७ श्रीपरमपुरुषाय
६८ श्रीमहापुरुषाय
६९ श्रीपुण्योदयाय
७० श्रीदयासाराय
७१ श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय
७२ श्रीस्मितवक्त्राय
७३ श्रीमितभाषिणे
७४ श्रीपूर्वभाषिणे
७५ श्रीराघवाय
७६ श्रीअनंतगुणगंभीराय
७७ श्रीधीरोदात्तगुणोत्तमाय
७८ श्रीमायामानुषचरित्राय
७९ श्रीमहादेवादिपूजिताय
८० श्रीसेतुकृते
८१ श्रीजितवासनाय
८२ श्रीसर्वतीर्थमयाय
८३ श्रीहरये
८४ श्रीश्यामगात्राय
८५ श्रीसुंदराय
८६ श्रीशूराय
८७ श्रीपीतवाससे
८८ श्रीधनुर्धराय
८९ श्रीसर्वयज्ञाधिपाय
९० श्रीयज्ञिने

९१ श्रीजरामरणवर्जिताय
९२ श्रीबिभीषणप्रतिष्ठात्रे
९३ श्रीसर्वाभरणावर्जिताय
९४ श्रीपरमात्मने
९५ श्रीपरब्रह्मणे
९६ श्रीसच्चिदानंदविग्रहाय
९७ श्रीपरस्मै ज्योतिषे
९८ श्रीपरस्मै धाम्ने
९९ श्रीपराकाशाय
१०० श्रीपरात्पराय
१०१ श्रीपरेशाय
१०२ श्रीपारगाय
१०३ श्रीपाराय
१०४ श्रीसर्वदेवात्मकाय
१०५ श्रीपरस्मै
१०६ श्रीसर्वलोकेश्वराय
१०७ श्रीमुनिसेविताय
१०८ श्रीअच्युताय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 9

विशुद्धि चक्र

जय श्रीयोगेश्वर

श्रीकृष्णस्तुति

अनादिनिधनं विष्णुं त्रैलोक्येशं जगद्गुरुम् ।
शंखचक्रगदाबाहुं वनमालाविराजितम् ।।१।।

श्रीवत्सांकं जगद्धेतुं श्रीधरं श्रीपतिं हरिम् ।
योगाय योगपतये योगीशाय नमो नमः ।।२।।

श्री राधाकृष्ण के १६ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीराधाकृष्णाय	९	श्रीविष्णुमाया-भ्रात्रे
२	श्रीविठ्ठलरुक्मिणीभ्याम्	१०	श्रीवैनविनीवामसनाद
३	श्री गोविदांपतये	११	श्रीविराटांगना-विराटाय
४	श्रीगोप्त्रे	१२	श्रीबालकृष्णाय
५	श्रीगोविंदाय	१३	श्रीशिखण्डिने
६	श्रीगोपतये	१४	नरकान्तकाय
७	श्रीअमेरिकेश्वराय	१५	श्रीमहानिधये
८	श्रीयशोदा-नंदनाय	१६	श्रीमहाह्रदाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीकृष्ण के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीश्रीकृष्णाय
२ श्रीश्रीधराय
३ श्रीवेणुधराय
४ श्रीश्रीमते
५ श्रीनिर्मलागम्याय
६ श्रीनिर्मलापूजकाय
७ श्रीनिर्मलाभक्तप्रियाय
८ श्रीनिर्मलाहृदयाय
९ श्रीनिराधाराय
१० श्रीविश्वाधारजनकाय
११ श्रीविष्णवे
१२ श्रीमहाविष्णुपूजिताय
१३ श्रीविष्णुमायासुघोषिताय
१४ श्रीवागीश्वराय
१५ श्रीवागीश्वरीभ्रात्रे
१६ श्रीविष्णुमायाभ्रात्रे
१७ श्रीद्रौपदीबन्धवे
१८ श्रीपार्थसखाय
१९ श्रीसन्मित्राय
२० श्रीविश्वव्याप्ताय
२१ श्रीविश्वरक्षकाय
२२ श्रीविश्वसाक्षिणे
२३ श्रीद्वारकाधीशाय
२४ श्रीविशुद्धिप्रान्ताधीशाय
२५ श्रीजननायकाय
२६ श्रीविशुद्धिजनपालकाय
२७ श्रीअमेरिकेश्वराय
२८ श्रीमहानीलाय
२९ श्रीपीताम्बरधराय
३० श्रीसुमुखाय
३१ श्रीसुहास्याय
३२ श्रीसुभाषिणे
३३ श्रीसुलोचनाय
३४ श्रीसुनासिकाय
३५ श्रीसुदन्ताय
३६ श्रीसुकेशाय
३७ श्रीशिखण्डिने
३८ श्रीसुश्रुताय
३९ श्रीसुदर्शनधराय
४० श्रीमहावीराय
४१ श्रीशौर्यदायकाय
४२ श्रीरणपण्डिताय

४३ श्रीरणछोडाय
४४ श्रीश्रीनाथाय
४५ श्रीयुक्तिवते
४६ श्रीअकबराय
४७ श्रीअखिलेश्वराय
४८ श्रीमहाविराटाय
४९ श्रीयोगेश्वराय
५० श्रीयोगिवत्सलाय
५१ श्रीयोगवर्णिताय
५२ श्रीसहजसन्देशवाहकाय
५३ श्रीविश्वनिर्मलाधर्मध्वजधारकाय
५४ श्रीगरुडध्वजाय
५५ श्रीगदाधराय
५६ श्रीशंखधराय
५७ श्रीपद्मधराय
५८ श्रीलीलाधराय
५९ श्रीदामोदराय
६० श्रीगोवर्धनधराय
६१ श्रीयोगक्षेमवाहकाय
६२ श्रीसत्यभाषिणे
६३ श्रीहितप्रदायकाय
६४ श्रीप्रियभाषिणे
६५ श्रीअभयप्रदायकाय
६६ श्रीभयनाशकाय
६७ श्रीसाधकरक्षकाय
६८ श्रीभक्तवत्सलाय
६९ श्रीशोकहारिणे
७० श्रीदु:खनाशकाय
७१ राक्षसहन्त्रे
७२ श्रीकुरुकुलविरोधकाय
७३ श्रीगोकुलवासिने
७४ श्रीगोपालाय
७५ श्रीगोविन्दाय
७६ श्रीयदुकुलश्रेष्ठाय
७७ श्रीअकुलाय
७८ श्रीवंशद्वेषनाशकाय
७९ श्रीआत्मज्ञानवर्णिताय
८० श्रीअज्ञानप्रणाशकाय
८१ श्रीनिराकाराय
८२ श्रीआनन्दकराय
८३ श्रीआनन्दप्रदायकाय
८४ श्रीपावित्र्यानन्दाय
८५ श्रीपावित्र्यरक्षकाय
८६ श्रीज्ञानानन्दाय
८७ श्रीकलानन्दाय
८८ श्रीगृहनन्दाय
८९ श्रीधनानन्दाय
९० श्रीकुबेराय

९१ श्रीआत्मानन्दाय
९२ श्रीसहजसमूहानन्दाय
९३ श्रीसर्वानन्दाय
९४ श्रीविशुद्धानन्दाय
९५ श्रीसंगीतानन्दाय
९६ श्रीनृत्यानन्दाय
९७ श्रीशब्दानन्दाय
९८ श्रीमौनानन्दाय
९९ श्रीसहजानन्दाय
१०० श्रीपरमानन्दाय
१०१ श्रीनिरानन्दाय
१०२ श्रीनाट्यप्रियाय
१०३ श्रीसंगीतप्रियाय
१०४ श्रीक्षीरप्रियाय
१०५ श्रीदधिप्रियाय
१०६ श्रीमधुप्रियाय
१०७ श्रीघृतप्रियाय
१०८ श्रीआदिशक्तिचरणामृतप्रियाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीकृष्ण के १०८ अंग्रेजी नाम

सॅल्युटेशन, ऑनर ॲन्ड ग्लोरी टु श्री भगवति श्री आदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मला देवी हू बेअर्स श्री कृष्णा ऑन हर फोरहेड ॲज़ द क्राउनिंग ज्वेल ऑफ द हेवन्स.

यू आर श्रीकृष्णा,

-प्रेज अनटू हिम फॉर एव्हर अँड एव्हर

यू आर वर्शिप्ड थ्रू क्राइस्ट.
यू ग्रांट परमिशन टु बिकम अ सहज योगी.
यू ॲक्सेप्ट द योगीज सर्टिफाईड बाई लॉर्ड जीझस क्राईस्ट.
यू ॲक्सेप्ट द यज्ञाज ऑफ द नोबल सोल्स ५

यू आर द प्रिमॉर्डियल बीईंग.
यू आर द ईश्वरा (गॉड) ऑफ द योगीज.
यू आर द गॉड ऑफ योगा.
यू आर अवर आयडीअल इन इटस् हायेस्ट ग्लोरी.
यू आर सबलाईम अँड द सोर्स ऑफ साब्लिमिटी. १०

यू आर फुल्ली अवेअर ऑफ युवर डिव्हाईन पॉवर्स.
यू आर द साक्षी (विटनेस).
यू आर द ॲक्सिस ऑफ द व्हर्लिंग युनिव्हर्सेस.
यू होल्ड द स्ट्रिंग्स ऑफ द कॉस्मिक पपेट शो.
यू आर द ग्रेट एनटायसर ऑफ द श्री वर्ल्डस. १५

यू आर द फादर येट यु आर द फ्रेंड.
यू आर द रिव्हीलेशन ऑफ अल्टिमेट फादरहूड.
यू मेनिफिस्ट श्री सदाशिव. (लॉर्ड गॉड ऑल मायटी)

श्री आदिशक्तिज क्रिएशन इज फॉर युवर प्ले.
यू आर द इनटिग्रेटेड ब्रेन ऑफ डिव्हिनिटी. २०

यू वेअर, आर अँड एव्हर विल बी.
यू आर विष्णु द मैग्निफिसेंट.
यू आर द याहवेह (गॉड) ऑफ मोझेस.
श्री बुद्ध पर्सीव्हड यु अैज निराकार. (फॉर्मलेस)
यू आर द फादर ऑफ येशु क्रिस्त. २५

यू आर द अकबर (द मोस हाय) ऑफ इस्लाम.
यू आर द लॉर्ड गॉड ऑलमायटी, ऑल नोईंग, ऑल परव्हेडिंग.
यू आर द मास्टर ऑफ द अॅक्केरियन एज.
यू गेट द डिव्हाईन वर्क डन इन कृतयुगा.
(ए ट्रान्सीशनल पिरीएड दैट हर्डलस् द गोल्डन अैज ऑफ सत्ययुग)
यू कैरी द यलो -डस्टेड फीट ऑफ श्री राधाजी इन युअर हार्ट. ३०

यू सी राधाजी इन मदर्स लाफिंग आईज.
यू आर द वर्शिपर ऑफ श्री निर्मला विराटांगना.
(फेमिनाईन फॉर्म ऑफ द विराटा)
यू परव्हेड आकाश (स्काय).
यू आर द ब्ल्यू लॉर्ड ऑफ इथरिअल इनफिनिटि.
यू आर ब्ल्यू फॉर द सेक ऑफ श्री महाकाली. ३५

फॉर युवर सेक द फरमामेंट इज ब्ल्यू.
यू वेअर मेनी गारलँडस् ऑफ मून, सन अँड स्टार्स.
यू प्ले विथ मदर सुरभी ऑन द मिल्की वे.
श्री ब्रह्मदेवा गेव यु हीज यलो धोती.
द सन राइजेस टु बिहोल्ड यु. ४०

यू ग्रांट द पॉवर ऑफ टोटल कॉंन्फिडन्स.
यू ग्रांट द पॉवर ऑफ डिस्क्रिमिनेशन.
यू ग्रांट द पॉवर ऑफ डिसिजन.
यू ग्रांट द पॉवर ऑफ डिटॅचमेंट.
यू ग्रांट द पॉवर ऑफ रिस्पॉन्सिबिलिटी. ४५

यू ग्रांट द पॉवर ऑफ ऑस्पिशस व्हिजन.
यू ग्रांट द पॉवर ऑफ लीडरशिप.
यू ग्रांटेड ॲबंडन्स टु अमेरिका.
यू ग्रांट द पॉवर ऑफ प्लेन्टिट्यूड.
यू ग्रांट द पॉवर टु कम्युनिकेट अँड कन्व्हिन्स. ५०

यू ग्रांट द पॉवर टु सायेलेन्स.
यू ग्रांट द पॉवर टु द सहज कलेक्टिविटी.
यू ग्रांट द पॉवर टु शेअर.
यू ग्रांट द पॉवर टु परमिअेट.
यू ग्रांट द पॉवर टु एक्सपांड थॉटलेस अवेअरनेस. ५५

यू ग्रांट द पॉवर ऑफ कॉस्मिक कॉन्शसनेस.
यू हॅव द पॉवर टु मेक एनी वन ए किंग.
यू ग्रांट अँड विथड्रॉ पॉवर्स टू ह्यूमन इनस्टिट्यूशन्स.
यू बेअर द रिंगस् ऑफ सॅटर्न ऑन युवर राईट फिंगर.
यू मेक फन ऑफ वर्ल्डली पॉवर्स. ६०

यू शॅटर द पिलर्स ऑफ फॉल्स धर्माज.
यू आर ब्लेझिंग डूम फॉर अधर्मा.
यू आर बोथ माधुरी अँड संहार शक्ति. (स्वीटनेस ॲन्ड डिस्ट्रॉईंग पावर)
यू सबड्यू द सर्पेंटस् ऑफ अेंगर, हेट अैंड अेरोगन्स.
यू डिस्लाईक फ्रिवोलिटी, ग्रोसनेस अँड प्लॅस्टिक्स. ६५

यू आर मिसचिव्हस विथ इन्डिव्हीज्युॲलिस्टस.
यू इनकारनेट ऑन धीस अर्थ टू रिएस्टॅब्लिश द धर्मा ऑफ इनोसन्स.
यू रिस्टोअर द लॉस्ट व्हिजन ऑफ द ॲबसोल्यूट.
ऑल मिथस् आर कन्जयुम्ड बाय द फायर ऑफ युवर ट्रूथ.
यू लीड अस टू व्हिक्टरी ऑन द बैटलफिल्ड ऑफ द ब्रेन. ७०

यू लीड युवर वर्शिपर्स बियाँड द कुरूक्षेत्रा (फिल) ऑफ इन्व्हॉल्व्हमेंट.
यू इन्स्पायर्ड एब्राहम लिंकन.
यू आर प्रॉपिशिएटेड बाय द टवाईस बॉर्न फॉर द सॅल्व्हेशन ऑफ अमेरिका.
यू लीड द ट्वाईस बॉर्न बैक टू गोकुल.
यू टीच द ट्वाईस बॉर्न थ्रू द व्हॉईस ऑफ श्री माताजी निर्मला देवी. ७५

यू आर ॲडोरेबल अँड ॲडोअर्ड बाय द ट्वाईस-बॉर्न.
यू प्ले अराऊंड इन फ्रॉलिक्स, जॉय अँड हैपिनेस.
द काऊज ऑफ महाराष्ट्र रश्ड टू लिक युवर आर्मस्.
यू आर द इनकार्नेशन ऑफ जेंटल ग्रेशसनेस.
यू मेल्ट एव्हरीवन्स हार्ट इन द हनी लाईक स्प्रिंग ऑफ युवर स्वीटनेस. ८०

यू ड्राईव्ह द चॅरियट ऑफ द फाईव्ह सेन्सेस.
यू आर द प्रोटेक्टर ऑफ चेस्ट वुमनहुड.
यू आर फाँड ऑफ द निर्मला भक्ताज.
यू आस्कड श्री गरूडा टू आन्सर द कॉल ऑफ द निर्मला भक्ताज.
यू सेंट द सुदर्शन चक्र टू किल द फोज ऑफ निर्मला भक्ताज. ८५

यू प्युरिफाय ऑल रिलेशनशिप्स.
यू एनवलप अवर सिस्टर्स चैस्टिटी इन द्रौपदीज सारी.
यू ॲडॉर्न् अवर ब्रदर्स विथ व्हेलर अँड शिव्हॅलरी.
यू आर द फ्लूट प्लेअर ऑफ कलेक्टिव्ह चारिस्मा.
यू प्ले रास विथ द सहज गोपीज. ९०

यू आर द फ्रेंड ऑफ द योगी नेम्ड् सुदामा.
यू मेक द एनर्जी सर्क्युलेट थ्रू एव्हरी वन.
यू एस्टॅब्लिश द लिंक विथ कलेक्टिविटी.
यू आर द कलेक्टिव कॉन्शसनेस ऑफ द आत्मा. (स्पिरीट)
यू ब्रेक द पिचर विच कवर्स द इगो. ९५

यू डिझॉल्व्ह इगो इन इथरिक कॉन्शसनेस.
यू डिस्पेल सुपरइगो इन विटनेसिंग कॉन्शसनेस.
यू फीड द रूटस् ऑफ द ट्री ऑफ लाईफ इन द ब्रेन.
यू एनलाईटन द सेल्स ऑफ द ब्रेन.
यू क्राऊन द कॉन्शसनेस ऑफ द ट्वाईस बॉर्न. १००

यू सस्टेन श्री आदिशक्तिज थ्रोन इन द ब्रेन.
यू आर द लॉर्ड ऑफ इनकन्सिवेबल मॅजेस्टी.
यू आर द विटनेस ऑफ युवर ओन ब्लिस्.
यू रूल ओव्हर द ओशन ऑफ अमृत.
यू रिसाईड अैट द पार्टिंग ऑफ आदिशक्तिज हेअर. १०५

यू लीड द प्ले ऑफ रिकग्निशन ऑफ श्री आदिशक्ति निर्मला देवी.
यू विल एस्टॅब्लिश ऑन धीस अर्थ द डॅजलिंग ग्लोरी ऑफ
श्री आदिशक्ति निर्मला देवी.
यू विल युनाईट द नेशन्स ऑफ द अर्थ अॅट द लोटस फीट ऑफ
श्री आदिशक्ती निर्मला देवी.

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीकृष्ण के १०८ अंग्रेजी नाम (अनुवाद)

श्री भगवती श्री आदिशक्ति श्री निर्मला देवी को सादर प्रणाम है, जिनके माथे पर श्री कृष्ण विराजित है स्वर्ग के अमूल्य हीरे की तरह ।

आप श्री कृष्णा हैं, वह ख्राईस्ट के जरिए पूजे जाते है। नमो नमः
आप सहजयोगी होने की इजाजत देते हैं। नमो नमः
आप क्राईस्ट के बताए हुए योगी को स्वीकार करते हैं।
आप पवित्र आत्माओं की पूजा स्वीकार करते हैं ५

आप आदि पुरुष हैं।
आप योगियों के ईश्वर हैं।
आप योगा के भगवान हैं।
आप हमारे आदर्श हैं।
आप मन की दैवी शांति है और शांति का उद्‌गमस्थान हैं। १०

आप अपनी दिव्यशक्ति से परिचित हैं।
आप साक्षी हैं ।
आप चक्राकार घूमती दुनिया की घूरी हैं।
आप वैश्विक कठपुतलियों के नाट्य की डोर पकडे हैं ।
आप तीनो जगतोंको आनंदित करने वाले हैं। १५

आप पिता हैं पर मित्र हैं।
आप पितृत्व का आविष्कार हैं।
आप सदाशिव को प्रकटित करते हैं।
आदिशक्ति की रचना आपके लीला के लिये हैं।
आप दिव्यधारा के समग्र मष्तिष्क हैं। २०

आप थे, हैं व हमेशा रहेंगे ।
आप भव्य विष्णू हैं।
आप मॉज़ेस के याहवेह हैं ।
बुद्ध ने उन्हे निराकार में आपको अनुभव किया।
आप येशू क्राइस्ट के पिता हैं। २५

आप इस्लाम के अकबर हैं।
आप सर्वज्ञ, सर्व व्याप्त परम परमेश्वर हैं।
आप ॲक्वेरियन् युग के स्वामी हैं।
आप कृत युग में ईश्वरीय कार्य कराते हैं ।
आप राधाजी के पीत धूलीसे रंगे चरण अपने हृदय में रखते हैं। ३०

आप राधाजी को श्रीमाताजी की मुस्कुराती आँखो में देखते हैं ।
आप श्रीनिर्मला विराटांगना के पुजारी हैं ।
आप आकाश में व्याप्त हैं।
आप आकाश (ईथर) तत्त्व के असीमताके (इनफिनिटी) नीले वर्ण के स्वामी हैं।
आप नीले हैं श्री महाकाली के लिए। ३५

आपके लिए आकाश भी नीला हैं।
वह असंख्य मालाए पहनते हैं, चाँद सूर्य व सितारों की
वह माँ सुरभी के साथ आकाश गंगा में खेलते हैं।
श्री ब्रह्मदेव ने आपको अपनी पीताम्बरी दी
आपके दर्शन के लिये सूर्योदय होता हैं। ४०

आप पूर्ण विश्वास की शक्ति देते हैं।
आप विवेक की शक्ति देते हैं।
आप निर्णय की शक्ति देते हैं।
आप अलिप्तता की शक्ति देते हैं।
आप जिम्मेदारी की शक्ति देते हैं । ४५

आप शुभदृष्टि के शक्तिदायक हैं।
आप नेतृत्व की शक्ति देते हैं।
आपने अमेरिका को समृद्धी प्रदान की हैं।
आप समृद्धी की शक्ति देते हैं।
आप संपर्क की व समझाने की शक्ति देते हैं । ५०

आप शांति को शक्ति प्रदान करते हैं ।
आप सहज सामूहिकता को शक्ति देते हैं।
आप बाँट कर उपयोग की शक्ति प्रदान करते हैं।
आप सर्वत्र समाने की (परमिएट) शक्ति देते हैं।
आप सचेतन निर्विचारता को बढाने की शक्ति देते हैं। ५५

आप वैश्विक (कॉसमिक) चेतना की शक्ति देते हैं।
आपमे किसी को भी राजा बनाने की शक्ति हैं।
आप मानवी संस्था को शक्ति देते है और उनको वापस भी बुलाते हैं।
आप अपने दायें हाथ की अुंगली में शनि की रिंग पहनते हैं।
आप दुनिया की भौतिकता के शक्तिका उपहास उड़ाते हैं। ६०

आप झूठे धर्म के आधार को चूर कर देते हैं।
आप अधर्म के लिए दाहकतापूर्ण अंत हैं ।
आप माधुरी व संहार की शक्ति हैं।
आप क्रोध, घृणा, व घमंड के सर्प को कुचलते हैंतथा प्रभावहीन करते है।
आप हीनता (फ्रिव्हल्टी) स्थूलता एंव प्लॅस्टिक के विरोधमें हैं। ६५

आप व्यक्तिवादी लोगों को तंग करते हैं ।
आप अबोधिता धर्म को पुन: स्थापित करने के लिए पुर्नजन्म लेते हैं।
आप अॅबसोल्यूट का (परमात्मा का) खोया हुआ दर्शन पुन:स्थापित करते हैं ।
सब मिथ्यात्व आपके सत्य की दाहकता में नष्ट होते हैं।
आप मस्तिष्क के लड़ाई के रणांगण में हमे विजयी करते हैं। ७०

आप अपने पुजारीयो को कुरुक्षेत्र के धर्म युद्ध का मार्गदर्शन करते हैं।
आपने अब्राहिम लिंकन को प्रेरणा दी।
आप द्विज लोगो द्वारा अमेरिका के मुक्ति के लिए पूजित हैं।
आप दुबारा जन्मे को वापिस गोकुल पंहुचाते हैं।
आप दुबारा जन्मे को श्री निर्मला माताजी की आवाज में सिखाते हैं।....७५

आप बहुत पूजनीय है और द्विजों से पूजित हैं।
आप खुशियों व उत्साह में खेलते हैं।
महाराष्ट्र की गायें आपकी बाहें चाटने को दौडती हैं।
आप सुशील उदारता का पुनर्जन्म हैं।
आप सब के दिलों को शहद की तरह के अपने-
मुधरता के स्रोत से पिघलाते हैं। ८०

आप पाँच इंन्द्रियों के रथ को चलाते हैं।
आप नारी की लाज के रक्षक हैं ।
आप निर्मला माँ के भक्तो को पसंद करते हैं।
आपने गरुड (विष्णु वाहन) को निर्मल भक्तों की पुकार का जवाब देने को कहा।
आपने सुदर्शन चक्र भेजा निर्मल भक्तों के दुश्मनों को मारने के लिए । ८५

आप सभी संबंधों को शुद्ध करते हैं।
आप हमारी बहनों की पवित्रता को द्रौपदी की साड़ी मे ढ़ाकते (एनव्हलप्स) हैं ।
आप हमारे बन्धुओं को शूरता की शक्ति से शोभायमान करते हैं।
आप सामूहिकता के बासुरी वादक हैं ।
आप अपने सहजगोपियों के साथ रास खेलते हैं । ९०

आप सुदामा योगी के मित्र हैं।
आप सब में शक्ति प्रवाहित करते हैं।
आप सामूहिकता के साथ संपर्क स्थापित करते हैं ।
आप आत्मा के सामूहिक चेतना हैं।

आप अहंकार को ढ़कने (रक्षक) वाले घड़े को तोड़ते हैं। ९५
आप अहंकार को आकाश चेतन में विलीन करते हैं।

आप प्रति अहंकार को साक्षी भाव के चेतनामें समाप्त करते हैं।
आप दिमाग में जीवन वृक्ष की जड़ों को सीचते हैं ।
आप दिमाग की पेशियों को रोशनी देते हैं।
आप द्विजो की चेतना को मुकुट पहनाते हैं । १००

आप दिमाग में आदिशक्ति के सिंहासन को स्थायी रखते हैं।
आप अमेय राज वैभव के स्वामी हैं ।
आप अपनी ही दिव्यानंद के साक्षी हैं ।
आप अमृतसागर पर राज्य करते हैं ।
आप आदिशक्ति के बालों की माँग में रहते हैं । १०५

आप ही आदिशक्ति निर्मलादेवी को पहचानने के खेल को चलाते हैं।
आप इस धरती पर आदिशक्ति श्रीनिर्मलादेवी की तेजस्वी वैभव को - स्थापित करते हैं ।
आप धरती के राष्ट्रों को श्री निर्मला माताजी के कमल चरणों पर मिलाते हैं।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीकुबेर के ६९ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीकुबेराय
२ श्रीकृष्णाय
३ श्रीकृषिप्रियाय
४ श्रीविष्णवे
५ श्रीविश्वपूज्याय
६ श्रीपद्मनाभाय
७ श्रीनाट्यप्रियाय
८ श्रीलीलाधराय
९ श्रीआकाशेश्वराय
१० श्रीविराटांगनाविराटाय
११ श्रीसुनासिकाय
१२ श्रीमहाभूपतये
१३ श्रीराजनीतिज्ञाय
१४ श्रीराजनीतिनिपुणाय
१५ श्रीअर्थनीतिनिपुणाय
१६ श्रीविवेकबुद्धये
१७ श्रीअक्षयनिधये
१८ श्रीप्रद्युम्नाय
१९ श्रीस्थितप्रज्ञाय
२० श्रीगतिमते
२१ श्रीयोगक्षेमप्रदायकाय
२२ श्रीपरमोदाराय
२३ श्रीदामोदराय
२४ श्रीकृपणविरोधकाय
२५ श्रीतृप्ताय
२६ श्रीसन्तुष्टाय
२७ श्रीआनन्दतत्त्ववर्णिताय
२८ श्रीसूक्ष्माय
२९ श्रीप्रेरणादायकाय
३० श्रीस्वत्वदायकाय
३१ श्रीवासनाहराय
३२ श्रीकलन्जविषनाशकाय
३३ लोभनाशकाय
३४ मद्यविरोधकाय
३५ कुगुरुमर्दनाय
३६ श्रीसंतुलकाय
३७ श्रीकर्मकाण्डविनाशकाय
३८ श्रीधराधर्मरक्षकाय
३९ श्रीजागृताय
४० श्रीगृहधर्मपालकाय
४१ श्रीयमाय
४२ श्रीनियन्त्रे

४३ श्रीसर्वधर्माश्रयाय
४४ श्रीमायारूपिणे
४५ श्रीमहामनसे
४६ श्रीद्यूतविरोधकाय
४७ श्रीपावित्र्यरक्षकाय
४८ श्रीआलस्यरिपवे
४९ श्रीकलाधराय
५० श्रीहस्तकलाश्रयाय
५१ श्रीमूलोद्योगउत्तेजकाय
५२ श्रीशोषणहराय
५३ श्रीदारिद्र्यहारकाय
५४ श्रीजडसंचयविरोधकाय
५५ श्रीदुराचारविनाशकाय
५६ श्रीभवभयहारकाय
५७ श्रीचैतन्याय
५८ श्रीद्वारकाधीशाय
५९ श्रीऋणनाशकाय
६० श्रीवर्ण-भेद-विनाशकाय
६१ श्रीस्पर्धा-विरोधकाय
६२ श्रीसमकर्त्रे
६३ श्रीहितकारकाय
६४ श्रीनिर्मलगणपालकाय
६५ श्रीसहजजनवत्सलाय
६६ श्रीविश्व-निर्मल धर्मप्रियाय
६७ श्रीअगम्याय
६८ श्रीनिर्मलगम्याय
६९ श्रीदेवी-कार्यसमुद्यताय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीविष्णुमाया के ८४ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीकाल्यै
२ श्रीमहाकालीनिर्मितायै
३ श्रीविशुद्धिपद्मालयायै
४ श्रीकुलिशांग्यै
५ श्रीतडिल्लतासमरुचये
६ श्रीविशिष्टशस्त्रायै
७ श्रीअमेरिकेश्वर-शस्त्रायै
८ राक्षसविजयिन्यै
९ महिषासुरघातिन्यै
१० निशुंभशुंभ-संहन्त्र्यै
११ श्रीचिर-कुमार्यै
१२ श्रीविंध्यप्रियपुत्र्यै
१३ श्रीदेवीमाहात्म्य-स्तुतायै
१४ श्रीशंकराचार्यप्रशस्तायै
१५ श्रीनन्दगोप-यशोदासुतायै
१६ श्रीकृष्णसंजातायै
१७ श्रीकृष्ण-भगिनीमायाशक्त्यै
१८ श्रीसत्य-अवतार-उद्घोषिण्यै
१९ श्रीस्वयंत्यागायै
२० श्रीकृष्ण-जन्म-
उद्घोषिका-विद्युल्लतायै
२१ श्रीवैकृतिक-रहस्यायै
२२ श्रीशिव-ब्रह्मा-विष्णु-ज्ञानपरांगतये
२३ श्रीमूर्तिरहस्यायै
२४ श्रीदाडिम-पुष्प-रक्त-दन्तिन्यै
२५ श्रीशतनेत्रायै
२६ श्रीनारायण्यै
२७ श्रीपीडानिवारिण्यै
२८ श्रीपावित्र्यदायिन्यै
२९ श्रीगणेशपावित्र्यपुष्पायै
३० श्रीपावित्र्यरक्षिकायै
३१ श्रीद्रौपद्यै
३२ श्रीबन्धुरक्षितपावित्र्यायै
३३ श्रीबन्धु-आत्मा-प्रबोधितायै
३४ श्रीमहाभारतकारिण्यै
३५ श्रीपंच-महा-भूत-सम्मिलितायै
३६ श्रीसर्वभूतप्रविष्टायै
३७ श्रीहृद्-बुद्धि-मेलकायै
३८ श्रीशीघ्रकारिण्यै
३९ सर्वबाधाज्वालिन्यै
४० श्रीविद्युत्-जनितमंगलायै
४१ श्रीनिसर्गप्रकोपदामिन्यै

४२ श्रीअद्भुतचित्रप्रदायिन्यै
४३ श्रीचलत्चित्रप्रकाशिकायै
४४ श्रीसूनृत-वाणीदायिन्यै
४५ श्रीमन्त्र-सामर्थ्य-प्रदायिन्यै
४६ श्रीनिरहंकारायै
४७ श्रीनम्रताप्रदायिन्यै
४८ श्रीविश्वास-निर्माणकारायै
४९ श्रीसत्यरक्षिकायै
५० सर्वबाधाउदघातिकायै
५१ अलीकदम्भनाशिन्यै
५२ श्रीनिष्कलंकायै
५३ श्रीपितामहगौरवरक्षिकायै
५४ श्रीमातृगौरवरक्षिकायै
५५ श्रीभगिनीसामर्थ्यरूपायै
५६ श्रीसर्वांशात्मिकायै
५७ श्रीआत्म-संशयनिवारिण्यै
५८ असत्यमन्त्र नाशिन्यै
५९ असत्यस्पष्टीकरणनाशिन्यै
६० श्रीचक्रमर्यादास्थापिन्यै
६१ श्रीहृदयमूलायै
६२ श्रीधैर्यदायिन्यै
६३ श्रीस्त्रीशक्तिरूपायै
६४ असत्यकथानाशिन्यै
६५ श्रीकृतकादर्शनिवारिण्यै
६६ श्रीअव्यक्तप्रकटनकारिण्यै
६७ श्रीआनन्दाधारायै
६८ श्रीसूक्ष्मसंवेदनादायिन्यै
६९ श्रीआत्म-साक्षात्कार-पथायै
७० श्रीनिर्मला-उपहासकर-असहिष्णवे
७१ श्रीपूर्णसमर्थायै
७२ श्रीसहजयोगपरिसमर्पणरूपायै
७३ श्रीविराटप्रापिण्यै
७४ श्रीविष्णुमायाविराटांगनायै
७५ श्रीवामविशुद्धि-स्थित-महाशक्तये
७६ श्रीभगिनी-कन्या-रूपा-फातिमायै
७७ श्रीहंसचक्र-स्थित-सरस्वत्यै
७८ विप्र-चित्त-विक्षेप-राक्षस-घातिन्यै
७९ श्रीशाकंभरीदेव्यै
८० श्रीमहाभ्रामर्यै
८१ श्रीइडानाडीस्थाग्निशक्तये
८२ श्रीसत्य-भाषिणी-आकाशशुद्धिकायै
८३ श्रीस्त्रीशक्तये
८४ श्रीप्रतिदिनपूजनीयायै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

अल्लाह के ९९ नाम

ला इल्लाह इल्लल्लाह मुहम्मद अर रसूल अल्लाह

१	अर्रहमान	२५	अल् बैथ
२	अर्रहीम	२६	अश शाहिद
३	अल् मलिक	२७	अल् हक्क
४	अल् कुद्दुस	२८	अल् वकिल
५	अस् सलाम	२९	अल् कवि
६	अल् मुमिन	३०	अल् मतिन
७	अल मुह्यमीन	३१	अल् अव्वाल
८	अल् घफ्फर	३२	अल् आखिर
९	अल् कहर	३३	अझ् झहिर
१०	अल् वह्हब	३४	अल् बतिन
११	अर् रझ्झाक	३५	अल् - वलि
१२	अल् फत्ताह	३६	अल् - मुताली
१३	अल् मुझिल्ल	३७	अल् - बारर्
१४	अस् सामि	३८	अल् - मुमित
१५	अल् बसिर	३९	अल् -हवि
१६	अल् हकम	४०	अल् - काय्यु
१७	अल् अद्ल	४१	अल् -वजिद
१८	अल् लतिफ	४२	अल् -मजिद
१९	अल् कबिर	४३	अल् - वहिद
२०	अल् हाफिझ	४४	अल् - जमे
२१	अल् मुघित	४५	अल् -घनि
२२	अल् हासिब	४६	अल् -मुघ्नि
२३	अल् जलिल	४७	अल् - मनि
२४	अल् करिम	४८	अल् - अद्-दारर्

४९ अन् - नफि
५० अन् - नुर
५१ अल् मुहायमिन
५२ अल् - अझिझ
५३ अल् जब्बार
५४ अल् - मुतकब्बिर
५५ अल् - खलिक
५६ अल् - बरि
५७ अल् - आलिम
५८ अल् - कबिद
५९ अल् - बसित
६० अल् - खफिद
६१ अर् - रफि
६२ अल् - मुइझ्झ
६३ अल् - खबिर
६४ अल् - हालिम
६५ अल् - अझिम
६६ अल् -गफुर
६७ अश् - शकुर
६८ अल् - अलि
६९ अर् - रकिब
७० अल् - मुजिब
७१ अल् - वसि
७२ अल् - हाकिम
७३ अल् - वादुद
७४ अल् - मजिद
७५ अल् - वालि
७६ अल् - हमिद
७७ अल् - मुहसी
७८ अल् -मुबद्दि
७९ अल् -मुइद
८० अल् - मुहयी
८१ अल् -तव्वाब
८२ अल् - मुन्तकिम
८३ अल् - अफुव
८४ अर् - रांऊफ
८५ मलिक - अुल - मुल्क
८६ धुल-जलाल-वाल-इक्रम
८७ अल् - मुकसित
८८ अल् - अहद
८९ अस् - समद
९० अल् - कादिर
९१ अल् - मुक्तदिर
९२ अल् - मुकाद्दिम
९३ अल् - मुआहखिर
९४ अल् - हादि
९५ अल् - बादी
९६ अल् - बाकि
९७ अल् - वारिथ
९८ अर् - रशिद
९९ अस् - सबुर

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीविराट (सामूहिक विष्णु) के मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीगृहलक्ष्मी-कुबेर-विराट साक्षात्
श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः ।।१।।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री ब्रह्मदेव विठ्ठल विराट साक्षात्
श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः ।।२।।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री विष्णुमाया विराट साक्षात्
श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः ।।३।।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री विठ्ठल विराट साक्षात्
श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः ।।४।।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री निरानन्द साक्षात्
श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः ।।५।।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ।।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 10

आज्ञा चक्र

जय श्री ईशपुत्र, जगी तारक जन्मा आला

द लॉर्ड्स् प्रेअर

अवर फादर, हू आर्ट इन हेवन,
हॅलोड बी दाय नेम
दाय किंगडम कम,
दाय विल बी डन,
ऑन अर्थ ॲज इट इज इन हेवन.
गिव्ह अस धिस डे अवर डेली ब्रेड;
अँड फर्गीव्ह अस अवर ट्रेसपासेस,
ॲज वी फर्गीव्ह दोज हू ट्रेसपास अगेन्स्ट अस;
ॲण्ड लीड अस नॉट इनटू टेम्पटेशन,
बट डिलिवर अस फ्रॉम इव्हिल;
फॉर दाईन इज द किंगडम,
द पॉवर अँड द ग्लोरी,
फॉर एवर अँड एवर, आमेन.

द लॉर्ड्स् प्रेअर (अनुवाद)

स्वर्गासीन हमारे जगत पिताश्री,
आपके नाम की जयकार हो।
इस पृथ्वी पर आपका साम्राज्य आए,
आपकी इच्छानुसार सब कुछ हो जाये,
जिस प्रकार स्वर्ग मे होता हैं ।
आज के दिन भी, हमे 'प्रतिदिन का भोजन' प्राप्त हो
हमारी गलतियों को क्षमा करें,
जिस प्रकार हम अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं।
हमें लालच में नहीं ले जाइये,
बल्कि बुराईओं से विमुक्त करे,
क्योंकि ये साम्राज्य, ये सत्ता
तथा ये वैभव, चिरंतन आप ही का हैं।
आमेन

श्री येशू क्रिस्त के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीआज्ञाचक्रस्वामिने
२ श्रीसूर्याय
३ श्रीक्षमाप्रदायकाय
४ श्रीक्षमास्वरूपाय
५ श्रीशमदमवैराग्यतितिक्षाप्रदायकाय
६ श्रीओंकाराय
७ श्रीचैतन्याय
८ श्रीआदिपुरुषाय
९ श्रीसहस्रशीर्षाय
१० श्रीसहस्राक्षाय
११ श्रीविष्णवे
१२ श्रीविष्णु-सुताय
१३ श्रीमहाविष्णवे
१४ श्रीअनन्तकोटिब्रह्मांडधारकाय
१५ श्रीहिरण्यगर्भाय
१६ श्रीपूर्वाघोषिताय
१७ श्रीब्रह्माविष्णुरुद्रसेविताय
१८ श्रीपावित्र्यप्रदायकाय
१९ श्रीगोपालाय
२० श्रीगोसेविताय
२१ श्रीकृष्णसुताय
२२ श्रीराधानन्दनाय
२३ पापनाशकाय
२४ पापविमोचकाय
२५ श्रीप्रकाशाय
२६ श्रीआकाशाय
२७ श्रीअग्नये
२८ श्रीमहाकारुण्यरूपिणे
२९ श्रीतपस्विने
३० श्रीहम्क्षम्बीजाय
३१ श्रीआत्मने
३२ श्रीपरमात्मने
३३ श्रीअमृताय
३४ श्रीआत्मतत्त्वजाताय
३५ श्रीशान्ताय
३६ श्रीनिर्विचाराय
३७ श्रीआदिआज्ञाचक्रस्थाय
३८ श्रीकल्किने
३९ श्रीएकादशरुद्रसेविताय
४० श्रीउत्क्रान्तितत्त्वाय
४१ श्रीउत्क्रान्तिआधाराय
४२ श्रीसर्वोच्चाय
४३ श्रीमहत्मनसे
४४ श्रीमहत्अहंकाराय
४५ श्रीतुरीयास्थितिप्रदायकाय
४६ श्रीतुरीयावासिने

४७ श्रीद्वाराय
४८ श्रीकार्तिकेयाय
४९ श्रीमहागणेशाय
५० श्रीअबोधितास्वरूपाय
५१ श्रीअबोधिताप्रदायकाय
५२ श्रीशुद्धाय
५३ श्रीमांगल्यप्रदायकाय
५४ श्रीऔदार्याय
५५ श्रीमहालक्ष्मीनेत्रतेजसे
५६ श्रीपरिपूर्णसहजयोगिने
५७ श्रीआदिसहजयोगिने
५८ श्रीश्रेष्ठसहजयोगिने
५९ श्रीआदिशक्ति माताजी
श्रीनिर्मलादेवीप्रियम्कर्त्रे
६० श्रीशाश्वताय
६१ श्रीस्थाणवे
६२ श्रीसत्चिदानंदघनाय
६३ स्वैराचारनाशकाय
६४ धर्ममार्तंडनाशकाय
६५ श्रीनिरिच्छाय
६६ श्रीधनदाय
६७ श्रीशुद्धश्वेताय
६८ श्रीआदिबालकाय
६९ श्रीआदिब्रह्मचारिणे
७० श्रीपुरातनाय
७१ श्रीअल्फाओमेगान्विताय
७२ श्रीसमस्तसाक्षिणे
७३ श्रीईशपुत्राय
७४ श्रीमोहवर्जिताय
७५ ममताहन्त्रे
७६ श्रीविवेकाय
७७ अघोरनाशकाय
७८ श्रीज्ञानरूपाय
७९ श्रीसद्बुद्धिदायकाय
८० श्रीसुज्ञाय
८१ श्रीपूर्णनम्राय
८२ भौतिकतानाशकाय
८३ अहंकारनाशकाय
८४ प्रतिअहंकारशोषकाय
८५ अशुद्धइच्छानाशकाय
८६ श्रीहृदमंदिरस्थाय
८७ अगुरुनाशकाय
८८ असत्यखंडनाय
८९ वंशभेदनाशकाय
९० क्रोधनाशकाय
९१ श्रीआदिशक्ति-माताजी-
श्रीनिर्मलादेवीप्रियपुत्राय
९२ श्रीआदिशक्तिअर्चिताय
९३ श्रीप्रतिष्ठानक्षेत्रनिवासकृताय
९४ श्रीकबेलावासिने
९५ श्रीसहस्रारद्वारवासिने
९६ श्रीनिष्कलंकाय
९७ श्रीनित्याय
९८ श्रीनिराकाराय

९९ श्रीनिर्विकल्पाय
१०० श्रीलोकातीताय
१०१ श्रीगुणातीताय
१०२ श्रीमहायोगिने
१०३ श्रीनित्यमुक्ताय
१०४ श्रीअव्यक्तमूर्तये
१०५ श्रीयोगेश्वराय
१०६ श्रीयोगधाम्ने
१०७ श्रीयोगस्वरूपाय
१०८ श्रीयेशुख्रिस्ताय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री जीज़स क्राईस्ट के १०८ अंग्रेजी नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री जीज़स साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी
श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

वी बाउ टु द वन हू इज द ओन्ली सन ऑफ हिज व्हर्जिन मदर, इन हूज एव्हरी पोअर गॅलॅक्सीज व्हर्ल अॅज डस्ट, हू वॉज बॉर्न टु रीच अस ऑफ हिज फादर सदाशिवा, द एव्हर लास्टिंग गॉड ऑलमायटी. आमेन.

यू आर द प्रिमॉर्डियल बिईंग द ॐ,
यू आर विष्णू अँड द सन ऑफ विष्णू.
यू आर महाविष्णू.
यू आर प्योर प्रणव एनर्जी.
यू कंटेन मिलीयन्स ऑफ युनिव्हर्सेस. ५

यू वेअर बॉर्न इन द प्रिमॉर्डियल कॉस्मिक एग.
यू वेअर कन्सिव्हड इन द हार्ट ऑफ श्रीमाताजी.
यू वेअर फोरटोल्ड बाई द प्रॉफेट्स.
यू वेअर हेरल्डेड बाई स्टार इन द ईस्ट.
यू वेअर अटेन्डेड बाई द श्री मागी हू वेअर ब्रह्मा, शिव अॅण्ड विष्णू. ...१०

यू वेअर बॉर्न इन ए स्टेबल.
यू आर द टीचर.
यू आर ए फ्रेन्ड ऑफ द काऊज.
यू वेअर अटेन्डेड बाई काऊज.
युवर फादर इज श्रीकृष्णा. १५

युवर मदर इज श्री राधा, हू इन्कारनेटेड अगेन अॅज श्री मेरी महालक्ष्मी.
यू आर द सेव्हीअर हू बर्नस् ऑल अवर सिन्स विथ युवर फायर.

यू ॲडॉर्न द आज्ञा चक्र.
यू आर लाईट.
यू आर ऑफ द नेचर ऑफ स्काई. २०

यू आर फायर.
यू परफॉरम्ड मिरॅकल्स आऊट ऑफ युवर कंपैशन.
यू हूज क्लोक वॉज टच्ड .
यू आर ए फ्रेन्ड ऑफ ॲसेटिक्स.
यू आर वर्शिप्ड बाई फॅमिलीज. २५

यू आर द बीज मंत्राज हम् ॲन्ड क्षम्.
यू आर द फर्गीव्हर.
यू आलाऊ अस टु फरगिव.
यू आर द स्पिरिट.
यू आर बॉर्न ऑफ द स्पिरिट. ३०

यू वेअर क्रुसिफाईड अँन्ड रेझरेक्टेड इन प्योर स्पिरिट.
यू रोज आफ्टर थ्री डेज.
यू आर पीस.
यू अैबसॉर्ब ऑल थॉटस्.
यू आबाईड इन द आदि आज्ञा चक्र. ३५

यू प्रॉमिज्ड द कंफर्टर हू इज श्रीमाताजी, द होली स्पिरिट.
यू रिटर्न अैज अ किंग.
यू आर श्री कल्की.
यू आर द प्रिन्सिपल ऑफ इवोल्यूशन.
यू आर द सपोर्ट ऑफ अवर इवोल्यूशन. ४०

यू आर द एन्ड ऑफ इवोल्यूशन.
यू आर द इवोल्यूशन फ्रॉम कलेक्टिव्ह सबकॉन्शस टु कलेक्टिव्ह कॉन्शसनेस.
यू आर द नैरो गेट.
यू आर द वे टु द किंगडम ऑफ हेवन.
यू आर द सायलेन्स. ४५

यू आर द लॉर्ड कार्तिकेया.
यू आर श्री महागणेशा.
यू आर द प्योरिटी ऑफ इनोसन्स.
यू आर द कॉन्टिनन्स्.
यू आर जनरॉसिटी. ५०

यू आर द लाईट इन द आईज ऑफ श्री महालक्ष्मी.
यू आर ओबीडियंट टु युवर मदर.
यू आर द परफेक्ट सहज योगी.
यू आर द परफेक्ट ब्रदर.
यू आर द एम्बॉडिमेंट ऑफ जॉय. ५५

यू आर द एम्बॉडिमेंट ऑफ जंटलनेस.
यू स्पिट आऊट द हाफ हार्टेड.
यू कन्डेम्न ऑल फैनाटिक्स.
यू आर अनइंटरेस्टेड इन रिचेस.
यू गिव्ह ऑल रिचेस टु युवर डिवोटीज. ६०

यू आर प्योर व्हाईट.
यू आर द सॅक्रेड हार्ट.
यू वेअर ए क्राऊन ऑफ थॉर्नस्.
यू कन्डेम्न मिजरी.
यू सफर्ड सो दॅट वी शुड एन्जॉय. ६५

यू आर ए चाईल्ड.
यू आर एव्हर एन्शन्ट.
यू आर द अल्फा अँड द ओमेगा.
यू गिव्ह द किंगडम ऑफ हेवन इक्वली टु दोज हू आर फर्स्ट ऑर लास्ट.
यू आर एव्हर विथ अस. ७०

यू आर बियाँड द युनिव्हर्स.
यू आर द साईन ऑफ द क्रॉस.
यू आर अबव डिस्क्रिमिनेशन.
यू आर द विटनेस.
यू आर द वन हू इज विटनेस्ड. ७५

यू ओवरकम टेम्प्टेशन.
यू एक्झॉरसाईज इव्हिल.
यू कन्डेम्न ओकल्ट प्रॅक्टिसेस.
यू आर द एम्बॉडिमेन्ट ऑफ तपस (पेनान्स).
यू वर्शिप युवर फादर. ८०

यू आर हैलोड बाई युवर फादर.
युवर नेम इज होली.
यू आर इन्टलिजन्स.
यू आर विज्डम.
यू आर परफेक्ट ह्युमिलिटी. ८५

यू आर अैंग्री विथ मटिरियालिस्टस्.
यू डिस्ट्रॉय इगो.
यू अॅबसॉर्ब सुपरइगो.
यू आर द डिस्ट्रॉयर ऑफ डिजायर्स.
यू आर द प्योर पॉवर ऑफ डिजायर. ९०

युवर चर्च इज द हार्ट.
यू हॅव द एलेवन डिस्ट्राँइंग पॉवर्स.
यू आर द डिस्ट्रॉयर ऑफ फॉल्स प्रॉफेट्स.
यू आर द डिस्ट्रॉयर ऑफ अनट्रुथ.
यू आर द डिस्ट्रॉयर ऑफ इन्टॉलरन्स. ९५

यू आर द डिस्ट्रॉयर ऑफ रेशियालिजम.
यू आर द डिस्ट्रॉयर ऑफ अँगर.
यू आर द हेरल्ड ऑफ द गोल्डन एज.
यू आर अॅडोअर्ड बाई अवर मदर.
यू आर प्रेज्ड बाई अवर मदर. १००

यू आर लव्ड बाई अवर मदर.
यू आर द वन हू इज चोजन.
यू आर अवेकन्ड इन ऑल सहज योगीज.
यू राईड द व्हाईट हॉर्स अैट द एन्ड ऑफ द एज.
यु आर द एन्ड ऑफ अवर फीअर्स. १०५

यु गार्ड द गेट ऑफ अवर मदर.
यु आर द सन ऑफ गॉड
यु आर द ओन्ली वे टु द किंगडम ऑफ गॉड.

ॐ श्रीमहालक्ष्मी-महाविष्णु साक्षात् श्रीमहाविराट् साक्षात्
श्रीआदिशक्ती-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री जीज़स् क्राईस्ट के १०८ नाम (अनुवाद)

हम सादर प्रणाम करते हैं उनको, जो अपने कुमारी माता के केवल एकही पुत्र हैं, जिनके शरीर के प्रत्येक रन्ध्र में धूल जैसी गैलेक्सीज चक्राकार घुमती हैं, जो अपने परम पिता सर्व शक्तिमान चिरंतन सदाशिव के बारें हमे शिक्षा देनेके लिये अवतरित हुए थे। आमेन...

आप आदि पुरुष ओम् हैं।
आप श्रीविष्णु एवं श्रीविष्णु के पुत्र हैं।
आप महाविष्णु हैं।
आप शुद्ध प्रणव शक्ति हैं।
आप कोटि कोटि विश्व को समाये हुए हैं। ५

आप आदि ब्रह्माण्ड में जन्मे हैं ।
आपकी श्रीमाताजी के हृदय में धारणा हुअी थी।
आपकी प्रेषितोने भविष्यवाणी की थी ।
आपके आगमनके पहले पूर्व क्षितिज पर तारा आया था।
आपकी तीन मागी ने, जो ब्रम्हा, शिव और विष्णु थे, सेवा की थी। १०

आपका अस्तबल मे जन्म हुआ था।
आप शिक्षक हैं।
आप गायों के मित्र हैं।
आपकी गायों ने सेवा की थी।
आपके पिता श्रीकृष्ण हैं। १५

आपकी माता श्री राधा हैं।
आप अपने अग्नि में हमारे पापों का दहन करके हमारा तारण करते हैं।
आप आज्ञा चक्र को सुशोभित करते हैं।
आप प्रकाश हैं।

आपकी आकाश के समान प्रकृति हैं। २०

आप अग्नि हैं।
आपने अपने करुणा से चमत्कार किये थे।
आपके चोगे को स्पर्श किया गया था ।
आप तपस्विओं के मित्र हैं।
आप परिवार द्वारा पूजित हैं। २५

आप 'हम्' और 'क्षम्' ये बीज मंत्र हैं।
आप क्षमाशील हैं।
आप हमें क्षमा करने को सक्षम करते हैं।
आप आत्मा हैं।
आप आत्मा से जन्मे हुए हैं। ३०

आप शुद्ध आत्मतत्त्व में सूली पर चढ़े थे और (रेझरेक्ट) पुनरुत्थित हुए थे।
आप तीन दिनो के बाद जागृत हुए थे।
आप शांती हैं।
आप सर्व विचारों को खीच लेते हैं।
आप आदि आज्ञा चक्र में निवास करते हैं। ३५

आपने कम्फर्टर को (आराम देने वाले) जो होलि स्पिरिट, श्रीमाताजी हैं-
भेजने का वचन दिया था।
आप राजा के रूपमें वापस आते हैं।
आप कल्की हैं।
आप उत्क्रांती का तत्त्व हैं।
आप हमारे उत्क्रांती का आधार हैं। ४०

आप उत्कांति की अंतिम स्थिति हैं।
आप सामूहिक सुप्त चेतना (कलेक्टिव्ह सब कॉन्शस) से सामूहिक

चेतना-(कलेक्टिव्ह कॉन्शसनेस) तक के उत्क्रांति हैं।
आप सांकरे द्वार हैं।
आप स्वर्ग के राज्य का मार्ग हैं।
आप शांति हैं। ४५

आप भगवान कार्तिकेय हैं।
आप श्रीमहागणेश हैं।
आपअबोधिता की शुद्धता हैं।
आप ब्रह्मचर्य हैं।
आप उदारता हैं। ५०

आप श्री महालक्ष्मी के नेत्रों की रोशनी हैं।
आप अपनी माता के आज्ञाकारी हैं।
आप परिपूर्ण सहजयोगी हैं ।
आप परिपूर्ण भाई हैं।
आप आनंद की मूर्ति हैं। ५५
आप शालीनता की मूर्ति हैं।

आप आधे अधूरों को (हाफ हार्टेड) थूंक देते हैं।
आप सभी धर्म मार्तंडों की (फॅनॅटिक्स) निंदा (कन्डेम) करते हैं।
आप अमीरों में रुचि नहीं रखते।
आप अपने भक्तों को सभी अमीरी देते हैं। ६०

आप विशुद्ध शुभ्र हैं।
आप पवित्र हृदय हैं।
आप काटों का मुकुट परिधान करते हैं।
आप दीनता (मिझरी) की निंदा करते हैं।
आपने सारी तकलीफें उठायी इसलिए कि हम आनंदित रहें। ६५

आप बालक हैं।
आप सदा ही पुरातन हैं।
आप अल्फा और ओमेगा हैं।
आप स्वर्ग का राज्य सब को, जो पहले है या आखिर में हैं,
समानता से प्रदान करते हैं।
आप निरंतर हमारे साथ हैं। ७०

आप विश्व से भी परे हैं।
क्रॉस ये आपका चिन्ह हैं।
आप सभी भेद भाव के (डिस्क्रिमिनेशन से) ऊपर हैं।
आप साक्षी हैं।
आपको साक्षी भाव में देखना हैं। ७५

आप मोह पर विजय पाने वाले हैं।
आप दुष्टता से विमुक्त करते हैं ।
आप गूढ साधनाओं की निंदा करते हैं।
आप तपस्विता की मूर्ति हैं।
आप अपने पिता की पूजा करते हैं। ८०

आप अपने पिता द्वारा वलयांकित (हॅलोड) हैं।
आपका नाम पवित्र हैं।
आप बुद्धिमत्ता हैं।
आप ज्ञान (विझ्डम) हैं।
आप परिपूर्ण नम्रता हैं। ८५

आप भौतिकतावादियों से क्रोध करते हैं।
आप अहंकार नाशक हैं।
आप प्रति अहंकार (सुपर इगो) खीच लेते हैं।

आप इच्छाओं का नाश करते हैं।
आप शुद्ध इच्छा शक्ति हैं। ९०

हृदय ही आपका चर्च हैं।
आपकी ग्यारह विनाशकारी शक्तियाँ हैं।
आप झूठे प्रेषितों का नाश करते हैं।
आप असत्य का नाश करते हैं।
आप असहिष्णुता का नाश करते हैं। ९५

आप वंशवाद का नाश करते हैं।
आप क्रोध का नाश करते हैं।
आप सुवर्णयुग का आरंभ (हेरल्ड) हैं।
आप हमारी माता द्वारा स्तुति किये हुए (ॲडोर्ड) हैं।
आप हमारी माता द्वारा प्रशंसित हैं। १००

हमारी माता को आपसे प्रेम हैं।
आप चुने हुए हैं।
आप सभी सहजयोगियों मे जागृत हैं।
आप युगान्त मे श्वेत अश्व पर आरूढ होते हैं।
आप हमारे भय का अन्त हैं। १०५

आप हमारी माता के द्वारपाल हैं।
आप ईश्वर के पुत्र हैं।
आप ही ईश्वर के राज्य का मार्ग हैं।

ॐ श्री महालक्ष्मी महाविष्णु साक्षात् श्री महाविराट साक्षात्
श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

ॐ त्वमेव साक्षात श्रीसिद्धार्थगौतमबुद्ध साक्षात् श्रीआदिशक्ति
माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नम:

प्रेयर फॉर श्रीबुद्ध पूजा तथा बुद्ध मंत्र

श्री माँ शरणम् गच्छामि

ओम् श्री माताजी, सैल्युटेशन्स टु दी अगेन अँड अगेन, श्री माताजी, मे ऑल आस्पेक्टस् ऑफ द बोधचित्त - द एनलायटन्ड कॉन्शसनेस बी अवेकन्ड अैट दाय कमांड

मे ऑल बोधिसत्वाज परफॉर्म दाय आरती, मे दाय ग्रेस प्रिव्हेल, आमेन

मे अमोघ सिद्धि, द ऑल-ॲकॉम्प्लिशिंग विज्डम ऑफ बिकमिंग, बी अवेकन्ड अैट दाय कमांड.

मे रत्नसंभव, हू मेन्टेन्स बैलेन्स इन ऑल थिंग्स, बी अवेकन्ड अैट दाय कमान्ड.

मे अक्षोभ्य, द विज्डम ऑफ द ऑल - रिफ्लेक्टिंग मिरर, बी अवेकन्ड अैट दाय कमान्ड.

मे अमिताभ, हू अपहोल्डस् द इटर्नल लाईट ऑफ डिस्क्रिमिनेशन, बी अवेकन्ड अैट दाय कमान्ड.

मे वैरोचन, द युनिव्हर्सल हारमोनि इन द कॉसमॉस, बी अवेकन्ड अैट दाय कमान्ड.

अैंड, मे अवलोकितेश्वर, डिस्प्लेयिंग द थाऊजंड आर्मस् ऑफ अैक्टिंग कम्पैशन, बी अवेकन्ड अैट दाय कमान्ड ओम आमेन.

श्रीमाताजी, सैल्युटेशन्स टु दी अगेन अँड अगेन. दाऊ आर्ट द प्रिमॉर्डिअल स्प्लेंडर ऑफ गॉड, द आदिशक्ती अँड मदर ऑफ द देवताज. दाऊ आर्ट द रूटस् ऑफ ऑल अैक्शन, द सक्सेस इन अेनि ॲक्शन अँड द सोल अैंड ओन्ली डुअर इन द काऊंटलेस युनिव्हर्सेस ऑफ दाय क्रिअेशन. दाऊ आर्ट श्री. महामाया द मदर ऑफ द आदि अहंकार, द प्रिमॉर्डिअल इगो ऑफ

गॉड, द प्रिन्स ऑफ कपिलवस्तु, हू बिकेम, बाई दाय ग्रेस, द बुद्ध.

सॅल्युटेशन्स टु दी अगेन अँड अगेन श्रीमाताजी, दाऊ आर्ट, इन सॉलिटरी ग्लोरी, द क्रिएटर, द मेकर, द ॲबसोल्यूट डूअर. दाऊ आर्ट द स्लेयर ऑफ द होस्ट्स ऑफ मार अँड द ओन्ली रियल महत अहंकार. दाऊ ओन्ली कैन सेव्ह अस फ्रॉम अवर कर्मा अँड रिमुव्ह द थ्रेट ऑफ इम्पेंडिग डूम, कॉल्ड अपॉन अवरसेल्व्हज बाई अवर वोन मिसडीड्स.

प्लीज, श्रीमाताजी, अन्डू द इव्हिल दॅट मेन हैव डन.

दाऊ आर्ट द अवतार ऑफ द ग्रेट मैत्रेय, एक्सप्रेसिंग द थ्री मदर गॉडेसेस महालक्ष्मी, महासरस्वती ॲण्ड महाकाली: मैत्रेय; डिव्हाईन लव्ह इन ह्यूमन फॉर्म, द मास्टर ऑफ द व्हाईट हॉर्स.

अँड नाऊ द प्लेग्स ऑफ दिस मॉडर्न वर्ल्ड विल बी लिस्टेड.

प्रेयर

फर्स्ट अँड फोरमोस्ट, द घोस्ट ऑफ मटिरियॅलिझम हैज एम्पॉवर्ड द राक्षसा ऑफ्द इन्डस्ट्रियल प्रोडक्शन सिस्टम विथ ट्रिमेन्डस माईट टू स्वालो द बॉडीज अँड द माईन्डस् ऑफ द मिलियन्स्. **नाऊ प्रेयर**

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन....

अैज अ रिझल्ट, द थ्री एलिमेंटस् ऑफ अर्थ, वॉटर अँड एअर आर पोल्युटेड. वी आर रिलीजिंग केमिकल्स विच डिप्लीट द ओझोन स्फिअर ॲण्ड डिस्ट्रॉय मरीन लाईफ. वी आर कटिंग डाऊन द फॉरेस्ट्स दैट यूज्ड टू प्रोटेक्ट द लैन्ड, ॲन्ड ॲसिड रेन्स आर डिस्ट्रॉइंग द रेस्ट.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

वी हैव मॅन्युफॅक्चर्ड हायड्रोजन बॉम्बस् अँड लीव बिहाईंड ॲटॉमिक प्लांटस ॲन्ड रेडिओ अैक्टिव वेस्ट विच रिप्रेजेन्ट ए थ्रेट फॉर हंड्रेडस् ऑफ ईअर्स टु कम.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

मॉडर्न वेपनरी हैज ट्रान्सफॉर्मड वॉर इनटु अ फेसलेस बुचरी ऑफ अनप्रिसिडेंटेड प्रप्रोर्शन. आर्मस डीलर्स आर बिल्डींग इकॉनॉमिक एम्पायर्स बाई सेलिंग डेथ.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

अैज ए कान्सिक्वेन्स ऑफ दिस, अैंड रिलेटेड जेनोसाईडस्, देअर आर मिलियन्स ऑफ भूतस् हॉन्टिंग द प्लॅनेट

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

इलेक्ट्रॉनिक मशिनरी अँड मेकॅनायझेशन मे ट्रान्सफॉर्म द ह्युमन ब्रेन इनटु ए कलेक्शन ऑफ रोबोटिक प्रोसेसेस्.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

बायोटेक्नॉलॉजी अँड जेनेटिक मॅनिप्युलेशन मे रिलीज हार्मफुल सबस्टन्सेस ऑर लीड टु द क्रिअेशन ऑफ मॉन्स्ट्रस क्रीचर्स

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

द डिस्ट्रक्शन ऑफ इनोसन्स डूम्स अवर चिल्ड्रेन, अवर फेमिलीज, अँड हेरल्डस् द डिजोल्युशन ऑफ सोसायटी.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

व्हायोलन्स अँड द पर्व्हर्शन ऑफ सेक्स इन द मिडीया पोल्यूट द कॉन्शसनेस ऑफ द मासेस.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

द डिजीजेस ऑफ मॉडर्न लाईफ सच अॅज कॅन्सर, एडस अँड इनसॅनिटी आर द डायरेक्ट रिजल्ट ऑफ अवर सेल्फमेड हेलिश एनव्हायरमेन्टस

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

ड्रग्स् अँड अल्कोहोल थ्रो पीपल इन्टु ए रिग्रेशन ऑफ देअर कॉन्शसनेस

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

बिकॉज पीपल कॅन नो लाँगर फील देअर हार्ट, सोशल सर्व्हिसेस आर ब्रेकिंग डाऊन, द हॉस्पिटल सिस्टिम ट्राईज टु मेक मनी ऑन इट्स गिनी पिगस् अँड लॉयर्स हॅव ग्रॅज्यूएटेड टु प्रोफेशनल क्रूक्स.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

द बँकिंग सिस्टिम डज नॉट सो मच एन्करेज प्रोडक्टिव्ह अँड यूसफुल अैक्टिव्हिटीज अॅज प्रोटेक्ट द अनएथिकल अॅक्युम्युलेशन ऑफ वेल्थ

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

करप्ट गवर्नमेन्टस अॅन्ड पोलिटिशियन्स कैनॉट हँडल द प्रॉब्लेम्स ऑफ द कलियुगा बट ऑन द कॉन्ट्रेरी, कॅन ओन्ली मैसिव्हली अड टु देम.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

पोलिटिकल डिक्टेटरशिप अँड रिलीजस फॅनॅटिसिजम हैव गिवेन अैन ऑफिशिअल सील टु माईन्डलेस व्हायोलेन्स

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

अँड फायनली, श्रीमाताजी, इन दिस कन्ट्री विच शुड बी द लैंड ऑफ इन्टिग्रेशन, द ब्रेन ऑफ द पीपल हॅज बीन अॅटोमाइज्ड इन्टु लिटल बिटस अँड फ्रैग्मेटस्. हेन्स दोज ब्रेन्स आर अनेबल टु गेट द विजन ऑफ द व्होल, द व्हिजन ऑफ योर प्लॉन.

श्री आदिशक्ति, प्लीज अन्डू द इव्हिल दैट मेन हैव डन.

दीज अँड अदर इव्हिल्स आर द फ्रूटस ऑफ अवर कर्माज.

मे दे बी ब्लोन अवे बाई द विंड ऑफ द होली स्पिरीट. नाऊ,

बुद्धमंत्राः

बुद्धम् शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीबुद्ध पूजा की प्रार्थना (अनुवाद)

ओम श्री माताजी आपको बारम्बार प्रणाम । बोधिचित्त के प्रकाश चेतना के, सब अंग आपकी आज्ञा से जागरूक हो जाते। आपकी सब बोधिसत्व आरती उतारें। आपकी कृपा हमेशा रहें।

आमेन.

अमोघसिद्धी, घटित होनेकी सर्व सिद्धी दायी प्रज्ञता आपके आज्ञासे जागृत हो।

रत्नसंभव, जो सब जगह बराबर संतुलन रखता है आपकी आज्ञा से जागृत हो।

अक्षोभ्या सब प्रतिबिंबित करने वाले आईने की सूज्ञता, आपकी कृपा से जागृत हो।

अमिताभ, विवेक के चिरंतन प्रकाश का स्वामी, आपकी आज्ञा से जागृत हो।

विरोचना-दुनिया का विश्वक सुसंवाद, आपकी आज्ञा से जागृत हो।

अवलोकितेश्वर, हजार बाहों से प्रेम करनेवाली कार्यरत करुणा शक्ति आपकी आज्ञा से जागृत हो । आमीन

श्री माताजी, आपको शत शत प्रणाम.

श्री माताजी, आप परमात्मा का आदितेज, आदिशक्ति एवं देवताओं की माता हो ।

आप सभी कार्यों के जड़ हो, प्रत्येक कार्य का यश हो और अपने निर्माण किये हुए अनगिनत विश्वों मे एकमेव अद्वितीय कर्ता हो । आप श्री महामाया हो, आदि अहंकार की माँ, परमात्मा का आदि अहंकार, कपिल वस्तु के

राजकुमार, जो आपकी आज्ञा से बुद्ध हुए। आपको बारं बार प्रणाम.

श्री माताजी, आप, एकमेव वैभव में निर्माण करता, रचनाकार एवं निपरेक्ष (ॲबसोल्यूट) कर्ता हो । आप मारके टोलीयों के विनाशक एवं सिर्फ एकही महत अहंकार हो ।

श्री माताजी, केवल आपही हमे हमारे कर्मों से बचा सकती हैं, और हमारे कुकर्मो, हमने जो अपने सर्वनाश के खतरेको बुलाया हैं, उसको हटा सकती हैं।

श्री माताजी, कृपा करके मनुष्य द्वारा की गयी दुष्टता को दूर करियें ।

आप पूज्य मैत्रेय, ईश्वर प्यार का, मानवरूप मे अवतार हैं । तथा आप सफेद अश्व (कल्की हैं) के स्वामी हो।

आधुनिक विश्व की बुराईयाँ - पहला और सर्व प्रथम, जड़वाद के (मटिरियालिझम) भूतने औद्योगिक उत्पादन व्यवस्था के राक्षस को सत्ता और भयंकर शक्ति दी है जिसके कारण वह लाखो तनो एवं मनों को निगलने करने की क्षमता रखती हैं ।

प्रार्थना

श्री आदिशक्ति, कृपया मनुष्य की बुराइयों को दूर करिये। इसकी वजह से तीनों तत्त्व, भूमि पानी व हवा खराब हो रहे हैं। हम लोग रसायन छोड रहे हैं जो ओझोन को कम कर रहा हैं जो समुद्रीय जीव नष्ट कर देगा । हम लोग जंगल काट रहे हैं जो धरती की रक्षा करते थे व तेजाब की बरसाते बाकी सब को नष्ट कर रही हैं।

श्री आदिशक्ति, कृपया मानव निर्मित दुष्टता को दूर कीजिए।

हमने हायड्रोजन बॉम्ब बनाये और ॲटम की मशीने और रेडीओ ॲक्टिव वेस्ट छोड दिया हैं जो आने वाले सैकडों सालों तक खतरा बना रहेगा।

श्री आदिशक्ति, कृपा करके मानव निर्मित दुष्टता को दूर करिये ।

आधुनिक शस्त्रौ ने युद्ध को अमानुष नर संहार में बदल दिया हैं, जो अभूत पूर्व हैं। शस्त्रो के व्यापारी मृत्यु को बेचकर अपने आर्थिक साम्राज्य खडे कर रहे हैं।

श्री आदिशक्ति, कृपा करके मानव निर्मित दुष्टता को दूर करियें।

युद्धो में जो नरसंहार हुए हैं, उसके कारण इस पृथ्वीवर लाखोंकी संख्या में भूत छाये हुए हैं।

श्री आदिशक्ति, कृपा करके मानव द्वारा की गयी दुष्टता को दूर करियें।

इलेक्ट्रॉनिक यंत्रणा एवं तकनीक से मानवके मस्तिष्क (ब्रेन) रोबोटकी (संवेदना रहित) कार्यप्रणाली (प्रोसेस) में परिवर्तित करने की संभावना हैं।

श्री आदिशक्ति, कृपा करके मानव द्वारा की गयी दुष्टता को दूर करियें।

जैविक तंत्र और जीन्स यों के बदलाव (बायो टेक्नॉलाजी अँड जेनेटिक मॅनिप्युलेशन) के कारण खतरनाक द्रव्यो (सब्स्टन्सेस) तथा राक्षस के समान प्राणी पैदा होने की संभावना हैं।

श्री आदिशक्ति, कृपा करके मानव द्वारा की गयी दुष्टता को दूर करियें।

अबोधिता का विनाश होने से हमारे बालक बालिकाओं एवं कुटुम्बो के जीवन खतरे में हैं तथा इसके कारण पूरे समाज विघटन की (डिझोल्युशन) संभावना हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करके मानव द्वारा की गयी दुष्टता को दूर करिये।

मीडिया में दिखायी जानेवाले हिंसाचार तथा सेक्स के पर्व्हर्शन अनगिनत लोगों की चेतना प्रदूषित करते हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करे मानव द्वारा की गयी दुष्टता को दूर करिये।

आधुनिक जीवन में आये हुए, कॅन्सर, एडस्, तथा पागलपन (इनसॅनिटी) जैसे रोग हमारे ही रचाये हुए नरकीय वातावरण का (एनव्हायरमेंट) परिणाम हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करके मानव द्वारा निर्मित दुष्टताको, दूर करिये।

ड्रग्स तथा अल्कोहोल चेतना को कमजोरी में डालते हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करके मानव द्वारा निर्मित दुष्टता को दूर करिये ।

लोग अब अपने हृदय की भावनाओं को समझते नहीं हैं। इसके कारण समाज सेवा काम नही करती। हॉस्पिटल व्यवस्था रुग्णों के चिकित्सा सें पैसा बना रही है तथा वकील लोग व्यावसायिक बेइमानी में शिक्षित हुए हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करके मानव निर्मित दुष्टताओं को दूर करियें।

बँकिग व्यवस्था प्रोडक्टिव्ह (सृजनशील) एवम उपयोगी कार्यों को प्रोत्साहित नहीं करती, जिससे संपत्ती के अनैतिक (अनएथिकल) संचय (एक्युम्युलेशन) को सुरक्षा देती हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करके मानव निर्मित दुष्टता को दूर करियें ।

भ्रष्टाचारी सरकारी तथा पॉलिटिशियन्स कलियुग की समस्या सुलझाने में सक्षम नही है बल्कि वो उनको बडी मात्रा मे बढा रहे हैं।

श्री आदिशक्ति मानव निर्मित दुष्टता को कृपया दूर करियें।

राजनैतिक डिक्टटेरशिप और धार्मिक अंधता आदि ने बिना-हिचक (माईंडलेस) हिंसाचार को अधिकृत मान्यता का अधिकार (ऑफिशियल सील) दिया हैं।

श्री आदिशक्ति कृपा करके मानव ने निर्माण किये हुए दुष्टता को दूर करियें।

अंत में, श्री माताजी, इस देश में, जो एकाग्रता की भूमि होनी चाहिये, लोगों की मस्तिष्क (ब्रेन) टुकडो में विभाजित हुअी हैं। (ॲटमाइज्ड इनटु बिट्स अँड फ्रॅग्मेन्टस्) इसके कारण वह मस्तिष्क आपके संपूर्णता के दृष्टि को, आपके योजना के दृष्टि को समझनें असमर्थ हैं।

उपरोक्त तथा दूसरी दुष्टताऐं हमारे कर्मों का फल हैं। कृपया आदिशक्ति की हवा से दूर उड जायें । अब,

श्रीबुद्ध मंत्र : बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

एकादश रुद्र के ११ मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीमहाहनुमते
२ श्रीमहाभैरवाय
३ श्रीबुद्धाय
४ श्रीमहावीराय
५ श्रीमहाकार्तिकेयाय
६ श्रीमहागणेशाय
७ श्रीयेशूक्रिस्ताय (जिज़स क्राइस्ट)
८ श्रीब्रह्मदेव-सरस्वतीभ्याम्
९ श्रीलक्ष्मी-नारायणाभ्याम्
१० श्रीशिव-पार्वतीभ्याम्
११ श्रीहिरण्यगर्भाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

एकादश रुद्र के ६९ मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीस्थिराय
२ श्रीस्थाणवे
३ श्रीप्रभवे
४ श्रीभीमाय
५ श्रीप्रवराय
६ श्रीवरदाय
७ श्रीवराय
८ श्रीसर्वात्मने
९ श्रीसर्वविख्याताय
१० श्रीसर्वस्वाय
११ श्रीसर्वकराय
१२ श्रीजटिने
१३ श्रीचर्मिणे
१४ श्रीशिखण्डिने
१५ श्रीसर्वांगाय
१६ श्रीसर्वभावनाय
१७ श्रीहराय
१८ श्रीहरिणाक्षाय
१९ श्रीसर्वभूतहराय
२० श्रीवृत्तये
२१ श्रीनिवृत्तये
२२ श्रीनियताय
२३ श्रीशाश्वताय
२४ श्रीध्रुवाय
२५ श्रीस्मशानवासिने
२६ श्रीभगवते
२७ श्रीखेचराय
२८ श्रीगोचराय
२९ श्रीअर्चनाय
३० श्रीअभिवाद्याय
३१ श्रीमहाकर्मणे
३२ श्रीतपस्विने
३३ श्रीभूतभावनाय
३४ श्रीसर्वलोकप्रजापतये
३५ श्रीमहारूपाय
३६ श्रीमहाकायाय
३७ श्रीवृषरूपाय
३८ श्रीमहायशसे
३९ श्रीमहात्मने
४० श्रीसर्वभूतात्मने
४१ श्रीविश्वरूपाय
४२ श्रीमहाहनवे

४३ श्रीलोकपालाय
४४ श्रीअंतर्हितात्मने
४५ श्रीप्रसादाय
४६ श्रीहयगर्दभये
४७ श्रीपवित्राय
४८ श्रीमहते
४९ श्रीनियमाय
५० श्रीसर्वकर्मणे
५१ श्रीनियमाश्रिताय
५२ श्रीसर्वकर्मणे
५३ श्रीस्वयंभूताय
५४ श्रीआदये
५५ श्रीआदिकराय
५६ श्रीनिधये
५७ श्रीसहस्राक्षाय
५८ श्रीविशालाक्षाय
५९ श्रीसोमाय
६० श्रीनक्षत्रसाधकाय
६१ श्रीचंद्राय
६२ श्रीसूर्याय
६३ श्रीशनये
६४ श्रीकेतवे
६५ श्रीग्रहाय
६६ श्रीग्रहपतये
६७ श्रीवराय
६८ श्रीअत्रये
६९ श्रीअनघाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

एकादश रूद्र पूजा, कोमो, १६-९-८४

विषय 11

सहस्रार चक्र

तीन महामंत्र (सहस्रार मंत्र)

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली,
त्रिगुणात्मिका, कुण्डलिनी साक्षात्
श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्रीकल्की साक्षात्,
श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्रीकल्की साक्षात्,
श्रीसहस्रारस्वामिनी, मोक्षप्रदायिनी माताजी
श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीमाताजी निर्मलादेवी के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीमातायै
२ श्रीमहाराज्ञ्यै
३ श्रीदेवकार्यसमुद्यतायै
४ श्रीअकुलायै
५ श्रीविष्णुग्रंथिविभेदिन्यै
६ श्रीभवान्यै
७ श्रीभक्तिप्रियायै
८ श्रीभक्तिगम्यायै
९ श्रीशर्मदायिन्यै
१० श्रीनिराधारायै
११ श्रीनिरंजनायै
१२ श्रीनिर्लेपायै
१३ श्रीनिर्मलायै
१४ श्रीनिष्कलंकायै
१५ श्रीनित्यायै
१६ श्रीनिराकारायै
१७ श्रीनिराकुलायै
१८ श्रीनिर्गुणायै
१९ श्रीनिष्कलायै
२० श्रीनिष्कामायै
२१ श्रीनिरुपप्लवायै
२२ श्रीनित्यमुक्तायै
२३ श्रीनिर्विकारायै
२४ श्रीनिराश्रयायै
२५ श्रीनिरंतरायै
२६ श्रीनिष्कारणायै
२७ श्रीनिरुपाध्यै
२८ श्रीनिरीश्वरायै
२९ श्रीनीरागायै
३० श्रीनिर्मदायै
३१ श्रीनिश्चिंतायै
३२ श्रीनिरहंकारायै
३३ श्रीनिर्मोहायै
३४ श्रीनिर्ममायै
३५ श्रीनिष्पापायै
३६ श्रीनिःसंशयायै
३७ श्रीनिर्भवायै
३८ श्रीनिर्विकल्पायै
३९ श्रीनिराबाधायै
४० श्रीनिर्नाशायै
४१ श्रीनिष्क्रियायै
४२ श्रीनिष्परिग्रहायै

४३ श्रीनिस्तुलायै
४४ श्रीनीलचिकुरायै
४५ श्रीनिरपायायै
४६ श्रीनिरत्ययायै
४७ श्रीसुखप्रदायै
४८ श्रीसांद्रकरुणायै
४९ श्रीमहादेव्यै
५० श्रीमहापूज्यायै
५१ श्रीमहापातकनाशिन्यै
५२ श्रीमहाशक्त्यै
५३ श्रीमहामायायै
५४ श्रीमहारत्यै
५५ श्रीविश्वरूपायै
५६ श्रीपद्मासनायै
५७ श्रीभगवत्यै
५८ श्रीरक्षाकर्यै
५९ राक्षसघ्न्यै
६० श्रीपरमेश्वर्यै
६१ श्रीनित्ययौवनायै
६२ श्रीपुण्यलभ्यायै
६३ श्रीअचिंत्यरूपायै
६४ श्रीपराशक्त्यै
६५ श्रीगुरुमूर्त्यै
६६ श्रीआदिशक्त्यै
६७ श्रीयोगदायै
६८ श्रीएकाकिन्यै
६९ श्रीसुखाराध्यायै
७० श्रीशोभना-सुलभागत्यै
७१ श्रीसच्चिदानंद-रूपिण्यै
७२ श्रीलज्जायै
७३ श्रीशुभकर्यै
७४ श्रीचण्डिकायै
७५ श्रीत्रिगुणत्मिकायै
७६ श्रीमहत्यै
७७ श्रीप्राणरूपिण्यै
७८ श्रीपरमाणवे
७९ श्रीपाशहंत्र्यै
८० श्रीवीरमातायै
८१ श्रीगंभीरायै
८२ श्रीगर्वितायै
८३ श्रीक्षिप्रप्रसादिन्यै
८४ श्रीसुधासुत्यै
८५ श्रीधर्माधारायै
८६ श्रीविश्वग्रासायै
८७ श्रीस्वस्थायै
८८ श्रीस्वभावमधुरायै
८९ श्रीधीरसमर्चितायै
९० श्रीपरमोदारायै

९१ श्रीशाश्वत्यै
९२ श्रीलोकातीतायै
९३ श्रीशमात्मिकायै
९४ श्रीलीलाविनोदिन्यै
९५ श्रीसदाशिवायै
९६ श्रीपुष्ट्यै
९७ श्रीचंद्रनिभायै
९८ श्रीरविप्रख्यायै
९९ श्रीपावनाकृत्यै
१०० श्रीविश्वगर्भायै
१०१ श्रीचित्शक्त्यै
१०२ श्रीविश्वसाक्षिण्ये
१०३ श्रीविमलायै
१०४ श्रीवरदायै
१०५ श्रीविलासिन्यै
१०६ श्रीविजयायै
१०७ श्रीवन्दारुजनवत्सलायै
१०८ श्रीसहजयोगदायिन्यै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीनिर्मला मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीनिर्मलातंत्राय
२ श्रीनिर्मलाशर्वाय
३ श्रीनिर्मलास्कंदाय
४ श्रीनिर्मलागौर्यै
५ श्रीनिर्मलाकन्यायै
६ श्रीनिर्मलारूपिण्यै
७ श्रीनिर्मलाशक्त्यै
८ श्रीनिर्मलाशायिन्यै
९ श्रीनिर्मलाश्रद्धायै
१० श्रीनिर्मलावृत्तये
११ श्रीनिर्मलाभवायै
१२ श्रीनिर्मलाभूम्यै
१३ श्रीनिर्मलासरस्वत्यै
१४ श्रीनिर्मलाविद्यायै
१५ श्रीनिर्मलाकुमार्यै
१६ श्रीनिर्मलागंगायै
१७ श्रीनिर्मलामणये
१८ श्रीनिर्मलागणपतये
१९ श्रीनिर्मलाश्रीमत्यै
२० श्रीनिर्मलाचण्डिकायै
२१ श्रीनिर्मलारसिकायै
२२ श्रीनिर्मलाभगिन्यै
२३ श्रीनिर्मलास्तोत्रायै
२४ श्रीनिर्मलायज्ञायै
२५ श्रीनिर्मलायोगायै
२६ श्रीनिर्मलासोमायै
२७ श्रीनिर्मलाभगवत्यै
२८ श्रीनिर्मलापुष्पाये
२९ श्रीनिर्मलाचक्रायै
३० श्रीनिर्मलास्वयंभुवे
३१ श्रीनिर्मलाशिवायै
३२ श्रीनिर्मलासत्यै
३३ श्रीनिर्मलापार्वत्यै
३४ श्रीनिर्मलासीतायै
३५ श्रीनिर्मलायोगेश्वर्यै
३६ श्रीनिर्मलामूर्त्यै
३७ श्रीनिर्मलालक्ष्म्यै
३८ श्रीनिर्मलास्तुत्यै
३९ श्रीनिर्मलामरियायै
४० श्रीनिर्मलारामदासायै
४१ श्रीनिर्मलाचित्तायै
४२ श्रीनिर्मलावराहायै

४३ श्रीनिर्मलागजायै
४४ श्रीनिर्मलागरुडायै
४५ श्रीनिर्मलाशेषायै
४६ श्रीनिर्मलानन्दिन्यै
४७ श्रीनिर्मलाहंसायै
४८ श्रीनिर्मलासर्वशक्तिमय्यै
४९ श्रीनिर्मलास्थिरायै
५० श्रीनिर्मलाभवान्यै
५१ श्रीनिर्मलाकुंडलिनीजागृत्यै
५२ श्रीनिर्मलापद्मायै
५३ श्रीनिर्मलासहजायै
५४ श्रीनिर्मलाबुद्ध्यै
५५ श्रीनिर्मलापरमेश्वर्यै
५६ श्रीनिर्मलामालिन्यै
५७ श्रीनिर्मलामुद्रायै
५८ श्रीनिर्मलाराज्ञ्यै
५९ श्रीनिर्मलाअनंतायै
६० श्रीनिर्मलामातायै
६१ श्रीनिर्मलादेव्यै
६२ श्रीनिर्मलाभैरव्यै
६३ श्रीनिर्मलामय्यै
६४ श्रीनिर्मलाअजायै
६५ श्रीनिर्मलागोमातायै
६६ श्रीनिर्मलासिन्धवे
६७ श्रीनिर्मलाअंबायै
६८ श्रीनिर्मलाकाल्यै
६९ श्रीनिर्मलाक्रियाशक्त्यै
७० श्रीनिर्मलाइच्छाशक्त्यै
७१ श्रीनिर्मलाज्ञानशक्त्यै
७२ श्रीनिर्मलाप्राणशक्त्यै
७३ श्रीनिर्मलामनःशक्त्यै
७४ श्रीनिर्मलाब्रह्मशक्त्यै
७५ श्रीनिर्मलाआदिशक्त्यै
७६ श्रीनिर्मलाओंकारायै
७७ श्रीनिर्मलाशान्तये
७८ श्रीनिर्मलाइन्द्रायै
७९ श्रीनिर्मलावायवे
८० श्रीनिर्मलाअग्नये
८१ श्रीनिर्मलावरुणायै
८२ श्रीनिर्मलाचंद्रायै
८३ श्रीनिर्मलासूर्यायै
८४ श्रीनिर्मलानागकन्यायै
८५ श्रीनिर्मलामण्डलायै
८६ श्रीनिर्मलात्रिकोणायै
८७ श्रीनिर्मलारुद्रायै
८८ श्रीनिर्मलाकुलायै
८९ श्रीनिर्मलाकृष्णदेहायै
९० श्रीनिर्मलाजीवायै

९१ श्रीनिर्मलाऋषये
९२ श्रीनिर्मलासावित्र्यै
९३ श्रीनिर्मलाऋद्ध्यै
९४ श्रीनिर्मलासिद्ध्यै
९५ श्रीनिर्मलाईश्वर्यै
९६ श्रीनिर्मलारामायै
९७ श्रीनिर्मलाचारुरूपायै
९८ श्रीनिर्मलासुखायै
९९ श्रीनिर्मलामोक्ष-प्रदायिन्यै
१०० श्रीनिर्मलापिंगलायै
१०१ श्रीनिर्मलाभक्तये
१०२ श्रीनिर्मलासुन्दर्यै
१०३ श्रीनिर्मलामातृकायै
१०४ श्रीनिर्मलाअर्धबिन्दवे
१०५ श्रीनिर्मलाबिन्दवे
१०६ श्रीनिर्मलावलयायै
१०७ श्रीनिर्मलाश्वेतायै
१०८ श्रीनिर्मलातेजस्यै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीनिर्मला नमस्कार

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीआज्ञाचक्रस्वामिने
२ श्रीसूर्याय
१ श्रीमहानिर्मलामहत्यै
२ श्रीमहाराज्ञीआदिशक्त्यै
३ श्रीमहाग्रासामहासनायै
४ श्रीमहात्रिपुरसुंदर्यै
५ श्रीसर्वेश्वरी-सर्वमय्यै
६ श्रीसवमंत्रस्वरूपिण्यै
७ श्रीजयत्सेनात्रिपुरेश्यै
८ श्रीमाहेश्वरीमहादेव्यै
९ श्रीमहालक्ष्मीमहाकाल्यै
१० श्रीसर्वाधारामहारूपायै
११ श्रीपरापरामहापूज्यायै
१२ श्रीमहापातकनाशिन्यै
१३ श्रीमहामायामहासत्त्वायै
१४ श्रीमहाशक्तिमहारथिन्यै
१५ श्रीमहाभोगाराज्यलक्ष्म्यै
१६ श्रीमहावीर्यामहाबुद्ध्यै
१७ श्रीमहाकलामहासिद्ध्यै
१८ श्रीमहायोगेश्वरेश्वर्यै
१९ श्रीमहामंत्रायै
२० श्रीशिवमूर्तये
२१ श्रीमहाकैलासनिलयायै
२२ श्रीमहाभैरवपूजितायै
२३ श्रीमाहेश्वरीमहाकल्पायै
२४ श्रीमहाताण्डवसाक्षिण्यै
२५ श्रीविश्वमाताविश्वग्रासायै
२६ श्रीनिराकारानिर्विकारायै
२७ श्रीनिर्मलाम्बिकाप्रकृत्यै
२८ ओम्त्वमेवपरमेश्वर्यै
२९ श्रीमहाकामेशमहिष्यै
३० श्रीमहायोगिनीमालिन्यै
३१ श्रीमहामातानिर्मलामातायै
३२ श्रीआदिदेवीश्रीवास्तवायै

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीआदिशक्ति की प्रार्थना

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि।
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा।
चिदानंदाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे ।।१।।

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना ।
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा।
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ।।२।।

सौंदर्यलहरी से

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं।
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।।
विश्वेशवंद्या भवती भवन्ति।
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ।।३।।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ।।४।।

देवीमाहात्म्य के नारायणी स्तोत्र से

न मंन्त्र नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।।५।।

आदिशंकराचार्य रचित देव्यपराधक्षमापण स्तोत्र से

श्री अदिशक्ति की स्तुति

१ श्री आदिशक्ति, यु आर द प्रिंसिपल दॅट क्रिएटेड द फोर्टीन भुवनाज् ऑफ युनिवर्स; यु आर बियॉन्ड अवर कॉम्प्रिहेन्शन.

-श्री आदिशक्ति नमो नमः

२ द ओऽम् इज युवर साउण्ड विच रिजोनेटस् युवर थ्री पॉवर्स थ्रू आउट द युनिवर्स. (अ-महाकाली, ऊ-महासरस्वती, म्-महालक्ष्मी)

३ द जॉय ऑफ युवर अटेंशन (चित्विलास) इज एक्स्प्रेस्ड इन ऑल युवर क्रिएशन.

४ इन द प्ले ऑफ द डिव्हाईन, गॉड ऑलमाइटी ॲक्टस् बाय युवर पॉवर.

५ द ब्रेथ ॲन्ड डिझायर ऑफ श्री सदाशिव आर वन विथ यू.

६ द परम-चैतन्य, वीच इज युवर पॉवर, मेकस् द स्टार्स ॲन्ड द हेवन्स रिंग विथ जॉय फॉर द डिलाईट ऑफ श्री सदाशिव.

७ इनडीड, यू आर द सोर्स ऑफ कॉस्मिक एनर्जी. धिस पॉवर रेडिएटस् फ्रॉम यू ॲज द फाईनेस्ट इथर्स ऑफ डिवाईन लव्ह.

८ बियॉन्ड मॅटर, बियॉन्ड कॉन्सीयसनेस, द ग्रेस ऑफ श्री आदिशक्ति इज व्हेअर रिॲलिटी केन बी नोन्.

९ यू आर द इनएफेबल. द इम्मेझरेबल. वी कॉल यु न्यूमा, डिवाईन ब्रेथ, द लिव्हिंग वॉटर्स, येट यु आर सो मच् मोअर दॅन धिस. ओनली द डेइटिज् हॅव द दर्शन ऑफ युवर ग्रेटर पॉवर्स.

१० गॉड ऑलमाइट इन हिज डान्स युनिफाईज् विथ युवर कम्प्लीट पॉवर ॲज् श्री आदिशक्ति.

११ यु आर द प्रीमॉर्डियल पॉवर ऑफ द होली स्पिरीट दॅट मदर्ड श्री जिझस.

१२ यु आर द क्रिएट्रिक्स, द फेमिनन क्रिएटिव्ह एनर्जी दॅट सस्टेन्स द पीस ऑफ गॉड ऑलमाइटी.

१३ थ्रू युवर महालक्ष्मी पॉवर वी एक्स्पीरियन्स द टाईमलेस पीस ऑफ द फोर्थ डायमेन्शन्. (तुरीया)

१४ श्री आदिशक्ति, यु एनेबल गॉड ऑल्माइटी टू डू हिज् सॅक्रेड वर्कस्. व्हेरीली, यु आर द मोस्ट सबलाईम पॉवर इन द कॉसमॉस.

१५ गॉड ऑलमाइटी टेकस् चार्ज इन ए वे दॅट इज स्विफ्ट ॲन्ड सरप्राईजिंग, इफ अेनिवन ॲक्टस् अगेन्स्ट श्री आदि शक्ति.

१६ श्री गणेशा, युवर फर्स्ट क्रिएशन, रिसोनेटस् इन द कार्बन ॲटम, द इसेन्स ऑफ लाईफ. मे ही रीअवेकन् इनोसन्स ॲन्ड विज़्डम् इन द एव्हरी सेल्स ऑफ ह्युमनकाईंड.

१७ यु क्रिएटेड़ द वर्ल्ड ऑफ द डिव्हाईन, ॲन्ड द वर्ल्ड ऑफ द इवॉल्विंग. मे अवर इवोल्युशन मर्ज विथ धिस डिवाईन प्ले.

१८ ओ श्री आदिशक्ति, इवोल्युशन इज द फोर्स दॅट गिव्हज् राईज टु युवर डिव्हाईन प्ले इन लाईव्हज् ऑफ ह्युमॅनिटी.

१९ द आदि कुण्डलिनी फॉर्म्ड द प्रिमॉर्डियल चक्राज्, ॲन्ड ओपन्ड् द डोअर्स टू द अनफोल्डिंग ऑफ लाईफ.

२० इट इज् यु हू क्रिएटेड द कुण्डलिनी ऑफ अवर मदर अर्थ.

२१ द सिम्प्लेस्ट फ्लॉवर हॅज इटस् फ्रॅक्शन ऑफ यु. द ग्रॅन्डेस्ट ट्री हॅज इटस् शेअर ॲज् वेल.

२२ ऑल नेचर्स क्रिचर्स आर युवर्स, फ्रॉम द ब्युटि ऑफ मदर अर्थस् ग्रीन सारी टु द मॅजेस्टी ऑफ द टायगर ॲन्ड द लॉयन.

२३ द ग्रॅविटी ऑफ मदर अर्थ, ॲन्ड ऑफ ऑल युवर हेवनली स्फिअर्स, आर कन्ट्रोलड़ बाय युवर पॉवर मॅग्नीफिशट.

२४ युवर पॉवर, द परम–चैतन्य, ॲडजस्टस नेचर ॲन्ड इटस् एलिमेन्टस्, ॲन्ड इटस् ऑल–पर्वेडिंग पॉवर ओपन्स अस टू युवर बेनीवॉलन्स.

२५ श्री आदिशक्ति इज द आर्टिस्टीक क्रिएटर ऑफ द मदर अर्थ ॲन्ड दोज् हू रिस्पेक्ट द मदर अर्थ आर लव्हड़ बाय यू.

२६ श्री आदिशक्ति, द लॅन्ड ऑफ द विशुद्धि इज वन आसपेक्ट ऑफ युवर वास्ट क्रिएशन. यु विल रेज द व्हायब्रेशन्स टु ट्रान्सफॉर्म द पीपल ऑफ धिस लॅन्ड.

२७ द नेटिव्ह पिपल्स ऑफ अमेरीका वरशिप्ड श्री आदि शक्ति ॲज द ग्रेट मदर ॲन्ड दे रिस्पेक्टेड द लॅन्ड ॲज सेक्रेड. मे धिस ॲटिट्यूड रिटर्न टू ऑल अदर्स हू लिव्ह हिअर ॲन्ड एन्जॉय द लॅन्डस् बाउन्टी.

२८ द मिस्ट्री ऑफ लिव्हिंग प्रोसेसेस् इज् युवर्स ॲन्ड युवर्स अलोन, ॲन्ड कॅननॉट बी डुप्लिकेटेड बाय एनी पर्सनॅलिटी. लेट ह्युमॅनिटी बी अवेअर ऑफ धिस.

२९ ओ ऋतंभरा प्रज्ञा, यु आर वन ऑफ द पॉवर्स ऑफ श्री आदि शक्ति, यु आर द पॉवर ऑफ ऑल लिव्हिंग वर्क.

३० यु रेग्युलेट ॲन्ड ऑर्गनाइज् ऑल लाईफ.

३१ श्री आदि शक्ति, यु केम ॲज् सुरभि, द डिवाईन विश फुलफिलिंग काऊ इमर्जिंग फ्रॉम द विष्णुलोका ॲट गोकुल, व्हेअर श्री कृष्णा स्पेंट हिज् चाईल्डहूड.

३२ श्री आदिशक्ति, लेट द फेमिनाईन् क्वालिटीज ऑफ द सहज योगिनीज् मॅनिफेस्ट थ्रू द ब्यूटी ऑफ मेड़िटेशन, सरंडर ॲन्ड सेल्फ –एस्टीम्.

३३ यु गिव्ह टु विमेन द रिगल जेन्टलनेस ऑफ शालीनता टू केअर फॉर देअर

३४ युवर क्वालिटी ऑफ शारदा-देवी गिव्हज् अथोरीटी ओव्हर द ट्रूथ, आर्ट, म्युझिक ॲन्ड ड्रामा.

३५ यु अल्सो केम ॲज् सति-देवी, इस्टॅब्लिशींग अ रॉयल धर्मा टू विच वी ॲस्पायर.

३६ ओ वाक्-देवी, गॉडेस ऑफ लँगवेज, यु गिव्ह इन्स्पीरेशन टू द ग्रेट पोएटस् ॲन्ड सेंटस्.

३७ श्री आदिशक्ति, टु डिस्क्राईब यु इज द वर्क ऑफ पोएटस् ॲन्ड सेन्टस्, येट वर्डस् कॅननॉट इव्हन बीगिन टू एक्स्प्रेस युवर मॅग्नीफिशन्स.

३८ यु आर परा-शक्ति, द पॉवर बियॉन्ड पॉवर्स.

३९ गिव्ह अस, ओ श्री आदि शक्ति, ग्रेटर ह्युमॅलिटी सो दॅट वी कॅन गेन सम स्मॉल ग्लिंप्ज् ऑफ युवर ग्लोरी.

४० मेक अस लाईक द सुफिज् ॲन्ड ग्रॉस्टिक्स ॲडॉरिंग यु ॲट एवरी मोमेंट.

४१ युवर पॉवर ऑफ महालक्ष्मी ब्रिजेस ओव्हर द व्हॉईड़ टू अलाउ द कुण्डलिनी ऑफ द सीकर्स टु असेंड्.

४२ थॅन्क यू, ओ श्री आदिशक्ति, फॉर द सीकिंग विच ब्रॉट अस टू सहज योगा. यू नाउ लिफ्ट अप ह्युमॅनिटी इन टू द ओमेगा ऑफ द लास्ट जजमेंट.

४३ वी प्रे दॅट श्री आदिशक्तिज् लव्ह कन्टिन्युज टू प्रोटेक्ट ऑल द सेन्टस् ॲन्ड सीकर्स अराउंड द वर्ल्ड.

४४ श्री आदिशक्ति, युवर वर्क इज ग्रेटर दॅन एनी, यु क्रिएटेड द पीठाज्, द चक्राज्, नेचर ॲन्ड ह्युमॅनिटी, ॲन्ड इटस् सटल वर्किंगस्. मे द कॉम्प्लेक्सिटी ऑफ युवर वर्क हंबल अस डाउन कम्प्लिटली.

४५ युवर लव्ह गिव्हज् पॉवर टु द बंधन, विच डायरेक्टस् द व्हायब्रेशन्स.

४६ युवर पॉवर ऑफ कुण्डलिनी ब्रिंग्ज फ्रीडम दॅट इज डिव्हाईन. इट इज द ओनली टू फ्रिड़म.

४७ फ्लो थ्रू अस फ्रीली. हेल्प अस गिव्ह व्हायब्रेशन्स टू ऑल विथ युवर फोटोग्राफ ऑफ लिव्हिंग व्हायब्रेशन्स.

४८ युवर महामाया स्वरुपा अलाऊज अस टु बी निअर यू ॲन्ड इट् शील्डस् अस फ्रॉम द ऑसम् माईट दॅट फ्लोज् फ्रॉम यू.

४९ श्री आदिशक्ति, प्लीज गिव्ह अस डीपर पॉवर्स ऑफ इन्ट्रॉस्पेक्शन, सो दॅट वी बिकम सेल्फ -क्लिन्जिंग ॲन्ड सेल्फ -अवेअर.

५० यु आर द मदर हु डिजायर्ड दॅट ह्युमन बिईंग्ज बी मिरर्स फॉर गॉड ऑलमाइटी.

५१ यु हॅव क्राफ्टेड ब्युटिफूल मिरर्स ऑफ द स्पिरिट इन द सहज योगिज् टू हेल्प रिडीम् ह्युमॅनिटी.

५२ युवर कम्पॅशन प्रोटेक्टस् अस फ्रॉम द राथ ऑफ गॉड ऑलमाइटी.

५३ थ्रु माया, ह्युमॅनिटी फोरगॉट द प्रिन्सीपलस ऑफ लाईफ. थ्रू सहज योगा, ह्युमॅनिटी नाऊ रिमेंबर्स ॲन्ड ॲबजॉर्ब्स द व्हायब्रेशन्स ऑफ श्री आदिशक्ति.

५४ मे यूवर इवोल्यूशनरी फोर्स ब्रिंग ह्युमॅनिटी टु द इन्स्पायर्ड़ एक्झिसटन्स ऑफ द गोल्ड़न एज्.

द फॉलोइंग अैडोरेशन्स (स्तुति) वेअर ॲडेड बाय श्री माताजी हरसेल्फ

५५ यु हॅव डिसएन्टँगलड अस फ्रॉम द क्लचेस् ऑफ फॉल्स प्राईड, जेलसी, ॲटॅचमेंटस्, ग्रीड, फॉल्स आईडेंटिफिकेशन्स ॲन्ड व्हायोलेन्स.

५६ यु हॅव इनकारनेटेड ऑन धिस अर्थ फॉर द लास्ट जजमेंट.

५७ यु आर द सोर्स ऑफ कॉग्नीटिव्ह सायन्स ॲन्ड द टॉर्शन एरिया.

५८ व्हॉटएवर ह्युमन बिईंग्ज प्लॅन, यु डिसमेंटल इट टु डिस्ट्रॉय देअर इगोज्. विथ वन सट्ल मुव्हमेन्ट ऑफ युवर फिंगर, यु डिस्ट्रॉय

पिपल लाईक हिटलर.

५९ यु गिव्ह पॉवरफुल अॅडव्हाईज् विथ सट्ल ह्युमर.

६० यु करेक्ट सहजयोगीज्, नेवर बाय हार्श वर्डस्, बट विथ लविंग, जंटल् अफेक्शन.

६१ यु एक्स्प्लेन द सटल मिनींग ऑफ ऑल द स्क्रिप्चर्स.

६२ यु एक्स्पोज् फाल्सहूड इन एव्हरी डायरेक्ट वेज.

६३ यु डू नॉट नो ऐनी फियर अॅन्ड यु गिव्ह कम्प्लीट सिक्युरिटी टु ऑल सहज योगीज्.

६४ यू रिस्पेक्ट युवर चिल्ड्रेन अॅन्ड लव्ह देम टु मेक देम परफेक्ट मॉडेल्स फॉर द रेस्ट ऑफ ह्युमॅनिटी. यू हॅव गिव्हन सहजयोगीज् सिनलेस फन अॅन्ड अ लाईफ ऑफ कम्प्लीट जॉय.

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री आदिशक्ति की स्तुति (अनुवाद)

१ श्री आदिशक्ति, आप वह तत्त्व है जिसने विश्व में चौदह भुवनों का निर्माण किया। आप मानवी बुद्धि के लिये अगम्य है।

- श्रीआदिशक्त्यै नमो नमः

२ ओम् आपका नाद है जो विश्व की आपकी तीन शक्तियों में तालमेल स्थापित करता है।(अ-महाकाली, उ-महासरस्वती, म-महालक्ष्मी)

३ आपकी सृष्टि में आपके चित्त (चिद्विलास) का प्रकटन है।

४ आपकी दैवी शक्ति के साथ परमात्मा ईश्वरीय लीला को चलाता है।

५ श्रीसदाशिव का श्वास और इच्छा आपसे एकात्म है।

६ परम चैतन्य जो आपकी शक्ति है, ग्रह, नक्षत्र, तारे एवं आकाश का निर्माण करती है, श्री सदाशिव को हर्षित रखने के लिए स्वर्ग आनन्द से गुंजित होता है।

७ वास्तव में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का उद्गम आप ही है। यह शक्ति ईश्वरीय प्रेम के सूक्ष्मतम ईथर के स्वरूप में आपसे वितरित होती है।

८ आपकी कृपा सभी जड पदार्थ एवं चेतना से भी ऊपर है, जहाँ सत्य का ज्ञान हो सकता है।

९ आप अवर्णनीय तथा अमेय है। हम ईश्वरीय श्वास, न्यूमा, जीवित जल, आदि शब्दों से आपका वर्णन करते हैं, पर आप इन सबसे अधिकतम है। केवल देवता ही आपके महान शक्ति का दर्शन कर पाते है।

१० परमात्मा अपने नृत्य में, आपके आदिशक्ति स्वरूप के संपूर्ण शक्ति से एकाकार होते है।

११ आप श्री जिज़स को जन्म देने वाली पवित्र आत्मा की आदिम शक्ति है।

१२ आप सृष्टि का निर्माण करने वाली देवी हैं, जो परमात्मा की शांति स्थिर रखती है।

१३ आपके महालक्ष्मी शक्ति से, हम चौथे आयाम (तुरीया अवस्था) के कालातीत शांति का अनुभव करते है।

१४ आप परमात्मा को उनके पवित्र कार्य के लिए सक्षम बनाती है। नि:संदेह आप ही विश्व में उत्कृष्ट शक्ति हैं।

१५ अगर आपके विरोध में कोई काम करता तो परमात्मा अतीव शीघ्रता से और अचानक, उसको अपने अधीन करते है।

१६ श्रीगणेश, जिनको आपने प्रथम निर्माण किया, जीवन के सत्त्व के रूप में, कार्बन के परमाणु में ध्वनि से स्पन्दित है। आपके कृपा में श्रीगणेश, मानव के प्रत्येक कोशिका में अबोधिता और सुबुद्धि को पुन: जागृत करें।

१७ आपने ईश्वरीय जगत, एवम्, उत्क्रांतिक जगत का निर्माण किया। आपकी कृपा से हमारी उत्क्रांति ईश्वर की लीला से समग्र हो जाए।

१८ मानव मात्र के जीवन में, उत्क्रांति से ही आपकी दैवी लीला का उद्‌भव होता है।

१९ कुण्डलिनी ने आदिचक्रों को स्थापित किया और जीवन के प्रकट होने के द्वार खोले।

२० आपने ही हमारे भूमि माता के कुण्डलिनी का निर्माण किया।

२१ एक साधारण फूल तथा महान वृक्ष में भी आपका अंश स्थित है।

२२ प्रकृति में निर्माण किया हुआ सब-भूमि देवी की हरी साडी की सुंदरता और शेर की शान, आपके अपने है।

२३ भूमि स्थित गुरुत्वाकर्षण तथा आकाशस्थ ग्रह तारों का गुरुत्वाकर्षण आपकी महान शक्ति से सुन्दरता नियंत्रित है।

२४ आपकी शक्ति, परम चैतन्य प्रकृति और उसके पंचभूतों को सम्हालती है और सुन्दरता से आपकी सर्वव्यापी शक्ति हमें आपकी हितकारिता प्रदान करती है।

२५ आपने भूमि माता का कुशलता से निर्माण किया है और उसका आदर करने वाले आपका प्रेम पाते है।

२६ विशुद्धि की भूमि (अमेरिका) आपके महान तथा विस्तृत सृष्टि का एक अंग है। इस देश के लोगों के परिवर्तन के लिए आप चैतन्य लहरियों को बढावा देगी।

२७ अमेरिका देश के आदिवासी जनों ने श्री आदिशक्ति का महामाता के स्वरूप में पूजन किया और भूमि को पवित्र मानकर उसका आदर किया। यह स्वभाव सभी लोगों, जो इस भूमि की दैन्य शक्ति में निर्माण हो जाए, को उपभोगते है।

२८ जीवित प्रक्रिया मानवी बुद्धि को अगम्य है, वह आपकी और केवल आपही की है। अन्य व्यक्ति या विभूति इस प्रक्रिया को दोहरा नहीं सकते। मानवता इस विषय में सचेतन हो जाए।

२९ ओ ऋतंभरा प्रज्ञा, आप श्री आदिशक्ति की एक शक्ति है। आप जीवित कार्य करने वाली शक्ति है।

३० आप जीवन को संघटित और नियमित करती है। -श्रीआदिशक्ति, नमो नम:

३१ आप सुरभि के रूप में विष्णुलोक से गोकुल में प्रकट हुई थीं, जहाँ श्रीकृष्ण बालक के रूप में रहते थे।

३२ आपकी कृपा में सहजयोगिनीयों के स्त्रियोचित गुणों, ध्यान की सुंदरता, समर्पण तथा आत्माभिमान के द्वारा अभिव्यक्त हो जाए।

३३ आपही स्त्रियों को शालीनता की राजसी सौम्यता प्रदान करती है

जिससे वे अपने परिवारों को पालती है और समाज को बनाए रखती है।

३४ आपके शारदा देवी के गुण सत्य, कला कुशलता, और नाटक पर अधिकार प्रदान करते है।

३५ आपने ही सती देवी के रूप में आकर राजधर्म की स्थापना की जिसकी हम अभिलाषा करते है।

३६ हे वाग्देवी, भाषा की देवी, आप महान कवियों एवं संतों को रचना की, प्रेरणा देती हो।

३७ आपका वर्णन करना कवियों का और संतों का कार्य है परंतु आपके महानता की अभिव्यक्ति का आरम्भ भी शब्दों से नहीं हो सकता।

३८ आप पराशक्ति है जो सभी शक्तियों से उत्कृष्ट है।

३९ अपनी कृपा से हमें अधिकाधिक नम्रता दें जिससे, हम आपकी महानता की थोड़ीसी झलक का दर्शन पा सके।

४० आपकी कृपा से हम सूफी और ज्ञानी लोगों जैसे हो जाए, जिससे हर पल हम आपकी स्तुति करने में रत रहें।

४१ आपकी महालक्ष्मी शक्ति से साधकों की कुण्डलिनी शक्ति, भवसागर को लांघती है और उत्थान घटित करती है।

४२ हम आपके आभारी है कि आपने हमारी खोज़ को सहजयोग दिया, हम सहजयोगी हो गए। कृपा करके संपूर्ण मानवता को आप अंतिम निर्णय के उच्चतम स्थिति के लिए उन्नत करिए।

४३ हमारी ये प्रार्थना है कि श्री आदिशक्ति का प्रेम विश्वभर के संतों एवं साधकों की रक्षा करता रहे।

४४ आपका कार्य सबसे महान है। आपने पीठों का, चक्रों का, प्रकृति तथा मानवता का तथा इनके सूक्ष्म कार्य प्रणाली का निर्माण किया।

आपके कार्य की महानता हमारे अन्दर संपूर्ण विनम्रता को जागृत करें।

४५ आपका प्रेम 'बन्धन' को शक्ति देता है जो चैतन्य लहरियों को निर्देशन देता है।

४६ आपकी कुण्डलिनी शक्ति ईश्वरीय स्वतंत्रता लाती है। केवल यह स्वतंत्रता ही वास्तव में सही स्वतंत्रता है।

४७ आपकी शक्ति हममें निरंतर प्रवाहित होती रहे। कृपया हमारी सहायता करें की जिससे आपके फोटो की जीवित चैतन्य लहरी से, हम दूसरे लोगों को चैतन्य लहरी दे सके।

४८ आपका महामाया स्वरूप हमें आपका सान्निध्य देता है और आपसे जो भयकारी महाशक्ति आती है उससे हमारी रक्षा करता है।

४९ कृपया हमें आत्मपरीक्षण की गहन शक्ति दीजिए जिससे हम स्वयं की सफाई करते रहेंगे एवं सतर्क रहेंगे।

५० आप वह माता है जिसने इच्छा की कि मानव मात्र परमात्मा के देखने हेतु आईना स्वरूप बन जाए।

५१ आपने सहजयोगियों में आत्मा के सुंदर आईने की रचना की है जो मानव के उद्धार के हेतु सहायता करेगा।

५२ आपकी करुणा परमात्मा के क्रोध से हमारी रक्षा करती है।

५३ माया के कारण मानव जीवन के तत्त्वों को भूल गया था। सहजयोग के कारण मानव अब उनको स्मरण रखता है एवं आदिशक्ति के चैतन्य लहरियों को शोषित करता है।

५४ आपकी कृपा से उत्क्रांति को घटित करने वाली आपकी शक्ति मानव मात्र को सुवर्ण युग के जीवन में उन्नत करे जिसके लिए मानव प्रेरित है।

५५ आपने झूठ, घमंड, मत्सर, मोह, लालच, गलत पहचान तथा हिंसा से हमें विमुक्त किया है।

५६ आप 'आखरी निर्णय' करने के हेतु इस पृथ्वी पर अवतरित हुई है।

५७ आप संज्ञानात्मक विज्ञान और अज्ञात (टॉर्शन) क्षेत्र का स्रोत है।

५८ मानव के अहंकार को नष्ट करने के लिए उनसे रची हुई योजनाओं को आप बिगाड़ती है। अपनी अंगुली की सूक्ष्म हलचल से आप हिटलर जैसे लोगों का विनाश करती है।

५९ सूक्ष्म विनोद से आप शक्तिशाली उपदेश देती है।

६० कठिन शब्दों के प्रयोग के बजाय आप सहजयोगियों में प्रेम और शालीनता के साथ सुधार लाती है ।

६१ आप सभी शास्त्रों के सूक्ष्म अर्थ का विवेचन करती है।

६२ आप असत्य का पोल खोलने के लिए सीधे तरीकों का प्रयोग करती है।

६३ आप भय की परवाह नहीं करती और सभी सहजयोगियों को आप संपूर्ण सुरक्षा देती है।

६४ अपने बच्चों को मानव के लिए परिपूर्ण आदर्श बनाने हेतु, आप उनको आदर और प्रेम देती है। आपने सहजयोगियों को संपूर्ण पापमुक्त, आनंदमय जीवन दिया।

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

अवर मदर्स प्रेयर

अवर मदर हू आर्ट इन अवर हार्टस्
हैलोड बी दाई नेम
दाई किंगडम कम
दाई विल बी डन
ऑन अर्थ एज इट इज इन हॅवेन
गिव अस दिस डे
दाय डिवाईन वाइब्रेशन्स
एन्ड फारगिव अस अवर ट्रेसपासेस
एज वी फारगिव दोज
हु ट्रेसपास अगेंस्ट अस
ॲन्ड लीड अस नॉट इन टु माया
बट डीलीवर अस फ्रॉम एव्हील
फॉर दाइन इज दी फादर
द चिल्ड्रेन एन्ड दी ग्लोरी
फॉर एवर एन्ड एवर
आमेन

श्री कार्तिकेय पूजा, टौफकिरशन,
जर्मनी, १३ जुलै १९८६

श्रीमाताजी के चरणों में प्रार्थनायें

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।१ ।।

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्ते अहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।
क्षमस्व परमेश्वरि क्षमस्व परमेश्वरि ।।२।।

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।
क्षम्यतां परमेश्वरी क्षम्यतां परमेश्वरि ।।३।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मयादेवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।४।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष परमेश्वरि ।।५।।

गतं दुःखं गतं पापं गतं दारिद्रयमेव च ।
आगतं परमचैतन्यं पुण्योऽहं तव दर्शनात् ।।६।।

सर्वेपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात् ।।७।।

श्रीराजराजेश्वरी के ७९ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीआदिशक्त्यै
२ श्रीपराशक्त्यै
३ श्रीसहस्रारस्वामिन्यै
४ श्रीसर्वचक्रस्वामिन्यै
५ श्रीब्रह्मानंदस्वामिन्यै
६ श्रीसर्व-चक्र पुत्र-गणेश स्थितायै
७ श्रीसप्तचक्रातीतायै
८ श्रीपंच-ब्रह्मासनस्थितायै
९ श्रीनिर्विचारसमाधिप्रदायिन्यै
१० श्रीपरब्रह्मस्वामिन्यै
११ श्रीतुरीया-स्थितिदायिन्यै
१२ श्रीपरमचैतन्यवर्षिण्यै
१३ श्रीप्रथमसृष्टिकारणायै
१४ श्रीसात्त्विक-भावनागम्यायै
१५ श्रीसदाशिवस्य महाशक्त्यै
१६ श्रीशुद्ध-सुरभिवर्षिण्यै
१७ श्रीसत्यस्पंदहर्षदायिन्यै
१८ श्रीसर्व-देवतापदाम्बुज-स्थितायै
१९ श्रीसर्व-राज्ञ्यै
२० श्रीशांकर्यै
२१ श्रीशांभव्यै
२२ श्रीविलंबस्थित्यै
२३ श्रीसहस्रदलपद्मसंस्थितायै
२४ श्रीआनंदपृथुलवनवासिद्विजायै
२५ श्रीसत्यअष्टवा
२६ श्रीशुद्धपवित्रतादानपात्रायै
२७ श्रीमुकुटमणिदायिन्यै
२८ श्रीसम्पूर्णप्रहरिण्यै
२९ श्रीनक्षत्रतारकामंडितशुभवस्त्र-धारिण्यै
३० श्रीस्वर्गीयपुष्पमाधुर्यै
३१ श्रीयेशूमातायै
३२ श्रीसर्वगर्धिनि
३३ श्रीस्वर्गवरेण्यसाम्राज्ञ्यै
३४ श्रीउत्क्रांतिअंतिमस्थितिदायिन्यै
३५ श्रीसुरक्षाबंधनदायिन्यै
३६ श्रीस्वर्णिमरत्नजडितसिंहासन-स्थितायै
३७ श्रीविश्वनिर्मलाधर्मदायिन्यै
३८ श्रीगुरुपददायिन्यै
३९ श्रीकियामासाक्षिण्यै
४० श्रीदिव्यपवनदायिन्यै

४१ श्रीनित्यमहापुष्पायै
४२ श्रीसिदरतअल्मुन्तः
४३ श्रीअरेलम सप्त-स्वर्गनूर जहान
४४ श्रीअरेलमसिंहासिन्यै
४५ श्रीपैगंबरीसहस्रारकमलायै
४६ श्रीसहस्रास्यसुवर्णप्रकाशेसर्ववेश-एकात्मकारिण्यै
४७ श्रीशिवस्यनिवासायै
४८ श्रीकल्कीविजयदायिनी-महाशक्त्यै
४९ श्रीचित्रकूटसुहासिन्यै
५० श्रीसहस्रारेकल्कीएकादश-विनाशक-शक्तिधारिण्यै
५१ श्रीकल्कीश्वेतअश्ववाहनायै
५२ श्रीकल्कीमहालक्ष्म्यै
५३ श्रीमोक्षप्रदायिन्यै
५४ श्रीआदिशक्ति चरणयोगि-सहस्रारशरणदायिन्यै
५५ श्रीसहस्रभानुशीतलप्रकाशदायिन्यै
५६ श्रीशीतलअग्निमनोहृदयचित्त-संगमकारिण्यै
५७ श्रीदिव्यअनुभवदायिन्यै
५८ श्रीप्रकृतिनृत्यमहाशक्त्यै
५९ श्रीब्रह्मांडमध्यस्थायै
६० श्रीमेधासप्तचक्र-जागृति प्रदायिन्यै
६१ श्रीविजयलक्ष्म्यै
६२ श्रीसप्तशृंगिपूजिन्यै
६३ श्रीपरमचैतन्यगंगोत्र्यै
६४ श्रीदेवीज्वालामुखी-आत्मसाक्षात्कारिण्यै
६५ श्रीनवग्रहस्वामिन्यै
६६ श्रीरक्षाकारिण्यै
६७ श्रीनिर्मलामातायै
६८ श्रीसुधासागरमध्यस्थायै
६९ श्रीचन्द्रमण्डलमध्यगायै
७० श्रीचन्द्रनिभायै
७१ श्रीनिर्विकल्पसमाध्यै
७२ श्रीसहस्रारांबुजमध्यस्थायै
७३ श्रीधर्मातीतायै
७४ श्रीकालातीतायै
७५ श्रीगुणातीतायै
७६ श्रीमहाकाल्यै
७७ श्रीमहासरस्वत्यै
७८ श्रीमहालक्ष्म्यै
७९ श्रीमहामायायै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 12

इड़ा नाड़ी (बाईं बाजू)

जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी

इड़ा नाडी के मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीमहाभैरव साक्षात श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

१ ॐ श्रीसिद्धभैरवाय नमो नमः

२ ॐ श्रीबटुकभैरवाय नमो नमः

३ ॐ श्रीकंकालभैरवाय नमो नमः

४ ॐ श्रीकालभैरवाय नमो नमः

५ ॐ श्रीकालाग्निभैरवाय नमो नमः

६ ॐ श्रीयोगभैरवाय नमो नमः

७ ॐ श्रीमहाभैरवाय नमो नमः

८ ॐ श्रीशक्तिभैरवाय नमो नमः

९ ॐ श्रीआनंदभैरवाय नमो नमः

१० ॐ श्रीमार्तंडभैरवाय नमो नमः

११ ॐ श्रीगौरभैरवाय नमो नमः

श्रीमहाकाली के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीमहाकाल्यै
२ श्री कामधेनवे
३ श्रीकामस्वरूपायै
४ श्रीवरदायै
५ श्रीजगदानन्दकारिण्यै
६ श्रीजगत्जीवमय्यै
७ श्रीवज्रकंकाल्यै
८ श्रीशान्तायै
९ श्रीसुधासिन्धुनिवासिन्यै
१० श्रीनिद्रायै
११ श्रीतमस्यै
१२ श्रीनन्दिन्यै
१३ श्रीसर्वानन्दस्वरूपिण्यै
१४ श्रीपरमानन्दरूपायै
१५ श्रीस्तुत्यायै
१६ श्रीपद्मालयायै
१७ श्रीसदापूज्यायै
१८ श्रीसर्वप्रियंकर्त्र्यै
१९ श्रीसर्वमंगलायै
२० श्रीपूर्णायै
२१ श्रीविलासिन्यै
२२ श्रीअमोघायै
२३ श्रीभोगवत्यै
२४ श्रीसुखदायै
२५ श्रीनिष्कामायै
२६ मधुकैटभहंत्र्यै
२७ महिषासुरघातिन्यै
२८ रक्तबीजविनाशिन्यै
२९ नरकान्तकायै
३० श्रीउग्रचण्डेश्वर्यै
३१ श्रीक्रोधिन्यै
३२ श्रीउग्रप्रभायै
३३ श्रीचामुण्डायै
३४ श्रीखड्गपालिन्यै
३५ श्रीभास्वरासुर्यै
३६ शत्रुमर्दिन्यै
३७ श्रीरणपण्डितायै
३८ श्रीरक्तदन्तिकायै
३९ श्रीरक्तप्रियायै
४० श्रीकपालिन्यै
४१ श्रीकुरुकुलविरोधिन्यै
४२ श्रीकृष्णदेहायै

४३ श्रीनरमुण्डल्यै
४४ श्रीगलद्रुधिराभूषणायै
४५ श्रीप्रेतनृत्यपरायणायै
४६ श्रीलोलजिह्वायै
४७ श्रीकुण्डलिन्यै
४८ श्रीनागकन्यायै
४९ श्रीपतिव्रतायै
५० श्रीशिवसंगिन्यै
५१ श्रीविसंग्यै
५२ श्रीभूतपतिप्रियायै
५३ श्रीप्रेतभूमिकृतालयायै
५४ दैत्येन्द्रमर्दिन्यै
५५ श्रीचंद्रस्वरूपिण्यै
५६ श्रीप्रसन्नपद्मवदनायै
५७ श्रीस्मेरवक्त्रायै
५८ श्रीसुलोचनायै
५९ श्रीसुदन्त्यै
६० श्रीसिन्दुरारुणमस्तकायै
६१ श्रीसुकेश्यै
६२ श्रीस्मितहास्यायै
६३ श्रीमहत्कुचायै
६४ श्रीप्रियभाषिण्यै
६५ श्रीसुभाषिण्यै
६६ श्रीमुक्तकेश्यै
६७ श्रीचंद्रकोटिसमप्रभायै
६८ श्रीअगाधरूपिण्यै
६९ श्रीमनोहरायै
७० श्रीमनोरमायै
७१ श्रीवश्यायै
७२ श्रीसर्वसौंदर्यनिलयायै
७३ श्रीरक्तायै
७४ श्रीस्वयम्भुकुसुमप्राणायै
७५ श्रीस्वयम्भुकुसुमोन्मदायै
७६ श्रीशुक्रपूज्यायै
७७ श्रीशुक्रस्थायै
७८ श्रीशुक्रात्मिकायै
७९ श्रीशुक्रनिन्दकनाशिन्यै
८० निशुम्भशुम्भसंहंत्र्यै
८१ श्रीवन्हिमंडलमध्यस्थायै
८२ श्रीवीरजनन्यै
८३ श्रीत्रिपुरमालिन्यै
८४ श्रीकराल्यै
८५ श्रीपाशिन्यै
८६ श्रीघोररूपायै
८७ श्रीघोरदंष्ट्रायै
८८ श्रीचण्ड्यै
८९ श्रीसुमत्यै
९० श्रीपुण्यदायै

९१ श्रीतपस्विन्यै
९२ श्रीक्षमायै
९३ श्रीतरंगिन्यै
९४ श्रीशुद्धायै
९५ श्रीसर्वेश्वर्यै
९६ श्रीगरिष्ठायै
९७ श्रीजयशालिन्यै
९८ श्रीचिन्तामण्यै
९९ श्रीअद्वैतभोगिन्यै
१०० श्रीयोगेश्वर्यै
१०१ श्रीभोगधारिण्यै
१०२ श्रीभक्तभावितायै
१०३ श्रीसाधकानन्दसन्तोषायै
१०४ श्रीभक्तवत्सलायै
१०५ श्रीभक्तानन्दमय्यै
१०६ श्रीभक्तशंकर्यै
१०७ श्रीभक्तिसंयुक्तायै
१०८ श्रीनिष्कलंकायै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीभैरव नाथ (आरचेंजल मायकेल) के २१ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीमहाभैरवाय
२ श्रीबटुकभैरवाय
३ श्रीसिद्धभैरवाय
४ श्रीकंकालभैरवाय
५ श्रीकालभैरवाय
६ श्रीकालाग्निभैरवाय
७ श्रीयोगभैरवाय
८ श्रीशक्तिभैरवाय
९ श्रीआनंदभैरवाय
१० श्रीमार्तंडभैरवाय
११ श्रीगौरभैरवाय
१२ श्रीबालभैरवाय
१३ श्रीबटुभैरवाय
१४ श्रीश्मशानभैरवाय
१५ श्रीपुरभैरवाय
१६ श्रीतरुणभैरवाय
१७ श्रीपरमानंदभैरवाय
१८ श्रीसुरानंदभैरवाय
१९ श्रीज्ञानानंदभैरवाय
२० श्रीउत्तमानंदभैरवाय
२१ श्रीअमृतानंदभैरवाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीमहागणेश के मंत्र (बीजमंत्र)

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महागणेश साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

ॐ स्वाहा
श्रीम् स्वाहा
ॐ श्रीम् ह्रीम् स्वाहा
ॐ श्रीम् ह्रीम् क्लीम् स्वाहा
ॐ श्रीम् ह्रीम् क्लीम् ग्लौम् स्वाहा
ॐ श्रीम् ह्रीम् क्लीम् ग्लौम् गम् स्वाहा
ॐ श्रीम् ह्रीम क्लीम् ग्लौम् इत्यंतः गम् स्वाहा
ॐ वर वरदा इत्यंतः स्वाहा
सर्वजनं मे वशं इत्यंतः स्वाहा
अनय स्वाहा इत्यंतः
ॐ ऐम् ह्रीम् क्लीम् चामुंडायै विच्चे नमः

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्री महावीर के २१ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीवर्धमानाय
२ श्रीमहावीराय
३ श्रीज्ञातनंदनाय
४ श्रीनिर्ग्रन्थाय
५ श्रीश्रमणाय
६ श्रीजयाय
७ श्रीतरवति
८ श्रीबहुरूपिणे
९ श्रीचामुंडाय
१० श्रीअपराजिताय
११ श्रीपद्मावते
१२ श्रीअमराय
१३ श्रीसिद्धयिक
१४ श्रीभैरवाय
१५ श्रीविमलेश्वराय
१६ श्रीमणिभद्राय
१७ श्रीब्रह्मशान्त्यै
१८ श्रीक्षेत्रपालाय
१९ श्रीधर्मेन्द्राय
२० श्रीअनंगृत्त
२१ श्रीसर्वहाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

विषय 13

पिंगला नाड़ी (दाईं बाजू)

हुं हनुमते रुद्रात्मके हुं फट्

श्रीमहासरस्वती की प्रार्थना

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृत्ता।
या वीणा-वरदण्डमंडित-करा, या श्वेत-पद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वंदिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

श्रीहनुमान स्तुति

ॐ त्वमेव साक्षात् श्रीहनुमान साक्षात् श्रीआदिशक्ति माताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनाम् अग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।

श्री रामजयम्।
(श्री हनुमानजी की प्रार्थना)

ॐ श्री आंजनेयाय नमः।

सर्वारिष्टनिवारकं शुभकरं पिंगाक्षं पापापहम्।
सीतन्वेषणतत्परं कपिवरं कोटीन्दुसूर्यप्रभम्।।

लंकाद्वीपभयंकरं सकलदं सुग्रीव-सम्मानितम्।
देवेन्द्रादिसमस्तदेवविनुतं काकुत्स्थदूतं भजे ।।

ख्यातः श्रीरामदूतः पवनतनुजवः पिंगलाक्षः सुमेधः ।
सीताशोकापहारी दशमुखविजयी लक्ष्मणप्राणदाता ।।

द्रोणाद्रेर्भेषजाद्रेर्लवणजलनिधेर्लंघने दीक्षितश्च।
वीरः श्रीमान् हनूमान् मम मनसि सदा कार्यसिद्धिं तनोतु ।।

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वं अरोगता।
अनघं वाक्पटुत्वं च हनुत्स्मरणात् भवेत् ।।

श्रीहनुमान चालिसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु। जो दायकु फल चारि ।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहूँ लोक उजागर ।
राम दूत अतुलित बलधामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ।
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुति के संगी ।
कंचन बरन विराज सुवेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजै ।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । रामलखन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ।।
लाय संजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाए ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बडोई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं । अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिग्पाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेश्वर भय सब जग जाना ।।
युग सहस्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ।।

दुर्गम काज जगत् के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिन पैसारे ।।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डरना ।।
आपन तेज सम्हारौ आपै । तीनों लोक हांकते कांपै ।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवैं । महावीर जब नाम सुनावैं।
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुडावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं ।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तु साजा ।।
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ।
चारों युग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत् उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस वर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहौ रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै । जन्म जन्म के दु:ख बिसरावै ।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई । जहें जनम हरिभक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरूदेव की नांई ।।
यह शत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बन्दि महासुख होई ।।
जो यह पढै हनुमान चालीसा। होय सिद्धी साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ।।

दोहा :- पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
रामलखन सीता सहित, हृदय बसहु सुरभूप ।।

श्रीमारुति स्तोत्र

भीमरुपी महारुद्रा, वज्रहनुमान मारुती।
वनारी अंजनीसूता, रामदूता प्रभंजना ।।१।।

महाबळी प्राणदाता, सकळा उठवी बळें।
सौख्यकारी दुःखहारी, धूर्त वैष्णव गायका ।।२।।

दीननाथा हरीरुपा, सुन्दरा जगदतंरा।
पातालदेवताहन्ता, भव्य सिन्दूरलेपना ।।३।।

लोकनाथा जगन्नाथा, प्राणनाथा पुरातना।
पुण्यवन्ता पुण्यशीला, पावना परितोषका ।।४।।

ध्वजांगे उचली बाहो, आवेशें लोटला पुढे।
काळाग्नी काळरुद्राग्नि, देखता कांपती भये ।।५।।

ब्रह्माण्डे माईली नेणों, आंवळे दन्तपंगती।
नेत्राग्नी चालती ज्वाळा, भ्रुकुटी ताठिल्या बळे ।।६।।

पुच्छ तें मुरडिलें माथां, किरीटी कुंडले बरीं।
सुवर्ण कटि कांसोटी, घंटा किंकिणी नागरा ।।७।।

ठकारे पर्वता ऐसा, नेटका सडपातळू।
चपलांग पाहतां मोठें, महाविद्युल्लतेपरि ।।८।।

कोटिच्या कोटि उड्डाणें, झेपावें उत्तरेकडे।
मन्द्राद्रीसारखा द्रोणू क्रोधे उत्पाटिला बळे ।।९।।

आणिला मागुती नेला, आला गेला मनोगति।
मनासी टाकिलें मागें, गतिसी तुलना नसे ।।१०।।

अणुपासोनि ब्रह्मांडा ऐवढा होत जातसे।
तयासी तुलना कोठे, मेरुमन्दार धाकुटे ।।११।।

ब्रम्हांडाभोंवतें वेढे, वज्रपुच्छे करुं शके।
तयासि तुलना कैंची, ब्रह्माण्डी पाहतां नसे ।।१२।।

आरक्त देखिलें डोळां, ग्रासिलें सूर्यमण्डळा।
वाढतां वाढतां वाढे, भेदिले शून्यमण्डळा ।।१३।।

धनधान्य पशुवृद्धी, पुत्रपौत्र समस्तही।
पावती रूपविद्यादि, स्तोत्रपाठें करुनिया ।।१४।।

भूतप्रेत समंधादी, रोगव्याधि समस्तही।
नासति तुटति चिन्ता आनन्दे भीमदर्शने ।।१५।।

हे धरा पंधरा श्लोकी, लाभलि शोभलि बरी।
दृढदेहो निसंदेहो, संख्या चन्द्रकला गुणें ।।१६।।

रामदासीं अग्रगण्यु, कपिकुळासि मंडणू।
रामरूपी अन्तरात्मा, दर्शनें दोष नासती ।।१७।।

इतिश्रीरामदासकृतं संकटनिरसनं मारुतिस्तोत्रं संपूर्णम्।।

श्रीहनुमानजी के १०८ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीहनुमते
२ श्रीबजरंगबलये
३ श्री रामदूताय
४ श्रीपवनसुताय
५ श्री कपीशाय
६ श्रीअंजनीपुत्राय
७ श्रीमहावीराय
८ श्रीशंकर-सुवनाय
९ श्रीविद्यावते
१० श्रीकांचन-वर्णाय
११ श्रीविकट-रूपाय
१२ श्रीभीमाय
१३ श्रीराम-प्रियाय
१४ श्रीरामदासाय
१५ श्रीबलवते
१६ श्रीसुग्रीव-मित्राय
१७ श्रीराम-द्वारपालाय
१८ भूत-पिशाचनाशकाय
१९ श्रीसर्व-व्याधिहराय
२० श्रीसंकट-विमोचकाय
२१ श्रीरामकार्यातुराय
२२ श्रीअमितजीवनफलप्रदायकाय
२३ श्रीअष्टसिद्धिनवनिधिदायकाय
२४ श्रीरोम-रोमरामनामधारिणे
२५ श्रीसर्व-जगत्प्रकाशदायकाय
२६ श्रीराम-रस-दायकाय
२७ श्रीरघुवीर-स्तुताय
२८ श्रीहरिभक्तिदायकाय
२९ श्रीमहा-मन्त्र पठनहर्षिताय
३० श्रीमहा-सुखाय
३१ श्रीसहज-हृदयवासिने
३२ श्रीमंगल-मूर्तिरूपाय
३३ श्रीसुरभूपाय
३४ कुमतिनिवारकाय
३५ श्रीगिरिवर-बलाय
३६ श्रीबलवीराय
३७ लंकेश-गृहभंजनाय
३८ श्रीतुलसीदासस्तुताय
३९ श्रीनिर्मल-हर्षाय
४० श्रीसहज-ध्वज-विराजिताय
४१ श्रीगदा-हस्ताय
४२ श्रीसहज-संघरक्षकाय

४३ श्रीसंजीवनीउपलब्धिकारकाय
४४ श्रीलक्ष्मण-प्राणदात्रे
४५ श्रीराम-चरित्र वंदनाय
४६ श्रीअतुलित-बल-धाम्ने
४७ श्रीज्ञान-गुणसागराय
४८ श्रीकुंचित-केशाय
४९ श्रीविक्रमाय
५० श्रीमरुत्-नंदनाय
५१ श्रीदुःख-भंजनाय
५२ अति-चतुराय
५३ असुरनिकंदनाय
५४ श्रीसिंहाय
५५ श्रीगोस्वामिने
५६ श्रीरामभक्ताय
५७ श्रीभक्तिस्वरूपाय
५८ श्रीजगद्वंदिताय
५९ श्रीकेसरीनन्दनाय
६० श्रीमहायोगिने
६१ श्रीसिंदूरलेपिताय
६२ श्रीसनातनाय
६३ श्रीवनचराय
६४ श्रीभाग्यविधात्रे
६५ श्रीकृपानिधानाय
६६ श्रीमहाराजाय
६७ श्रीराम-भजनरसिकाय
६८ श्रीगर्विताय
६९ श्रीबल-भीमाय
७० श्रीचिरंजीविने
७१ श्रीऊर्ध्वगामिने
७२ श्रीसूक्ष्मरूपिणे
७३ श्रीसीताजीवन-हेतुकाय
७४ श्रीरामाशीर्वादिताय
७५ श्रीनिष्कलंकाय
७६ श्रीभयंकराय
७७ श्रीचंद्र-सूर्याग्निनेत्राय
७८ श्रीसीता-अन्वेषकाय
७९ रोग नाशकाय
८० श्रीमनोरथसम्पूर्णकाय
८१ श्रीमोक्ष-द्वाराय
८२ श्रीभरत-सम-प्रियाय
८३ श्रीजलधि-लंघिताय
८४ श्रीप्रसिद्धाय
८५ श्रीगुरवे
८६ श्रीयंत्रिणे
८७ श्रीस्वर-सुन्दराय
८८ श्रीसुमंगलाय
८९ श्रीब्रह्म-चारिणे
९० श्रीरुद्रावताराय

९१ श्रीवायु-वाहनाय
९२ अहंकार-खंडकाय
९३ श्रीवैकुण्ठ-भजनप्रियाय
९४ श्रीसन्तसहायाय
९५ श्रीपिंगलाय
९६ श्रीसेतुबंधविशारदाय
९७ श्रीभानुग्रासाय
९८ श्रीविवेकदायकाय
९९ श्रीभक्ति-शक्तिसमाधिकारिणे
१०० श्रीफलाहारप्रसन्नाय
१०१ श्रीमनोजवाय
१०२ श्रीवज्र-देहाय
१०३ श्रीदेवदूताय
१०४ श्रीनिर्मला-दूताय
१०५ श्रीपवन-गति-भ्रमणाय
१०६ श्रीजानकी-मातासमाचारिणे
१०७ श्रीनिर्मलाभक्ताय
१०८ श्रीनिर्मलाप्रियाय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीसूर्य के १२ नाम

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१	श्रीमित्राय	७	श्रीहिरण्य-गर्भाय
२	श्रीरवये	८	श्रीअरुणाय
३	श्रीसूर्याय	९	श्रीसवित्रे
४	श्रीभानवे	१०	श्रीआदित्याय
५	श्रीखगाय	११	श्रीभास्कराय
६	श्रीदेवकार्यकृताय	१२	श्रीअर्काय

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

दायां स्वाधिष्ठान ठण्डा करने के लिए मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ श्रीहिमालयाय
२ श्रीचन्द्रमसे
३ श्रीकैलाशस्वामिने
४ श्रीनिर्मलचित्ताय
५ श्रीचित्त-निरोधाय
६ श्रीचित्तेश्वर्यै
७ श्रीचित्-शक्त्यै
८ श्रीहजरत-अलिफातिमाबीयै
९ सर्वतापहारिण्यै
१० श्रीसंजीवनीस्वामिन्यै

अफर्मेशन

श्री माताजी आय डू नथिंग. व्हेरिली यू आर द डुअर अँड यू आर द एन्जॉयर.

प्रतिज्ञान (अनुवाद)

श्री माताजी मैं अकर्मी हूँ आप ही साक्षात सर्वकर्ता है तथा आप ही भोक्ता है।

विषय 14

अन्य विषय

जय श्री निर्मला विराटांगना

मॉर्निंग प्रेयर

मे आय दिस डे, बी व्हॉट यू वुड हॅव मी बी.
मे आय दिस डे, से व्हॉट यू वुड हॅव मी से.
मे आय दिस डे, बी पार्ट अँड पार्सल ऑफ द होल
अँड मे माय थॉटस बी ऑफ ए रिअलाईज्ड सोल
मे आय दिस डे, हॅव लव्ह फॉर ऑल मॅनकाईंड
श्री मदर बी इन माय हार्ट अँड इन माय माईंड

सुबह की प्रार्थना (अनुवाद)

आज दिवस मैं वही बनूँ, जो आप बनाना चाहें
आज दिवस मैं वह कहूँ, जो आप कहलवाना चाहें
आज दिवस मैं वही करूँ, जो आप करवाना चाहें
आज दिवस मैं अंश बनूँ, संपूर्ण ब्रह्म तत्व के
आज दिवस मैं प्यार करूँ, संपूर्ण मानव जीवन को
श्री माताजी विचार हो मेरे, एक साक्षात्कारी आत्मा के
श्री माताजी बसें हृदय और मन में निसदिन मेरे ।

प्रेयर - कम इन माई हार्ट

मदर प्लीज कम इन माय हार्ट.
लेट मी क्लीन माय हार्ट सो दॅट यू आर देअर
पुट युवर फीट इनटु माय हार्ट
लेट युवर फीट बी वर्शिप्ड इन माय हार्ट
लेट मी नॉट बी इन डिल्युजन.
टेक मी अवे फ्रॉम इल्युजनस.
कीप मी इन रिॲलिटि.
टेक अवे द शीन ऑफ सुपर फिशिॲलिटी.
लेट मी एन्जॉय युवर फीट इन माय हार्ट.
लेट मी सी युवर फीट इन माय हार्ट.

प्रार्थना - मेरे हृदय पधारें (अनुवाद)

श्री माताजी कृपया आप, मेरे हृदय पधारे
मुझे हृदय को शुद्ध करने दे, यहाँ पर आप विराजे।
अपने पुनीत श्रीचरणन की, पूजा हमसे करा ले
मायाजाल के तमसे हटा के, ज्योतित हमें बनाये।
हृदय चरण के मधुरमिलन से, चरणन महिमा लुभावे
श्री चरणन की अमृतधार से, कृपया हमें नहलाये।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी, चेल्सम रोड,
लंडन, यु.के., ५ अक्तुबर १९८४

प्रेयर्स ऑफ चक्राज
(चक्रों की प्रार्थनायें)

आज्ञा चक्र

हाऊ फॉर्च्युनेट वी आर टु हॅव बीन रिअलाईज्ड !
वी आर सहज योगीज, गॉड हॅड चोजेन अस.
हाऊ कॅन वी वर्क, इफ वी रिमेन वीक?
आदिशक्ति हॅज गिवेन अस द पॉवर
टु रिडीम द होल मॅनकाइन्ड
वी कॅन डू इट ऐन्ड वी विल डू इट.

आज्ञा चक्र (अनुवाद)

बहुत भाग्यशाली हैं हम
श्री माँ ने चुन कर हमें,
आत्मसाक्षात्कार दिया, सहजयोगी बनाया,
कमजोर रह कर कार्य हम नहीं कर सकते
आदिशक्ति ने हमे संपूर्ण मानवता की उद्धारक शक्ति दी हैं।
हम इसे कर सकते है और करेंगे
यही हमारा वादा हैं।।

हार्ट चक्र

हाऊ डीप इज गॉड्स लव्ह फॉर अस!
ही हॅज गिवन अस द रिअलायजेशन.
ही इज द ओशन ऑफ मर्सी,
इग्नोरिंग ऑल अवर मिस्टेक्स,
ही इज वर्किंग हार्ड डे अँड नाईट फॉर अवर वेल्फेअर,
अँड इनस्टेड ऑफ प्रेइंग फॉर
हिज फर्गिवनेस ऑफ अवर मिस्टेक्स,
वी आर मेकिंग कंप्लेंट्स् अगेन्स्ट हिम
अँड आर ब्लेमिंग हिम
माय लाईफ इज योर्स, माय हार्ट इज योर्स,
ऑल दिस इज योर्स !

हृदय चक्र (अनुवाद)

करूणा सागर ईश्वर ने
हमारी गलतियों को अनदेखा कर
हमे आत्मसाक्षात्कार दिया,
वह हमारे कुशल-क्षेम मे व्यस्त रहता
पर हम अपनी गलतियों की क्षमा के बजाय
उसकी शिकायत में व्यस्त रहते,
जबकि कृतज्ञता में हमें कहना,
''मेरा जीवन, हृदय, सब कुछ तो आपही का हैं।''

प्रार्थना - प्रातः नमामि

प्रातः नमामि, हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सत्चित्- सुखं, परमहंसगतिंतुरीयम्
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तमवैति नित्यम्
तद ब्रह्मनिष्कलमहं, न च भूतसंघः

व्याख्या :--

हृदय में तुरन्त पाने वाले उस तत्त्व (डिवाईन लव) को याद करता हूँ और सबेरे उठ कर नमस्कार करता हूँ, जो सच हैं चित है और सुख हैं। उस तुर्या दशा (आत्मसाक्षात्कार की परमहंस दशा) को नमस्कार करता हूँ (जो पार नही हैं वे कह रहे हैं)। जो स्वप्न में, जागृत अवस्था में और सुषुप्ति (सबकांशस) अवस्था या उससे ऊपर अचेतन (अनकांशस, जहाँ परम नित्य रहता) में रहता हैं, वह अलेपा, निर्लेप ब्रह्ममय हैं। यह जो पाँच तत्त्वों के संघ से बना शरीर, मन, बुद्धि है वह मैं नहीं हूँ। वह ब्रह्म हैं, जो नित्य, अविनाशी, हर स्थिति में रहता हैं।

आत्मसाक्षात्कारियों के लिए यह बहुत बड़ा मंत्र हैं और याद होना चाहिए कि हम वह हैं जो निर्लेप, निरंजन, निराकार ब्रह्म हैं। यह जो पाँच भूत संघ से बना बाहर का ढकोसला हैं वह मैं नहीं हूँ, जो अविनाशी अन्दर विराजता हूँ वही मैं हूँ।

यह तभी होगा जब हमारा चित्त उसमें बैठ गया हो, परन्तु अभी भी चित्त की दृष्टि बाहर की तरफ हैं। जब आप **चित्त की दृष्टि** अन्दर की तरफ कर लेते हैं तब आप परमहंस गति दशा में बैठ जाते हैं। उस गद्दी पर आप को बैठा दिया जाता हैं कि आप परम हंस हैं लेकिन परमहंस को अपने कीचड़ लगे पैर को साफ करके अपने आसन पर इज्जत के साथ बैठ जाना चाहिए, जैसे कोई राजा अभिषेक के बाद बैठ जाता हैं।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी, मुम्बई, २६ दिसंबर ७५

बाधा-नाशक मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री.....नमो नमः

१ शत्रुमर्दिन्यै
२ श्रीअम्बिका देव्यै
३ मधुसूदिन्यै
४ तारकासुरसन्हंत्र्यै
५ निशुम्भशुम्भ सन्हंत्र्यै
६ श्रीदुर्गामाताजगदंबायै
७ श्रीरक्षाकर्यै
८ श्रीराक्षसघ्न्यै
९ श्रीचामुण्डायै
१० मधुकैटभहंत्र्यै
११ नरकान्तकायै
१२ श्रीशिवशक्तिपुत्रकार्तिकेयायै
१३ श्रीकार्तिकेयायै
१४ सर्वासुरमर्दिन्यै
१५ सर्वबाधाविनाशिन्यै
१६ सर्वअसत्यगुरुमर्दिन्यै
१७ सर्वभयहारिरुद्ररूपायै

साक्षात् श्रीआदिशक्ति-माताजी-श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

श्रीभगवती (अनुवाद)

'भग' का अर्थ है ६ संघटक का संघठन ।

ये संघटक ईश्वर के ६ गुण है। इसलिए ईश्वर की शक्ति का नाम भगवती है। ईश्वर के छः मुख्य गुण है।

पहला	-	अबोधिता
दूसरा	-	सृजनात्मकता
तीसरा	-	पालनहार / पोषण कर्ता (जो दया, नियंत्रण, नकारात्मकता नाशक देखरेख तथा अपनी रचना का आनन्द द्वारा संभरण (ससटेनेन्स) संभावित करता है।)
चौथा	-	सर्व शक्तिमान
पाँचवा	-	सर्वव्यापी
छटा	-	सर्वदर्शी

यही छः गुण हैं। भगवती के बिना ईश्वर का कोई महत्व नहीं हैं, जैसे सूर्य - सूर्य की किरण तथा चन्द्र - चन्द्र की किरण का। इन्हे आप अलग नहीं कर सकते। वे एक ही हैं। आदि शक्ति ही भगवती हैं। निर्मला के अतिरिक्त उनके बहुत नाम हैं।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी

श्रीगणेशजी की आरती (मराठी)

सुखकर्ता दु:खहर्ता वार्ता विघ्नाची। नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटि शेंदुराची। कण्ठी झळके माळ मुक्ताफळांची ।।१।।
जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ती, दर्शनमात्रे मन कामना पुरती,
जयदेव जयदेव ।।धृ।।

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा । चंदनाची उटी कुंकमकेशरा ।
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा। रुणझुणती नूपुरें चरणी घागरिया ।।२।।
जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ती, दर्शनमात्रे मन कामना पुरती,
जयदेव जयदेव ।।धृ।।

लंबोदर पीतांबर फणिवर बंधना। सरळ सोंड वक्रतुण्ड त्रिनयना।
दास रामाचा वाट पाहे सदना। संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवर वंदना ।।३।।
जयदेव जयदेव जय मंगलमूर्ती, दर्शनमात्रे मन कामना पुरती,
जयदेव जयदेव ।।धृ।।

श्रीशिवजी की आरती (मराठी)
(शिवरात्री पूजा के लिये)

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडी माळा।
वीषे कंठी काळा त्रिनेत्री ज्वाळा
लावण्यसुंदर मस्तकी भाळा।
तेथुनियां जळ निर्मळ वाहे झुळझुळा ।।१।।
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा, आरती ओवाळू तुज कर्पुरगौरा ।।धृ।।

कर्पुरगौरा भोळा नयनी विशाळा ।
अर्धांगी पार्वती सुमनांच्या माळा
विभुतीचे उधळण शितिकंठ नीळा ।
ऐसा शंकर शोभे उमावेल्हाळा ।।२।।
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा, आरती ओवाळू तुज कर्पुरगौरा ।।धृ।।

देवी दैत्यी सागरमंथन पै केले ।
त्यामाजी अवचित हळाहळ जे उठिले
ते त्वा असुरपणे प्राशन केले ।
नीळकंठ नाम प्रसिद्ध झाले ।।३।।
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा, आरती ओवाळू तुज कर्पुरगौरा ।।धृ।।

व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदन मदनारी ।
पंचानन मनमोहन मुनिजनसुखकारी
शतकोटीचे बीज वाचे उच्चारी ।
रघुकुलतिलक रामदासा अंतरी ।।४।।
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा, आरती ओवाळू तुज कर्पुरगौरा ।।धृ।।

श्रीमाताजी की आरती
सबको दुआ देना माँ

सबको दुआ देना, माँ सबको दुआ देना ।
जय निर्मला माताजी, दिल में सदा रहना ।
माँ सबको दुआ देना ।।धृ।।

जग मे संकट कारण कितने लिये अवतार ।
विश्व में तेरी महिमा तू गंगा यमुना
माँ सबको दुआ देना ।।१।।

जो भी शरण में आया, सुख ही मिला उसको ।
बैठके दिल में ओ माँ, लौट के ना जाना
माँ सबको दुआ देना ।।२।।

मानव में अवतर के कर दिया उजियाला ।
कलियुग में माया है, फिर भी पहचाना
माँ सबको दुआ देना ।।३।।

सन्त जनों की धरती है भारत माता ।
इस धरती पर आकर, दु:ख से दूर करना
माँ सबको दुआ देना ।।४।।

जब दिल में आये तब मधु संगीत सुन लो ।
होय सके जो सेवा हमसे करा लेना
माँ सबको दुआ देना ।।५।।

सहजधर्म क्या है
(प्रवचन सारांश)

१ सहजधर्म आत्मा का धर्म हैं। अपने आचरण को सहज में लायें।

२ पुराने तरीके छोड़कर, चैतन्य की संवेदना ले कर चलने पर आप (धीरे धीरे) सहज धर्म में आ जाते हैं। जहाँ तक हो सके चैतन्य लहरियों का इस्तेमाल करें।

३ सहज धर्म में आप (गलत चीजों सें) समझौता नहीं कर सकते।

४ गलती होती हैं यह तो मान लेना चाहिए, नहीं तो मेरे (गुरु) आने की जरूरत ही क्या हैं।

५ आप सब मेरे को प्यार करते हैं, परंतु भक्ति को आचरण में लाना चाहिए।

६ सहजधर्म में निरपेक्षिता आनी चाहिए। इसका मतलब हैं कि यह सोचना कि सब कुछ माँ का ही हैं। किसी चीज का पकड़ाव नहीं होना चाहिए। निरपेक्षिता का इलाज हैं, ''मैं'' और 'मेरा' पना खतम होना चाहिए। जैसे आप निरपेक्ष होगे, हर चीज में आप 'तू' ही 'तू' देखेंगे।

७ श्रीगणेश की भक्ति में उतरना चाहिए। जैसे भक्ती वैसा आचरण। ऐसे गणेश को अपना लक्ष्य बना कर कार्य करना चाहिए।

८ सहज आदमी को अपने प्रति सतर्क होना चाहिए । सहज में एक तरह का और ही (भिन्न) व्यवहार हो जाता हैं-जिद छूट जाती है, जबान व

स्वभाव बदल जाता हैं। हीरे जैसे अपने को तरासना पड़ता हैं। उसका हीरा -आत्मा - सामने आता है क्योकि पहलू (एन्गुलर्टीज) छूट जाती हैं।

९ सहज धर्म में भक्ति और कर्म का योग होना चाहिए। इसी को बिठाने के बाद ही आप गुरुतत्त्व में जमते हैं।

१० पैसे (धनसंपत्ति) पर चिपकना नही चाहिए तभी पैसा चरणों में होगा। निरपेक्षिता होनी चाहिए, परमात्मा पर छोड दिया, जैसे राखो तैसे रहे।

११ सहज धर्म में हम सब सामूहिक हैं। अपनी कीमत पर भी एक दूसरे के साथ, सहायक रहे। सहज, भाईचारे से शुरू हो कर सब तक पहुँचना चाहिए।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी,
दिल्ली आश्रम, २३/२/९६

मानव के दस धर्म
(आंशिक प्रवचन)

१. श्री माताजी निर्मलादेवी ने बताया हैं कि -
''कार्बन में चार आयाम (वैलेन्सीज) होती हैं, सोने का गुण है कि उसमे चमक नहीं जाती । उसी प्रकार मानव धर्म में भी चमकने वाले गुण (सद्‌गुण) हैं जो मानव सृष्टि को सम्भालते है। अमीबा से मनुष्य दशा तक विकास हुआ । यह विकास उसके धर्म द्वारा हुआ हैं जो उसके विकास की आचार संहिता (नियम) हैं। जीवन की आचार संहिता (कोड ऑफ लाज) हमारी आध्यात्मिक उन्नति की रक्षा करता हैं तथा उसका पोषण करता हैं।'' विकास के तीसरे चरण में मनुष्य को धर्म की शक्ति दी गई जिसे दस महा आदेश (टेन कमान्डमेन्टस्‌) के नाम से जाना जाता हैं।

Book, 'Ascent' by Yogi Mahajan

२. नाभि चक्र बहुत महत्वपूर्ण चक्र हैं। यह पाचनक्रिया आदि पर निर्भर होता हैं। नाभि चक्र धर्म को बाँधता हैं। (नाभि चक्र की १० पंखुडियाँ मानव के १० धर्मं की स्थापना करती हैं।)* मनुष्य के १० धर्म होते हैं। सिर्फ उसको स्वतंत्रता हैं कि वह धर्म में रहे या न रहे । बाकी संसार की किसी चीज को स्वतंत्रता नहीं हैं। जैसे सोना हैं, उसका अपना धर्म है कि वह खराब नही होता, धूमिल नहीं होता, बिच्छु का अपना धर्म हैं कि वह डंक मारता हैं। साँप के, शेर के, अपने धर्म हैं वे अपने धर्म में बैठे रहते हैं। लेकिन मनुष्य को स्वतंत्रता हैं कि वह चाहे धर्म मे रहे या न रहे। चाहे बुराई जीत ले या अच्छाई जीत ले । यह स्वतंत्रता मनुष्य को विशेष रूप से दी गई क्योकि परमात्मा के साम्राज्य में जाना हैं तो

पहले स्वतंत्रता में उसका वरण करे। अपनी स्वतंत्रता में कहे कि हमें परमात्मा चाहिए। हमारे ऊपर कोई जबरदस्ती करके कहे कि आप परमात्मा को माँगिये तो यह कौनसा माँगना हुआ । अत: इस दशा (मनुष्य स्थिति) में पहुँचने पर अपनी स्वतंत्रता में ही परम तत्त्व को माँगना चाहिए; किसी जबरदस्ती, बिमारी, किसी दु:ख या तकलीफ की वजह से नही, बल्कि इसलिए कि परम पाना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। इस स्वतंत्रता में जब आप जागते हैं और परम की इच्छा करते हैं, तभी परमात्मा के महाद्वार आप के लिए खुलते हैं।

इस धर्म के सेन्टर (नाभि) के चारों तरफ गुरुओं का स्थान हैं। ये १० गुरु हमारे अन्दर बसे हुए हैं। (ये हमारी शरीर मे देवता स्वरूप है।)* ये मुख्य १० गुरु है जो दत्तात्रेय के अवतरण हैं। इनमें जनक,... शिर्डी के साईबाबा आदि एक ही तत्त्व के अवतरण हैं। ये मानव को सुधारने के लिए बार-बार अवतरण लेते रहे हैं, जैसे....। नाभी चक्र पर लक्ष्मी नारायण का स्थान हैं। यही हमें धर्म के प्रति रुचि देता हैं। इसी के कारण हम धर्म परायण होते हैं और धर्म धारणा करते हैं। कार्बन मे जो ४ वैलेन्सी है उसी धारणा की वजह से हैं। आप का मनुष्य रूप में जो उत्क्रांति (इवोलुशन) हुआ वह इसी लक्ष्मीनारायण तत्त्व से हुआ हैं। विष्णु तत्त्व से यह कार्य हुआ हैं। विष्णु जी हमारे नाभि चक्र में बसते हैं और वे अनेक अवतरण लेते हैं,... वे ९ अवतरण ले चुके है। उनमें से अधिकांश उत्क्रांतिक (इवोलुशनरी) हैं। उनमे जीव पहले मछली, कछुआ, वराह आदि रूप में आया। ये सब लक्ष्मी नारायण के उत्क्रांतिक स्टेज (दशा) के द्योतक हैं। वे सब हमारे अन्दर बंधे हुए हैं। जो कुछ संसार में होता आया हैं, वह सारी हिस्ट्री (इतिहास) हर मानव में बंधा हुआ हैं। मानव सबसे ऊँचा हैं क्योंकि उसकी दशा सबसे

ऊँची हैं। बाकी जो स्टेजेज (दशायें) हैं सब मनुष्य में निम्न स्थिति में हैं।

आप जानते हैं कि नाभि के चारो तरफ जो भवसागर है उसमें से जानवर निकल नहीं पाया हैं। मानव सिर्फ निकल पाया है जबकि हमारे यहाँ वामन अवतार हुआ। इस के बाद परशुराम, श्रीराम के अवतार हुए। श्रीराम का अवतार इसके ऊपर के चक्र हृदय चक्र में दाहिने तरफ में हैं, क्योंकि बीच में जो सुषुम्ना नाड़ी है जिसमे आपकी उत्क्रांति होती हैं, उस पर नहीं रखा गया क्योकि श्रीराम ने अपने को अवतार नही माना था। उन्होंने अपने को मर्यादा पुरुषोत्तम माना और बीच के उत्क्रांति राह से हटकर अलग कर लिया। वे अपने दाहिने तरफ रहते हैं। उनमें आपके पिता का स्थान हैं जो पितृत्व (के धर्म) का स्थान हैं। पितृत्व के स्थान बिगड़ जाने के अनेक कारण होते हैं। बायें तरफ हृदय का स्थान हैं। इसमें आत्मा रहता हैं परंतु आप की चेतना में नही होता। पैरासेम्पथिटीक सिस्टम आप के काबू में नही होता। वह स्वयं चलित हैं। लेकिन यह स्वयं (Medical Science का) जो आप की पाचन क्रिया, सांस को चलता हैं, यही आत्मा हैं। यह पैरासेम्पथिटीक से चलता हैं पर हमारे चेतना में नहीं होता अर्थात हमारे सेन्टल नर्वस सिस्टम (CNS) में नहीं होता। इसे CNS में लाते ही अनेक रोग ठीक हो जाते हैं। जैसे हृदय की बिमारी जो अत्याधिक कार्य करने के करण होती हैं तब फिर संतुलन लाने के लिए प्रकृति ही बिमारी करता हैं।

(बायें हृदय पर मातृत्व का स्थान है। इस तरह, मनुष्य शरीर अनेक तत्त्वों से बंधा हुआ हैं।)*

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी,
बोर्डी सेमिनार २३.३.७९
*दिल्ली प्रवचन ३१.६.७८

ध्यान में निष्क्रियता

लण्डन, १९८०

चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं, वे वितरित हो रही हैं। आपने अपने स्वयं को इनके लिए उधेड़ के रखना है। बहुत अच्छा होगा कि आप कोई क्रिया न करें, चाहे जहाँ भी समस्या हो, आप उसकी चिन्ता न करें। मैंने कई बार देखा है कि ध्यान करते समय अगर कोई चक्र पकड़ता है तो लोगों का ध्यान वही लगा रहता है आपको बिलकुल भी चिन्ता नहीं करनी है, आप उसे जाने दीजिए और वह अपने आप कार्य करेगा।

इसलिए आपको कोई क्रिया नहीं करनी है, यही है ध्यान। ध्यान का मतलब है स्वयं को भगवान की कृपा पर छोड़ देना। अब यही कृपा जानती है कि आपको किस तरह से ठीक करना है। इसे ज्ञान है कि किस तरह से आपको सुधारना है। आपके अन्तः में कैसे बसना है। आपकी आत्मा को किस तरह से प्रज्वलित रखना है। इसे सब पता है। इसलिए आपको चिन्ता करने की जरुरत नहीं है कि आपको क्या करना है या कौन से नाम बोलने है, कौन से मन्त्रों का उच्चार करना है? ध्यान में आपको पूर्णतः निष्क्रिय रहना है। अपने को पूरी तरह से उधेड़ रखें और उस वक्त आपको पूरी तरह से निर्विचार रहना है।

समझ लीजिए हो सकता है कि आप निर्विचार में न हो। ऐसी दशा में आप सिर्फ विचारों पर नज़र रखें, उनमें उलझना नहीं है। आप देखेंगे कि जैसे जैसे सूरज उगता है वैसे वैसे अंधेरा चला जाता है और सूरज की किरणें हर एक कोने कोने तक पहुँचती हैं और सारी जगह को प्रकाशित कर देती है। उसी तरह से आप भी प्रकाशित हो जाएंगे। अपने अन्दर

की कुछ चीज़ों को रोकने की कोशिश करेंगे या फिर बंधन देंगे, तो वह ना होगा। निष्क्रियता ही ध्यान करने का एक तरीका है। आपको इसके प्रति जड़वत नहीं होना चाहिए। आपको सतर्क होना चाहिए और उस पर नज़र रखनी चाहिए।

दूसरी ओर हो सकता है कि लोग झपक जायें। नहीं ! आपको सतर्क रहना है। अगर आप झपक जायें तो कुछ भी कार्यान्वित नहीं होगा। वह इसका दूसरा पहलू है। अगर आप उसके प्रति सुस्त रहेंगे तो कुछ भी कार्य नहीं होने वाला। आपको सतर्क और खुलकर रहना चाहिए। एकदम सचेत, सम्पूर्ण निष्क्रिय, पूर्णत: निष्क्रिय होना चाहिए। अगर आप पूर्णतया निष्क्रिय होंगे तो ध्यान पूर्णतया कार्य करेगा। आप अपनी समस्याओं के बारे में बिलकुल भी न सोचें। चाहे आपका कोई भी चक्र पकड़ता हो, कुछ भी हो,सिर्फ, अपने को प्रस्तुत करें। देखिए जब सूर्य चमकता है तब निसर्ग अपने आपको सूर्य को प्रदर्शित करता है और निष्क्रियता से सूर्य का आशीर्वाद लेता है, वह बिना क्रिया किए लेता है। वह सिर्फ अपने आप लेता है। जब वह सूर्य की रोशनी लेता है। तब सूर्य की किरणें क्रिया करने लगती हैं और क्रियान्वित होती हैं।

उसी तरह से परम चैतन्य शक्ति कार्य करने लगती है। आपको उसके लिए कोई युक्ति नहीं करनी। उसके लिए आपको कुछ भी नहीं करना है। सिर्फ निष्क्रिय रहिए, बिलकुल निष्क्रिय। कोई भी नाम नहीं लेना, अगर आपकी आज्ञा पकड़ रही है या कुछ और पकड़ रहा है, इसकी आप कोई चिन्ता न करें - वह सब कार्यान्वित हो रहा है। यह तब तक होगा जब तक यह कार्यान्वित हो सकता है और यह वह करामात करेगा जो इसे करना है। आपको उसके बारे में चिन्ता नहीं करनी है। यह

अपने कर्तव्य को जानती है। वास्तव में जब आप क्रिया करते हैं, तब आप इसकी राह में बाधा बन जाते हैं। इसलिए कोई प्रयास करने की जरुरत नहीं है, एकदम निष्क्रिय रहिए और कहिए कि जाने दो, जाने दो, बस यही। कोई मन्त्र नहीं बोलना है। अगर ऐसा करना आपके लिए मुश्किल हो तो फिर आप मेरा नाम ले सकते हैं पर इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। जब आप अपना हाथ मेरी ओर करते हैं तब वही मन्त्र है। ये चेष्टा ही अपने आप में एक मन्त्र है। देखिए इसके अलावा आपको कुछ और नहीं बोलना है। पर मन में इच्छा के साथ भावना भी होनी चाहिए। अब हमने उसके लिए हाथ फैला दिए है और वह कार्यान्वित होने वाला है। जब यह भावना परिपूर्ण होगी तो मन्त्र बोलने की कोई जरुरत ही नहीं है। आप उससे परे हैं। इसलिए हर एक को निष्क्रिय होना है। एकमेव निष्क्रिय, वह जो भी कुछ है यही है।

ध्यान आपके अपने उत्थान के लिए है। अपने पूँजी लाभ के लिए है जो होना चाहिए। पर एक बार आप उसमें जाएंगे आप अपनी शक्ति को भी ग्रहण करेंगे। जैसे अगर आप गवर्नर बनते हैं तो फिर आपको गवर्नर की सारी शक्तियाँ, अधिकार दिए जाते हैं। ऐसे में आप को किसी और के बारे में नहीं सोचना है। किसी के ऊपर अपना चित्त केंद्रित नहीं करना है। पर सिर्फ उसे ग्रहण करो, सिर्फ ग्रहण करो। किसी समस्या के बारे में मत सोचिए, सिर्फ इतना सोचो कि आपको निष्क्रिय होना है, पूर्णतया निष्क्रिय। यह उन पर अधिक असर करेगा जो सिर्फ ग्रहण करते हैं।

आपको समस्याऐं है इसलिए आप यहाँ है, पर आप उन्हें हल नहीं कर सकते। परम चैतन्य उनका हल कर सकता है। ये पूरी तरह से आपको समझ लेना चाहिए कि हम अपनी समस्याओं का हल नहीं कर सकते

हैं। ये हमारे बस के परे है कि हम अपनी समस्याओं का हल करें। इसलिए आप इसे परम चैतन्य के हाथों में छोड़ दीजिए और अपने आपको निष्क्रियता में प्रस्तुत करिए, परिपूर्ण निष्क्रियता। आराम से बैठिए, अपने दोनों पैर ज़मीन पर रखकर, दोनो हाथों को आराम से इस तरह रखकर। आराम से रहिए। आपको बिलकुल भी कोई असुविधा न हो, क्योंकि आपको काफी देर तक बैठना है। अगर आप कर सको तो और आप अपने चित्त को मेरी ओर, अपने अन्दर रखिए या मेरी कुण्डलिनी की ओर करें। आप मेरी कुण्डलिनी के अन्दर आ सकते हैं। यह सिर्फ हाथों को इसी तरह से सीधे रखकर करना है।

अत: निष्क्रियता ही चाबी है, परिपूर्ण निष्क्रियता। चाहे आप मेरे सामने ध्यान करें या मेरी तस्वीर के सामने।

प.पू.श्री माताजी निर्मलादेवी,
लण्डन, पार, १९८०

क्या आपकी प्रगति अच्छी हो रही है?

आपको पूर्ण समर्पित मन से इस महल की तीर्थयात्रा से गुज़रना है । यह उन तपस्या के नज़ारों में से एक है जिसे आपको करना है। क्योंकि मुझे यह बताया गया है कि आपको आपके इस यात्रा के दौरान कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। पर उन सब जगहों तक पहुँचना बड़ा ही रोमांचक होता है जहाँ शैतानों को जाने की हिम्मत नहीं होती। और अगर आपको ज्ञान हो जाए कि किस तरह से तथाकथित असुविधा का भी आनन्द उठाया जा सकता है तो फिर आप समझ लीजिए कि आप सही रास्ते पर चल रहे हैं। और जैसे ही आप अपने आप विचारशील बनने लग जाएं आपको जान लेना चाहिए कि आप की प्रगति अच्छी तरह से हो रही है।

जैसे-जैसे आप शांत होते है और आपका गुस्सा हवा में गायब हो जाता है, यह देख कर भी कोई आप पर वार कर रहा है या आप के ऊपर कोई मुसीबत आ रही है और आप फिर भी उसकी चिन्ता नहीं कर रहें है तो समझ लीजिए कि आपकी अच्छी प्रगति हो रही है। जब किसी भी तरह की कृत्रिमता आपको प्रभावित नहीं कर सकती तो समझ लीजिए कि आप की अच्छी प्रगति हो रही है।

जब दूसरों की धन-सम्पत्ति से आपको कोई जलन न हो, आप बिलकुल दुःखी नहीं हो रहे हों, तो समझ लीजिए कि आपकी अच्छी प्रगति हो रही है। सहजयोगी बनने के लिए किसी तरह की तकलीफ उठाना या मेहनत करना ही पर्याप्त नहीं है। चाहे आप कितनी भी कोशिश कर लें पर आप सहजयोगी नहीं बन सकते। जबकि आपको यह बिना किसी प्रयास के प्राप्त हुआ है, इसलिए आप कुछ तो खास हैं। इसलिए एक

बार जब आपको पता चल जाए कि आप कुछ तो खास हैं, आप उसके लिए विनम्र हो जाएंगे। जब आप में ऐसा होता है कि आप कुछ हासिल करने के बाद नम्र हो जाते हो, कि आप में कुछ शक्तियाँ हैं, कि आप अबोधिता को प्रदर्शित कर रहे हो, कि आप विचारशील हैं और उसके कारण आप और भी अधिक करुणामय, विनम्र और मधुर व्यक्तित्व बन जाते हो तो आपको समझ लेना चाहिए कि आप श्री माताजी के हृदय में हैं। यह एक नये युग के सहजयोगी की पहचान है जिसे नए सामर्थ्य से आगे बढ़ना है। और वहाँ आप इतनी तेजी से प्रगति कर सकते हैं कि तब ध्यान न करते हुए भी ध्यान में रहेंगे। मेरी मौजूदगी न होने पर भी आप मेरी मौजूदगी महसूस करेंगे। बिना माँगे ही, आप परमात्मा से आशीर्वादित हो जाएंगे। यही है जिसके लिए यहाँ आप मौजूद हैं और इस नए युग में एक बार फिर, इस सहस्रार दिवस पर, मैं आप सब का स्वागत करती हूँ।

परमात्मा आप सबको आशीर्वादित करें।

प.पू.श्री माताजी निर्मला देवी,
सहस्रार दिवस, ५ मई, फ्रान्स

चेल्सम रोड पर माताजी का उपदेश

आपको पता होना चाहिए कि आप मेरा प्रतिनिधित्व करते हो। मेरे कुछ गुणों को आपने अन्दर अपनाने की कोशिश करें, कुछ गुणों को। आपको सहनशीलता दर्शाना चाहिए। अब सब से अच्छा साधन है प्रार्थना करना। सहजयोगियों के लिए प्रार्थना करना सबसे महत्त्वपूर्ण है। हृदय से प्रार्थना कीजिए :

* सब से पहले आपको माताजी से शक्ति माँगनी चाहिए ''श्री माताजी, मुझे शक्ति दीजिए ताकि मैं सच्चा बन सकूँ और मैं स्वयं को धोखा न दूँ।'' आप सुबह से शाम तक अपने आपको धोखा दे रहें हैं। ''मुझे अपने आपका सामना करने की शक्ति दीजिए और मैं अपने हृदय से कह सकूँ कि मैं अपने आपको सुधारने की कोशिश करुँगा।'' क्योंकि ये खामियाँ जो हैं ये आपकी अपनी नहीं है, ये बाहर की है, अतः अगर ये निकल जाएं तो फिर आप ठीक हो जाओगे, परिपूर्ण हो जाओगे।

* अब आपको क्षमा माँगनी चाहिए, क्षमा के लिए प्रार्थना कीजिए यह प्रार्थना होनी चाहिए, कहिए ''आप मुझे क्षमा कर दीजिए क्योंकि मैं अब तक अनजान रहा हूँ, मुझे पता नहीं था कि क्या करना है। मैंने गलतियाँ करी है। इसलिए आप कृपया मुझे क्षमा करें।'' यह एक पहली चीज़ है, जिसे हर किसी ने माँगनी चाहिए - क्षमाशीलता।

* दूसरी चीज़, जो आपको माँगनी है वह है मधुर वाणी। कहिए ''श्री माताजी मुझे मधुर वाणी प्रदान कीजिए, जिससे हम दूसरों के साथ आदान-प्रदान का साधन बन सकें, जिससे दूसरे लोग मुझे पसन्द करने लगे, मेरा आदर करें, मेरी उपस्थिती उन्हें अच्छी लगे। मुझे शक्ति दीजिए, प्रेम दीजिए। मुझे प्रकृति की सुन्दरता प्रदान कीजिए, यह

समझने की सुन्दरता कि सब मुझसे प्रेम करते हैं, मुझे चाहते है।''
प्रार्थना करने की योग्यता माँगिए, प्रार्थना में आप माँगिए, ''हे परमात्मा मुझे मेरी आत्मा की सुरक्षा का अहसास दीजिए ताकि मैं असुरक्षित न महसूस करूँ और जिससे मैं दूसरों को तकलीफ न पहुँचाऊँ या गुस्सा न करूँ। मुझे आत्मसम्मान प्रदान कीजिए ताकि मुझमें कोई छोटेपन का अहसास न हों और दूसरे मुझे छोटा न समझे।'' अगर आप उस स्थिति में है तो फिर आपको छोटा नहीं कर सकते। आप ही अपने मूर्खता से अपने को छोटा बनते हो और मूर्ख बनते हो।

* अब शक्ति की माँग कीजिए। ''(श्री माताजी कृपया) मुझे साक्षीभाव, संतुष्टि दीजिए। मेरे पास जो भी है उसकी आप संतुष्टि दीजिए - जो भी मेरे पास है । जो भी मैं खाता हूँ, सबकुछ। मेरे चित्त को इन सब से हटा दीजिए।''

* आपको पता है कि आपका चित्त आप के पेट में है और जिनको खाने में बहुत अधिक रुचि है उनको किसी भी हालत में लीवर (जिगर) की तकलीफ होने ही वाली है। प्रार्थना करे ''ऐसे जिस किसी चीज़ में अगर चित्त जा रहा है तो आप उसे पीछे खींच लेने की शक्ति प्रदान कीजिए, चित्त निरोध दे। जो चीज़ें मुझे लुभाती है, मेरे चित्त को हटा देती है, उन चीज़ों को टालने की मुझे शिक्षा दीजिए।''

* मेरे विचारों को रोक दीजिए और मुझे साक्षी भाव दीजिए, जिससे कि मैं सारी दुनिया के नाटक को देख सकूँ। मैं कभी भी किसी की निन्दा या अपमान न करूँ। मैं दूसरें की नहीं, अपनी गलतियाँ देख सकूँ, यह देख सकूँ कि क्यों लोग मुझसे नाखुश है। मुझे शक्ति दीजिए जिससे मेरी वाणी मधुर हो, स्वभाव मधुर हो ताकि औरों, को मेरी उपस्थिति पसन्द आए। ''मुझे एक फूल की तरह बना दीजिए ना कि काँटा

जैसा।'' आपको प्रार्थना करनी है। ये प्रार्थनाऐं आपकी मदद करेंगी।

* इसके बाद इस महत्त्वपूर्ण प्रार्थना की माँग करिए, जिसमें आपको कहना है ''कृपया मुझे अहंकार से दूर रखिए जो मुझे दूसरों की अपेक्षा बड़ा होने के विचार प्रदान करता है, या किसी भी तरह से मेरे नम्रता और विनम्रता को छीन लेता है। मुझे सहज नम्रता प्रदान कीजिए, जिससे मैं लोगों के दिलों में बस सकूँ।''

* सिर्फ, अपने सिर को जरा सा झुकाइये और सीधा अपने हृदय की ओर जाइये। आपको अपने सिर को झुकाना है और वहाँ है आपका हृदय, जहाँ आत्मा का निवास है। हृदय के साथ रहिए, चाहे आप अपने अहंकार को ठेंस पहुँचायें या किसी और के, दोनों एक ही है। आप एक सम सा व्यवहार करोगे, एकही अहंकारी तरीके से। इसलिए आप समझने की कोशिश करें कि इन सब बुराइयों को चले जाना जरूरी है। सबसे अच्छा होगा कि आप प्रार्थना करें और मदद माँगे।

* दिल से प्रार्थना करना बहुत बड़ी चीज़ है, प्रार्थना करें कि ''हे परमात्मा, हमें शक्ति प्रदान करें और वह उत्थान दें जिससे हम अपनी श्री माताजी के लिए कभी कभी कुछ काम आ सकें।' हमें अपनी श्री माताजी को संतुष्ट करना है, हमें उन्हे खुश देखना है।'' मुझे एक ही बात पर खुशी होगी कि जिस तरह से मैं आप सब से प्रेम करती हूँ उसी तरह से आप भी एक दूसरे से करें।

प.पू.श्री माताजी निर्मला देवी,
लण्डन, यू.के, २६ अक्टूबर १९८०

ध्यानधारणा की एक विधि (श्री माताजी द्वारा)

आप सुबह में उठिए, नहा लीजिए, बैठ जाए। बात मत कीजिए, बात मत कीजिए, सुबह में बात मत कीजिए, बैठ जाए ध्यान के लिए।क्योंकि वह समय, जो भी समय आपके लिए सुविधाजनक समय हो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। मैं आपके साथ हूँ। पर वो ही सबसे बेहतर समय है,क्योंकि उस समय में, सूरज बाद में निकलता है, उससे पहले ब्रह्म चैतन्य आता है। इसी तरह से पंछी जागते है। इसी तरह से फूल जागते है। वे सब उसी से जागते है और अगर आप संवेदनशील है तो आपको भी वह महसूस होगा और सुबह उठने के वजह से आप कम से कम दस साल छोटे दिखोगे। सही में यह सुबह में उठना इतनी अच्छी बात है कि आप स्वयं अपने आप ही जल्दी सोने लगेंगे। ये हुई बात सुबह जल्दी उठने की, सोने के लिए मुझे कहने का आवश्यकता नहीं, ये आप अपने आप कर सकते है।

फिर सुबह का वक्त आप को सिर्फ ध्यान करना है। ध्यान में आप अपने विचारों को रोकने की कोशिश करें, मेरी तस्वीर को देखकर आप अपने विचारों को रोके। बस, इसे करना है, ध्यान से पहले विचार नहीं होना चाहिए। वरना आप अपनी ध्यान की शुरुवात नहीं कर सकते। पहले अपने विचारों को रोकिए, मेरी तस्वीर को देखिए, खुली आँखो से, और देखिएगा की आप अपने विचारों को रोक लें। एक बार जब आपके विचार रुक जाए तब आप अपनी ध्यान में जाइए। अपने विचारों को रोकने का सबसे सरल उपाय है "Lord's Prayer" क्योंकि वह आज्ञा की स्थिती है। तो फिर आप सुबह में "Lord's Prayer" या फिर गणेश मन्त्र को याद करिए, अगर आप को आता है, गणेश मन्त्र सुबह में,

वैसे दोनो एक ही है मै फिर ''मैंने क्षमा किया'' कहा तो भी चलेगा। आप गणेश मन्त्र से शुरु कर सकते है, फिर "Lord's Prayer" और फिर उन्हें कहें कि ''मैंने क्षमा किया।'' ये कार्यान्वित होता है। तब आप निर्विचार अवस्था में होते है। बस, आप ध्यान करिए । इससे पहले कोई ध्यान नहीं हो सकती थी। तब विचार आते थे। मुझे चाय लेना है। मैं क्या करुं? अब मुझे क्या करना है, ये कौन है? वो कौन है? इस तरह के विचार रहेंगे। इसलिए सबसे पहले निर्विचार अवस्था में आ जाइए। इसके बाद ही आपका उत्थान शुरु होता है। धार्मिक उत्थान उसके बाद ही शुरु होता है और उससे पहले नहीं होता है। तो सबसे पहले आप अपनी निर्विचार अवस्था को प्राप्त कर लें। अब जब आपने अपनी निर्विचार अवस्था प्राप्त कर ली है, फिर भी आपको इधर-उधर थोड़ी सी चक्रों की पकड महसूस हो सकती है, भूल जाइये इसे, बस भूल जाइये। अब आपको अपने समर्पण को शुरु कर देना चाहिए। आप देखोगे, जैसे कि आपका दाया बाजू पकड़ रहा है तो आपको कहना चाहिए कि ''माताजी, मैं इन चीज़ों को समर्पण करता हूँ।'' देखिएगा इस तरह से कार्यान्वित होता है। अन्य सभी चीज़ों को करने के बजाय आप सिर्फ इसे कह सकते है पर वह समर्पण केवल तार्किक नहीं होना चाहिए। अगर आप अभी तर्क से जुड़े है और सोचते हैं कि ''मै ऐसा क्यों कहूँ'' तो कहने का कोई लाभ नहीं। आप के हृदय में प्रेम और पवित्रता यदि है तो ये एक सबसे अच्छी चीज़ है, जो कि बड़ा ही कठिन है करना, अहंकारयुक्त समाज में। इस विषय के बारें में बाते करते वक्त भी मुझे थोड़ी सी चिंता हो रही है। पर आप में अगर कोई चक्र पकड़ता है तो आप समर्पण करिए, और आप देखोगे कि चक्र शुद्ध हो जाते हैं।

सुबह के वक्त आप बहुत यहाँ वहाँ मत होते रहें। अपने हाथों को बहुत मत हिलाइये, कोई जरुरत नही। आप देखेंगे की उस ध्यान में ही कई सारे चक्र खुल जाते हैं। सिर्फ अपने हृदय में प्रेम भरने का प्रयत्न करे। बस कोशिश करिए। आप सबसे पहले अपने हृदय पर ध्यान रखिए या फिर अपने हृदय में देखें और वहाँ कोशिश करकें अपने गुरु को अपने दिल की गहराई में रखिए। हृदय में स्थापित करने के बाद आप उसे नमन करें। आत्म-साक्षात्कार पा लेने के बाद पूरी भक्ति और श्रद्धा के साथ आप अब जो भी मन से करते हैं वह केवल कल्पना नहीं रह जाती क्योंकि अब आपका मन आपकी कल्पना जागृत हो चुकी है। आप अपने को इस तरह से केंद्रित करें की आप विनम्रता से आपके गुरु को नतमस्तक हो जायें और आप उस स्वभाव की याचना करे, जो की ध्यान करने के लिए चाहिये या फिर उस स्थिति की माँग करें जो की ध्यान करने के लिए आवश्यक है। ध्यान तब होता है जब आप परमात्मा से एक होते है।

अब अगर विचार आ रहे है तो फिर अब पहले वाले मन्त्र अवश्य कहें और अन्दर की ओर देखें अवश्य आपको गणेश मन्त्र भी कहना चाहिए, जो कुछ लोगों को सहायता कर सकती है और फिर आपको अपने अन्दर देखना चाहिए। देखें सबसे बड़ी बाधा क्या है? विचारों को रोकने के लिए आपको निर्विचार मन्त्र कहना है। ''ओऽम् त्वमेव साक्षात् श्रीनिर्विचार साक्षात् श्रीमाताजी श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः''

अब हम आपके अहंकार वाली बाधा पर आएंगे, क्योंकि देखिए विचार तो रुक गए है, इसमें कोई शक नहीं, पर देखिए अभी सिर पर भारीपन है तो फिर अगर ये अहंकार है तो फिर आप को कहना चाहिए, ''ॐ

त्वमेव साक्षात् श्रीमहत्-अहंकार साक्षात् श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः'' तीन बार कहिए। महत् का मतलब होता है महान अहंकार । अभी अगर आपको अहंकार महसूस हो तो फिर आप अपनी बाईं तरफ को उँचा उठा के दाईं की तरफ नीचे कर देना है जिससे अहंकार और प्रति अहंकार दोनो ही संतुलित हो जाएंगे। इसे सात बार करिए। अन्दर किस तरह से लग रहा है इसे महसूस करिए। आप देखिए, अब अपनी कुण्डलिनी को उठाकर सिर पर बाँध दे। फिर से कुण्डलिनी को उठाकर बाँध दे। अब सहस्रार पर सहस्रार के मन्त्र को तीन बार कहिए।

एक बार जब अपने को संतुलित कर दें, तब, सबसे अच्छा होगा कि आप अपने भावनाओं पर ध्यान दें। अपने 'मनस्-शक्ति' पर ध्यान दें, अपनी माँ को याद करते हुए आप अपनी भावनाओं को प्रकाशमय कर सकते हैं। ठीक है? बस उन्हें जागृत करिए।

ये सारी समस्याओं का हल कर देता है, मन की जो भी समस्या हो। तो एक बार जब आप अपनी भावनाओं से जुड़ जाएंगे और ध्यान में आप उन्हें देखे तो आप पाओगे कि ये भावनायें आपके अन्दर बढ़ रही है। और अगर आप भावनाओं को अपनी माँ के आगे रख दे, (जैसे कि कहते है 'आप की 'माँ' की ही चरण कमलों में') तो वे सारी भावनाएं विलीन होने लग जाएंगी और फैल सी जाएंगी। आप देखिए बिखर जाएंगी। आप उन्हे इस कदर बिखरा पाओगे कि आप को लगेगा कि ये आप के कब्जें में हैं। और इन भावनाओं को कब्जे में करने से आपकी भावनायें फैल जाती है, प्रज्वलित हो जाती है और शक्तिवान हो जाती है।

अब आपको करना ये है कि आप को अपने साँस पर नजर रखनी है। अब देखिए, कोशिश करके अपनी साँस की गति को धीमा करिए। इस

कदर कम करिए जैसे साँस लिया हो। कुछ देर के लिए रुक जाइये और फिर साँस अन्दर लीजिए। लम्बे समय के लिए फिर से आप साँस बाहर निकालिये। इस तरह से एक मिनट में आपकी साँस सामान्य से भी कम हो जाएगी। ठीक है? ऐसी कोशिश कीजिए और अपना चित्त अपनें भावनाओं पर रखे। आप देखिए। ठीक है?

अब कुण्डलिनी को उठते हुए देखें (महसूस करे)। अब जब आप साँस ले रहे है, आप देखेंगे कि एक साँस और दूसरे साँस के बीच में अंतर है-जिसे आप को खाली छोड देना है। साँस अंदर लीजिए। उसे वहाँ रखिए। अब बाहर की ओर श्वास कीजिए और बाहर की ओर साँस निष्कासित करते रहिए। अब अंदर साँस लीजिए। अब इस तरह से साँस अन्दर लीजिए कि सही में आप अपना श्वास कम कर लें।

ऐसे वक्त आपका चित्त आपके हृदय पर होना चाहिए या फिर आपके भावना पर भी हो सकता है। बेहतर होगा कि साँस को कुछ देर के लिए अंदर ही रखें। पकड कर रखिए। बाहर लाएं। बाहर पकडें रखें। बाद में उसे कुछ देर तक बाहर रखें। फिर से। आप देखेंगे कि कुछ देर के लिए आपने साँस लिया ही नहीं है। बहुत अच्छा। देखिए आप स्थिर हो गए है। लय आ जाती है आपके प्राण और मन के बीच में। दोनो शक्तियाँ एक हो जाती है।

अब अपने कुण्डलिनी को ऊपर में उठाइए और बाँध दीजिए। फिर से, कुण्डलिनी को ऊपर उठाईए और ऊपर बाँध दीजिए, सिर के ऊपर। फिर से कुण्डलिनी को उठाइए और ऊपर तीन बार बाँध दीजिए।.

अब सहस्रार पर आप को सहस्रार मन्त्र बोलना है तीन बार-

ॐ त्वमेव साक्षात्
श्री कल्की साक्षात्
श्री सहस्रार स्वामिनी
मोक्ष-प्रदायिनी माताजी
श्रीनिर्मलादेव्यै नमो नमः

अब आप देखे, सहस्रार खुल गया है। आप देखेंगे कि सहस्रार को फिर से इस तरह खोल सकते हैं और देखिए कि आप वहाँ स्थिर रहें। एक बार ऐसा हो जाये,-तब आप ध्यान में जा सकते हैं।

अपने श्वास को रोकिए, ये बेहतर होगा। आप अपने श्वास को घटाइये जैसे कि आप उसको रोकने का प्रयत्न कर रहे हो, पर कोई जोर न दें।

प.पू.श्री माताजी निर्मला देवी,
ब्रह्मा गार्डन्स, लंडन-१९८१

ध्यानधारणा एवं प्रार्थनाएं

कितने भयानक समय से हम गुजर रहे हैं। इससे मुकाबला करना आवश्यक है। अब तक लड़े गए युद्धों से यह कार्य कहीं कठिन है। मानव द्वारा किए गए सभी संघर्षों से यह कहीं कठिन है। एक भयानक विश्व की सृष्टि हो चुकी है और हमने इसे परिवर्तित करना है। यह अति कठिन कार्य है। इसके लिए आपको अत्यन्त सच्चाई से कार्य करना होगा। मुझे विश्वास है कि यह घटित होगा। इसे घटित होना होगा। एक मस्तिष्क तथा हृदय से, सामूहिक रूप में आपने यह प्राप्त करना है। मैं क्या बलिदान करूँ ? मुझे क्या करना चाहिए? किस प्रकार मुझे सहायता करनी चाहिए? मेरा क्या योगदान है? काश, मैं अपने जीवनकाल में वे दिन देख पाती। अतः आज हमें अन्तर्दर्शन करना है।

तो क्या हम ध्यान करें ? कृपया आप सब अपनी आँखे बंद कर लीजिए। जैसे हम जन कार्यक्रम में करते हैं वैसे ही ध्यान करेंगे। अपना बायाँ हाथ मेरी ओर करके शरीर के बायें भाग में आप सब कार्य करेंगे। सर्वप्रथम अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखना है। हृदय में शिव का निवास है, आत्मा का स्थान है। अतः आपने अपनी आत्मा का धन्यवाद करना है कि इसने आपके चित्त को प्रकाशमय किया है। क्योंकि आप संत है अतः जो प्रकाश आपके हृदय में हुआ है उससे आपने पूरे विश्व को ज्योतिर्मय करना है। अतः कृपया अपने हृदय में प्रार्थना कीजिए कि :

श्री माताजी, परमात्मा के प्रति मेरे प्रेम का यह प्रकाश पूरे विश्व में फैले।

अपने प्रति पूर्ण सच्चाई तथा समझदारी रखते हुए कि आप परमात्मा से जुड़े हुए हैं और पूर्ण आत्मविश्वास से आप जो इच्छा करेंगे वह पूरी होगी।

अपना दायाँ हाथ अपने पेट के उपरी हिस्से पर, बाईं ओर रखें। यह आपके धर्म का केन्द्र है। यहाँ आपको प्रार्थना करनी है कि : श्री माताजी , विश्व निर्मला धर्म पूरे विश्व में फैले।

हमारा धार्मिक जीवन तथा धर्मपरायणता लोगों को प्रकाश दिखाए।

अपनी धर्मपरायणता लोगों को देखने दें ताकि वे विश्व निर्मला धर्म स्वीकार करें जिसके द्वारा उन्हें ज्ञान, हितैषिता, उच्च जीवन तथा उत्थान की इच्छा प्राप्त होगी।

अब अपना दायाँ हाथ अपने पेट के निचले हिस्से पर, बाई ओर रखें। इसे थोड़ा सा दबायें। यह आपकी शुद्ध विद्या का केंद्र हैं। सहजयोगी होने के नाते यहाँ पर आप कहें कि :-

परमात्मा की कार्यप्रणाली का पूर्ण ज्ञान हमें हमारी श्री माताजी ने प्रदान किया है। हमारी सूझबूझ तथा सहनशक्ति के अनुसार श्री माताजी ने हमें सारे मंत्र तथा शुद्ध विद्या दी है। हम सब को इसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

मैंने देखा है कि, यदि पति अगुआ है तो पत्नी को सहजयोग का एक शब्द भी नहीं आता। यदि पत्नी को सहजयोग का ज्ञान है तो पति इसके बारे में कुछ नहीं जानता। प्रार्थना कीजिए कि --

श्री माताजी, मुझे इस ज्ञान में निपुण कीजिए ताकि मैं लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकूं, तथा उन्हें दैवी-कानून, कुण्डलिनी तथा चक्रों के विषय में समझा सकूं। श्री माताजी कृपा कीजिए कि मेरा चित्त सांसारिक वस्तुओं की अपेक्षा सहजयोग में अधिक हो।

अब दायाँ हाथ पेट के उपरी हिस्से में, बाईं ओर रखें। आँखे बंद रखें। पेट को हाथ से थोड़ा सा दबा कर रखें। यहाँ पर कहें कि श्री माताजी ने मुझे आत्मा प्रदान की है, जो कि मेरी गुरु हैं। पूर्ण हृदय से कहें :-

श्री माताजी, मैं स्वयं का गुरु हूँ। मुझमें असंयम न हो, मेरे चरित्र में गरिमा और आचरण में उदारता हो। अन्य सहजयोगियों के लिए मुझमें करुणा तथा प्रेम हो। श्री माताजी मुझ में बनावटीपन न हो। परमात्मा के प्रेम तथा उसके कार्यों का गहन ज्ञान मुझे हो ताकि जब लोग मेरे पास आयें तो मैं उन्हें प्रेम तथा नम्रतापूर्वक सहजयोग के विषय में बता सकूं और यह महान ज्ञान उन्हें दे सकूं।

अब अपना दायाँ हाथ अपने हृदय पर रखें। यहां पूर्ण हृदय से कहें :-

श्रीमाताजी, आनन्द तथा क्षमा के सागर का अनुभव आपने हमें प्रदान किया। अपनी ही तरह अत: क्षमाशीलता आप ने हमें दी। श्री माताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम। कृपा करके मेरे हृदय को इतना विशाल कीजिए कि पूरा ब्रह्माण्ड इसमें समा जाए। मेरा प्रेम आपके नाम का गुंजन करे। मेरा हर श्वास आपके प्रेम की सुन्दरता की अभिव्यक्ति करे।

अब आप अपना दायाँ हाथ बाईं विशुद्धि की ओर से ले जाकर गर्दन के मध्य में पीछे की ओर मध्य विशुद्धि चक्र पर रखें। पूर्ण विश्वास के साथ कहें:-

मैं कपट तथा दोष से लिप्त नहीं रहूँगा। अपने दोषों को मैं छिपाऊँगा नहीं, उनका सामना करके उनसे मुक्त हूँगा। मैं दूसरों के दोष नही ढूँढूंगा। अपने सहजयोग के ज्ञान द्वारा उन्हें दोषमुक्त करुँगा। (हमारे पास चुपके-चुपके दूसरों के दोष दूर करने के बहुत से तरीके है) श्री माताजी

मेरी सामूहिकता को इतना महान बनाइए कि पूर्ण सहजयोग जाति मेरा परिवार, मेरे बच्चे, मेरा घर तथा मेरा सर्वस्व बन जाएं क्योंकि हम सबकी एक ही माँ है। अत: मुझमें पूरी तरह तथा अन्तर्जात रूप से यह भाव जागृत हो जाए कि मैं पूर्ण का ही अंग प्रत्यंग हूँ, मुझे पूरे विश्व की समस्याओं को जानने की तथा अपनी शुद्ध इच्छा तथा शक्ति से उनका समाधान करने की चिंता हो। श्री माताजी कृपा करके हमें अपने हृदय में, अन्तर्जात रूप से पूरे विश्व की समस्याओं को जानने तथा उनके कारणों को जड़ से समाप्त करने की भावना मुझे प्रदान कीजिए। मुझे इन समस्याओं के मूल तक पहुँचाइये ताकि मैं अपनी सहजयोग तथा सन्त सुलभ शक्तियों द्वारा इन्हें दूर करने का प्रयास करूँ।

अब अपने दायें हाथ से आप अपने कपाल को पकड़िये। यहाँ आपको यह कहना होगा कि :

श्री माताजी, मैं उन सब लोगों को क्षमा करता हूँ, जो सहजयोग में नही आये हैं, जो अभी परिधि-रेखा पर हैं, जो आते है और जाते हैं, जो कभी सहजसागर के अन्दर कूदते हैं और कभी इससे बाहर।

परन्तु सर्वप्रथम मैं सारे सहजयोगियों को क्षमा करता हूँ क्योंकि वे सब मुझसे कहीं अच्छे हैं। मैं उनके दोष खोजने की चेष्टा करता हूँ पर वास्तव में मैं उन सबसे तुच्छ हूँ। मुझे सबको क्षमा करना हैं क्योंकि मुझे अभी बहुत दूर जाना हैं। मैं अभी बहुत तुच्छ हूँ। मुझे स्वयं को सुधारना हैं।

यह नम्रता हममें आनी चाहिए, अत: आपको यहाँ कहना होगा कि -

श्री माताजी, मेरे हृदय की सच्ची नम्रता मेरे अन्दर क्षमाभाव उत्पन्न करें

ताकि मैं वास्तविकता, परमात्मा तथा सहजयोग के प्रति नतमस्तक हो जाऊँ।

अब आप अपना दायाँ हाथ सिर के पीछे के भाग पर रखें। सिर को अपने हाथ पर पीछे की ओर झुका लें। यहाँ पर आप कहें कि :-

श्री माताजी, अभी तक आपके प्रति हमने जो भी अपराध किये हैं, हमारे मस्तिष्क में जो भी बुराई आती है, जो भी तुच्छता आपको दिखाई है, किसी भी प्रकार से आपको दु:ख पहुँचाया है या आपको चुनौती दी है, तो कृपा करकें हमें क्षमा कर दीजिए।

आपको क्षमा मांगनी पड़ेगी। अपने विवेक से आपको जानना चाहिए कि मैं क्या हूँ। मुझे बार-बार यह बताने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, सहस्रार पर नहीं।

अब सहस्रार पर आपको मेरा धन्यवाद करना होगा। अपना दायाँ हाथ सहस्रार पर रखकर सात बार घड़ीकी सुई की दिशा में इस प्रकार घुमाएं कि सिर की चमड़ी भी हल्की-हल्की घूमें। सात बार मेरा धन्यवाद करें। कहें कि :

श्री माताजी, आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने के लिए हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री माताजी, हमारी महानता हमें समझाने के लिए हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री माताजी, परमात्मा के सभी आशीर्वाद हम तक लाने के लिए हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री माताजी, हमें तुच्छता से उठा कर उच्च स्थिती पर लाने के लिए हम आपके आभारी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री माताजी, जो आश्रय आपने हमें प्रदान किया तथा आत्मोन्नति के लिए जो सहायता आपने कृपा करके हमें दी उसके लिए हम हृदय से आपके आभारी हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री माताजी, हम हृदय से आभारी हैं कि आप पृथ्वी पर अवतरित हुए मानव जन्म लिया और हम सब के उत्थान के लिए घोर परिश्रम कर रहे हैं। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

श्री माताजी, हमारा रोम रोम आपका ऋणी है। आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

जोर से दबायें और जोर से हिलायें। अब अपने हाथों को नीचे लीजिए। सब के सिर बहुत गरम हो गये हैंइसलिए हम अपने आपको एक अच्छासा बंधन देंगे। श्री माताजी के बंधन में हम अपने बाईं बाजू को दाँईं ओर ले जाएंगे। अच्छी तरह से। आप क्या है इसे समझने की कोशिश करें। आपका परिमल क्या है?अब फिर से दूसरी बार। अब तीसरी बार। अब चौथी बार। अब पाँचवी बार। अब छठी बार। और अब सातवाँ बार।

अब अपनी कुण्डलिनी को धीरे से उठायें, बहुत धीरे से। पहली बार उठायें, आपको बहुत धीरे से करना है। अब अपने सिर को पीछे की ओर हटाकर के गाँठ बाँधना है, एक गाँठ। दूसरी बार हमें इसे बहुत धीरे से करना है और जानते हुए कि आप कौन है, आप सन्त है। अच्छी तरह से करें, जल्दबाजी में न करें। अपने सिर को पीछे हटाकर के दो गाँठ बाँधने है, एक और दो।

चलिए तीसरी बार करें। फिर से, तीसरे वाले को आप को तीन गाँठ देने हैं। बहुत धीरे से करिए, बहुत धीरे से। अब ठीक से करिए। अपने सिर को पीछे हटाकर तीन गाँठ दीजिए। तीन बार।

अब अपने चैतन्य लहरियों को देखें। इस तरह से देखें। सभी बच्चे अपने चैतन्य लहरियों को इस तरह से हाथ रखकर देखें। बहुत ही सुन्दर। मुझे आप से चैतन्य की लहरियाँ महसूस हो रही है।

धन्यवाद! अनन्त आशीर्वाद!

प.पू.श्री माताजी निर्मला देवी,
शुडी कैम्प, यू.के., १८ जून १९८८

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

Nirmal Transformation Pvt. Ltd.